तम् । १

तो मनुजः ।

ः॥५४॥

सुभगो रोमयुतः स्याद्विद्वान्घनरोमसंयुतो मनुजः ।
उद्धृत्तरोमाभिः पुनरंगैश्च बहुभिश्च वित्तसंकलितः ॥ ५४ ॥

अन्वयार्थौ–(रोमयुतः मनुजः सुभगः स्यात्) रोमसंयुक्त पुरुष सुंदर होता है और (घनरोमसंयुतः मनुजः विद्वान् भवति) बहुत रोमसंयुक्त पुरुष पंडित होता है और (पुनः उद्धृत्तरोमभिः बहुभिः अंगैः मनुजः वित्तसंकलितः भवति) गुच्छेके गुच्छे बहुत अंग में ऐसे रोम होंय तो वह पुरुष धनवान् होता है ॥ ५४ ॥

रोमैकैकं नृपतेर्द्वंद्वं श्रोत्रियधनाढ्यबुद्धिमताम् ।
आदीन्येतानि पुनर्निःस्वानां मूर्धजेष्वेवम् ॥ ५५ ॥

अन्वयार्थौ–(नृपतेः रोमैकैकं भवति) राजाके एकही रोम होता है और (श्रोत्रियधनाढ्यबुद्धिमतां द्वंद्वं भवति) वेदपाठी और धनवानके और विद्वानोंके रोम दोदोतक होते हैं फिर (पुनः एवं आदीनि एतानि निःस्वानां मूर्द्धजेषु एवं ज्ञेयम्) इनको आदिलेकर दरिद्रियोंके रोमोंमें अधिकता ऐसेही जाननी चाहिये ॥ ५५ ॥

रोमरहितः परिव्राट् स्यादधमः स्थूलरूक्षखररोमा ।
पापः पिङ्गलरोमा निःस्वः स्फुटिताग्ररोमापि ॥ ५६ ॥

अन्वयार्थौ–(रोमरहितः परिव्राट् स्यात्) रोमरहित पुरुष संन्यासी वैरागी होय और (स्थूलरूक्षखररोमा अधमः स्यात्) मोटे रूखे खुरदरे रोमवाला नीच होता है और (पिङ्गलरोमा पापः स्यात्) भूरे रोमवाला पापी होता है और (स्फुटिताग्ररोमा अपि निःस्वः स्यात्) फूटा फटा है अग्र जिसका ऐसे रोमवाला दरिद्री होता है ५६

कुञ्जरजानुर्मनुजो भोगयुतः पीनजानुरवनीशः ।
संश्लिष्टसंधिजानुर्वर्षशतायुर्भवेत्प्रायः ॥ ५७ ॥

अन्वयार्थौ–(कुंजरजानुः मनुजः भोगयुतो भवति) हाथी जानु जिसकी ऐसा पुरुष भोग करनेवाला होय और (पीनजानुः अवनीशोभवति) मोटीजानुवाला राजा होय और (संश्लिष्टसंधिजानुः प्रायः वर्षशतायुर्भवति) छिपी और मिली है संध जिसकी ऐसी जानुवाला बहुधा सौवर्षकी आयुवाला होय ॥ ५७ ॥

निम्नैः स्त्रीपरवशगः शशिवृत्तैर्गूढमांसलै राज्यम् ।
दीर्घैर्महद्भिरायुः सुभगत्वं जानुभिः स्वल्पैः ॥ ५८ ॥

अन्वयार्थौ–(निम्नैः स्त्रीपरवशगो भवति) गहरी है जानु जिसकी ऐसा पुरुष स्त्रीके वशमें होय और (शशिवृत्तैः गूढमांसलै राज्यं भवति) चंद्रमाके तुल्य गोल और बहुत मोटे जानुवाला राज्यका कर्ता होय और (दीर्घैः महद्भिः जानुभिः आयुर्भवति) लंबी जानुवाला बडी आयुवाला होता है और (स्वल्पैः जानुभिःसुभगत्वं भवति) छोटी जानुवाला सुंदर स्वरूपवान् होता है ॥ ५८ ॥

दिशति विदेशे मरणं मनुजानां जानु मांसपरिहीनम् ।
कुम्भनिभं दुर्गततां तालफलाभं तु बहुदुःखम् ॥५९॥

अन्वयार्थौ–(मांसपरिहीनं जानु मनुजानांविदेशे मरणं दिशति) मांसरहित जानु अर्थात् सूखी पतली मनुष्योंको परदेशमें मृत्यु देती है और (कुंभनिभं जानु दुर्गततां दिशति) घडके तुल्य जानु दरिद्रताको देती है और (तालफलाभं जानु बहुदुःखं दिशति) तालफलके तुल्य जानु बहुत दुःख देनेवाली होती है ॥ ५९ ॥

जानुद्वितयं हीनं यस्य सदा सेवते स वधबंधौ ।
इदमेव यस्य विषमं स पुनः प्राप्नोति दारिद्र्यम् ६०॥

अन्वयार्थौ–(यस्य जानुद्वितयं हीनं भवति–स वधबंधौ सदा सेवते) जिसकी दोनों जानु बलहीन होंय सो पुरुष वध और बंधनको सदा सेवन करै और (यस्य इदं एव जानु विषमं भवति स पुनःदारिद्र्यं

प्राप्नोति) जिसकी यही जानु ऊंची नीची होय सो फिर दरिद्रताको प्राप्त होय ॥ ६० ॥

ऊरू यस्य समांसे रंभास्तंभभ्रमं वितन्वाते ।
कोमलतनुरोमचिते स जायते भूपतिः प्रायः ॥ ६१ ॥

अन्वयः-(यस्य ऊरू समांसे रंभास्तंभभ्रमं वितन्वाते कोमलतनुरोमचिते एतादृशे ऊरू भवतः सप्रायः भूपतिः जायते) अस्यार्थः-जिसकी जांघ बहुत मांससे भरी केलेके थंभके भ्रमको करती होय और नरम और छोटे रोमों करिके युक्त होय तौ ऐसी जांघवाला पुरुष बहुधा राजा होता है ॥ ६१ ॥

स्निग्धा ऊरू मृदुलौ क्रमेण पीनौ प्रयच्छतो लक्ष्मीम् ।
विकटौ स्त्रीवल्लभतां गुणवतां संहतौ कृतौ भवतः ॥ ६२ ।

अन्वयार्थौ-(यस्य ऊरू स्निग्धौ मृदुलौ क्रमेण पीनौ भवतः तौ लक्ष्मीं प्रयच्छतः) जिसकी दोनों जांघे सचिक्कण और नरम क्रमसे मोटी होंय तौ लक्ष्मीके देनेवाले होते हैं और (यस्य ऊरू विकटौ भवतः स्त्रीवल्लभतां दिशतः) जिसकी वेही जांघ चौडी होंय तौ वह स्त्रीका प्यारा होय और (गुणवतां संहतौ कृतौ भवतः) गुणवान् पुरुषोंकी जांघ मिली हुई रानोंसे होती हैं ॥ ६२ ॥

स्थूलाग्रे मध्यनते स्यातां मार्गानुसंधिनी पुंसाम् ।
कठिने चिपिटे विपुले निर्मांसे दुर्भगत्वाय ॥ ६३ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य ऊरू स्थूलाग्रे मध्यनते पुंसां मार्गानुसंधिनी स्यातां) जिसकी जांघे आगसे मोटा और बीचमें झुकी हुई होंय तौ उस पुरुषको मार्ग चलानेवाली होती हैं और(यस्य ऊरू कठिने चिपिटे विपुले निर्मांसे दुर्भगत्वाय भवतः) जिसकी जांघे कडी और चिपटी चौडी मांसरहित होंय तौ वह पुरुष कुरूप अर्थात बुरी सूरतका होता है ॥ ६३ ॥

यस्य कटिः स्याद्दीर्घा पीना पृथुला भवेत्स वित्ताढ्यः ।
सिंहकटिर्मनुजेन्द्रः शार्दूलकटिश्च भूनाथः ॥ ६४ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य पुरुषस्य कटिःदीर्घा पीना पृथुला स्यात् स वित्ताढ्यो भवति) जिस पुरुषकी कमर लंबी मोटी चौड़ी होय वह धनवान् होताहै और (यः सिंहकटिः स मनुजेंद्रो भवति) जिसकी सिंहके समान कमर होय वह पुरुष राजा होताहै (च पुनः यः शार्दूलकटिः स भूनाथो भवति) और जिसकी बघेरेकी तुलयकमर होय वह पृथ्वीका स्वामी होता है ॥ ६४ ॥

रोमशकटिर्दरिद्रो ह्रस्वकटिर्दुर्भगो भवति मनुजः ।
शुनमर्कटकरभकटिर्दुःखीसंकटकटिः पापः ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य कटिः रोमशा स दरिद्रो भवति)जिसकी कमर रोमसहित होय वह पुरुष दरिद्री होय और (यस्य कटिः ह्रस्वा स मनुजः दुर्भगो भवति)जिसकी कमर छोटी होय सो पुरुष कुरूप अर्थात् बुरी सूरतका होय और (यः शुनमर्कटकरभकटिः स दुःखी स्यात्) जिसकी कमर कुत्ता–वानर–ऊंटकी तुलय होय तौ दुःखी रहै और (संकटकटिः पुरुषः पापः स्यात्) सुकडीकमरवाला पुरुष पापी होताहै ॥ ६५ ॥

मंडूकस्फिङ्नृपतिः सिंहस्फिङ्मंडलद्वयाधिपतिः ।
घनमांसस्फिग्धनवान्व्याघ्रस्फिङ्मंडलाधिपतिः ६६

अन्वयार्थौ–(मंडूकस्फिक् मनुजः नृपतिर्भवेत्) जिसकी मेंडककीसी कमर का पिंड होय वह पुरुष राजा होताहै और (यदि सिंहस्फिक् पुरुषः मंडलद्वयाधिपतिर्भवेत्) जो सिंहकीसी कमरका पिंड होयतो दोछोटे देशका राजा होय और (घनमांसस्फिक् पुरुषः धनवान् भवति) बहुतमांसका भराहुवा कमरका पिंड होय वह

पुरुष धनवान् होय और (व्याघ्रस्फिक् पुरुषःमंडलाधिपतिर्भवति) जो बघेरेकीसी कमरका पिंड होय तौ देशका राजा होताहै ॥६६॥

उष्ट्रप्लवंगमस्फिग्धनधान्यविवर्जितः पुमान्नियतम् ।
पीनस्फिङ्निःस्वो ह्यूर्ध्वस्फिग्व्याघ्रमृत्युःस्यात् ॥६७॥

अन्वयार्थौ-(यदि उष्ट्रप्लवंगमास्फिक् पुरुषः नियतं धनधान्य विवर्जितो भवति) जो ऊंट बंदरकी तुल्य स्फिच् होय तौ वह पुरुष निश्चय धन धान्य से हीन रहै और (पीनस्फिक् पुरुषः निःस्वो भवति) जो मांसकी भरी स्फिक् होय तौ वह पुरुष दरिद्री होय और (ऊर्ध्वस्फिक् पुरुषः व्याघ्रमृत्युः स्यात्) जिसका ऊंचा कमरका पिंड होय उस पुरुष की बघेरेसे मृत्यु जानना चाहिये ॥ ६७ ॥

यतमांसो गम्भीरः सुकुमारः संवृतः शोणः ।
पायुः शुभो नराणां पुनरशुभो भवति विपरीतः ॥६८॥

अन्वयार्थौ-(नराणां यः पायुः मांसैः गंभीरः सुकुमारः संवृतः शोणः शुभो भवति) मनुष्यों की जो गुदा मांससे भरी और नरम मिली हुई लाल होय तौ शुभ हैऔर (पुनः विपरीतःअशुभो भवति) जो वेही लक्षण गड़बड़ और प्रकारसे होंय तौ अशुभ होतेहैं॥६८॥

मुष्काः स्वयं प्रलम्बा जायन्ते सुपरिष्ठिता यस्य ।
स भवति भर्ता नियतं भूमेः सप्ताब्धिवलयायाः॥६९॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पुरुषस्य मुष्काः स्वयं प्रलम्बाः सुपरिष्ठिता जायन्ते) जिस पुरुषके अंडकोश आपसेही लंबे और अच्छी बनावटके होंय तौ (स सप्ताब्धिवलयायाः भूमेःनियतंभर्ता भवेत्) सो सात समुद्रकी भूमिका निश्चय पालनकरनेवाला अर्थात् मालिक होय ॥ ६९ ॥

श्लक्ष्णैः समैर्नृपत्वं चिरमायुर्भवति लम्बितैर्वृषणैः।
जलमरणमद्वितीयैर्मनुजानां कुलविनाशोपि ॥ ७० ॥

अन्वयार्थौ–(समैः श्लक्ष्णैः वृषणैः पुरुषः नृपत्वं आप्नोति) जिसके अंडकोश बराबर सुंदर होंय वह पुरुष राजा होय और (लंबितैः वृषणैः चिरमायुर्भवति) जो लम्बे वृषण होंय तौ बड़ी आयुवाला होय और (अद्वितीयैः वृषणैः मनुजानां जलमरणं कुलविनाशोपि स्यात्) जो एकही वृषण होय उस मनुष्यका जलसे मरण और कुलका नाश करनेवाला होय ॥ ७० ॥

स्त्रीलोलत्वं विषमैः प्राक्पुत्रोदक्षिणोन्नतैर्वृषणैः।
वामोन्नतैश्च तैरपि दुःखेन समं भवति दुहिता ॥ ७१ ॥

अन्वयार्थौ–(विषमैः वृषणैः स्त्रीलोलत्वं भवति) जो ऊंचे नीचे वृषण होंय तौ स्त्रीमें चंचलता रहै और (दक्षिणोन्नतैर्वृषणैः प्राक् पुत्रो भवति) जो दाहिना वृषण ऊंचा होय तौ पहिलेही पुत्र होय और (तैः अपि वामोन्नतैर्वृषणैः दुःखेन समं दुहिता भवति) जो बाईं ओरका वृषण ऊंचा होय तौ दुःखके साथ अर्थात् कठिनतासे पुत्री होय ॥ ७१ ॥

निः स्वः शुष्कस्थूलै रम्यरमणीरतास्तुरंगसमैः।
पुनरर्द्धार्द्धैर्वृषणैर्भवंति नचिरायुषः पुरुषाः ॥ ७२ ॥

अन्वयार्थौ–(शुष्कस्थूलैर्वृषणैः निःस्वो भवति) जो सूखे और मोटे वृषण होंय तौ दरिद्री होय और (तुरंगसमैः वृषणैः नराः रम्यरमणीरता भवन्ति) जो घोड़ेकेसे वृषण होंय तौ मनुष्य सुंदर स्त्रीके भोगनेवाले होते हैं और (पुनः अर्द्धार्द्धैर्वृषणैः पुरुषाः चिरायुषः न भवंति) जो प्रमाणसे आधेवृषण होंय तौ वे पुरुष बडी आयुवाले नहीं होते हैं ॥ ७२ ॥

शिश्नमनिम्नसमुन्नतमदीर्घलघुसुसंयुतं मृदुलम् ।
उष्णं धनधान्यवतामश्लथमृदुवर्तुलं विशिरम् ॥ ७३ ॥

अन्वयः-(यस्य शिश्नं अनिम्नसमुन्नतं अदीर्घलघुसुसंयुतं मृदुलं उष्णं अश्लथं ऋजु वर्तुलं विशिरं धन्यधान्यवतां एतादृशं भवति) अस्यार्थः-जिसकी इंद्री गहरी ऊंची बड़ी न छोटी कोमल और अच्छी गरम शीथिल नहीं सूधी और गोल जिसमें नसें नहीं दीखती होंय तो धनधान्यवाले पुरुषोंकी इंद्री ऐसी होती हैं ॥७३॥

स्थूलग्रन्थिरतिसुखी केशनिगूढो महीपतिः शिश्नं ।
व्याघ्रहयसिंहतुल्यो भोगी स्यादीश्वरः प्रायः ॥७२॥

अन्वयार्थौ-(यस्य शिश्नःस्थूलग्रंथिः स अतिसुखी भवेत्) जिसकी इंद्रीको मोटी गांठि अर्थात् बड़ी सुपारी होय सो अति सुखी होय और (यस्य शिश्नः केशनिगूढः स महीपतिर्भवति) जिसकी इंद्री ऐसी छोटी बादामीसी होय जो बालोंमें छिपजाय सो राजाहोता है और (यस्य शिश्नः व्याघ्रहयसिंहतुल्यो भवति सप्रायः भोगीच पुनः ईश्वरः स्यात्) जिसकी इंद्री बघेरा घोड़ा सिंह इनकीसीइंद्रीके तुल्य बड़ी होय सो निश्चय भोगी और समर्थ होय ॥७४ ॥

स्पष्टशिरानिचितत्वग्घीनं मेहनं कृशं विमलम् ।
लघुमृदुसुरभिपरिमलं पुंसां सौभाग्यवित्तकरम् ७५॥

अन्वयः-(यस्य पुरुषस्य एतादृशं मेहनं भवति--स्पष्टशिरं निचितत्वक्हीनं कृशं विमलं लघुमृदु सुरभिपरिमलं सौभाग्यवित्तकरं भवति) अस्यार्थः--जिन पुरुषोंकी इन्द्री ऐसी होय कि नसें दीखती होंय दृढचर्महोय-निर्मल लटो दुबली-स्वच्छ--छोटी-नरम-अच्छी गंधवाली जो होय तो अच्छा भाग्य और धनके करनेवाली होती हैं ॥ ७५ ॥

लिङ्गे लघुनि धनाढ्यो निरपत्यो वाशिरायुतेल्पसुतः।
दक्षिणविनते पुत्री वामनते कन्यकाजनकः ॥ ७६ ॥

अन्वयार्थौ-(लिङ्गे लघुनि सति धनाढ्यो भवति) जो इंद्री छोटी होय तौ धनवान् होय और (यस्य लिङ्गे शिरायुते सति निरपत्यःवा अल्पसुतः भवति) जिसकी इंद्रीमें नसें निकली होंय तौ संतान रहित वा थोडे पुत्रवाला होय और (लिङ्गे दक्षिणविनते साति सपुत्रो भवति)जिसकी इंद्री दाहिनी ओर झुकी होय वह पुत्रवाला होय और (लिंगे वामनते सति कन्यकाजनको भवति) जो इंद्री बाई ओरको झुकी होय तौ पुत्रीका पिता होय अर्थात् कन्याकी संतानवाला होय ॥ ७६ ॥

यः समचरणनिषण्णो गुल्फौ नतुशेफसा परिस्पृशति ।
स सुखी ज्ञेयो यदि पुनरवनितलं प्रायशो दुःखी॥७७॥

अन्वयार्थौ-(यःपुरुषः समचरणनिषण्णः सन् शेफसा गुल्फौ नतु परिस्पृशति स सुखी ज्ञेयः) जो पुरुष बराबर पैरोंके बैठने से इंद्री करिके टकनोंको न छुए वह सुखी होय और (यदि पुनः अवनितलं परिस्पृशति स प्रायशः दुःखी भवति) जो इंद्रीकरिके धरतीको स्पर्श करे सो निश्चय दुःखी होता है ॥ ७७ ॥

स्थूलोऽधो विनतः स्यात्तीक्ष्णाग्रो दीर्घोन्नतः शिथिलः।
समलो धनहीनानां शिश्नो भुग्नः सदोन्मिषितः ॥७८॥

अन्वयः-(धनहीनानां पुरुषाणां शिश्नः स्थूलः अधोविनतः तीक्ष्णाग्रः दीर्घः उन्नतः शिथिलः समलः भुग्नः सदा उन्मिषितः स्यात्) अस्यार्थः-- धनहीन पुरुषोंकी इंद्री- मोटी- नीचेको झुकीहुई- सीधा है अग्रभाग जिसका- लंबी ऊंची-

ढीली मैलसहित-टेढी-सदासुकड़ीसी रहै सो निर्धन पुरुषोंकी इंद्री ऐसी होती है ॥ ७८ ॥

स्थूलशिरेण विशालच्छिद्रवता प्रजनेन दरिद्रयम् ।
अतिकोमलेन लभते नरः प्रमेहादिना मरणम् ॥ ७९ ॥

अन्वयार्थौ-(स्थूलशिरेण विशालप्रजनेन तथा छिद्रवता दारिद्रयं भवति) मोटी हैं नसें जिसमें-बड़ी इंद्री करिके और जिसकी इंद्रीका बड़ा मुख होय-ऐसी इंद्रीवाला दरिद्री होय और (अति कोमलेन प्रजनेन प्रमेहादिना नरः मरणं लभते) बहुतही नरम जिसकी इंद्री होय तौ प्रमेहादि रोगसे उस पुरुषका मरण होय ॥ ७९ ॥

हरितांजनाभरेखो महामणिर्जायते समोत्तानः ।
मन्थानकपुष्पनिभो यस्य स भर्ता भुवो भवति ॥८०॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पुरुषस्य शिश्नस्य महामणिः हरितांजनाभ रेखः समोत्तानः मन्थानकपुष्पनिभः जायते स भुवोभर्ता भवति) अस्यार्थः--जिस पुरुषकी इंद्रीकी सुपारीमें नीले थोथेके रंग कीसी रेखाहो और बराबर ऊंची रुईके फूलके समान होय--सो पुरुष पृथ्वीका स्वामी अर्थात् राजा होय ॥ ८० ॥

मणिभिर्धनिनो रक्तैः स्मेरजपापुष्पसन्निभैर्भूपाः ।
श्लक्ष्णैः स्निग्धैः सुखिनो मध्योत्तानैश्च पशुमन्तः॥८१॥

अन्वयार्थौ--(नराः शिश्नस्य रक्तैर्मणिभिः धनिनो भवन्ति) जिस पुरुषकी इंद्रीकी सुपारी लाल होय सो धनवाला होय और (स्मेरजपापुष्पसन्निभैः भूपा भवन्ति) खिले हुए गुडहरके फूलके समान रंग जिस इंद्रीकी सुपारी का होय सो राजा होय और (नराः

श्लक्ष्णैः स्निग्धैः मणिभिः सुखिनो भवन्ति) जिस पुरुषकी चिकनी और अच्छी सुपारी होय तौ सुखी होय और (मध्योत्तानैः पशुमन्तो भवन्ति) जिसकी बीचमें सुपारी ऊंची होय तौ पशुवाहनादिवाला होय ॥ ८१ ॥

कलधौतरजतमुक्ताफलप्रवालोपमा महामणयः ।
येषां भवन्ति दीप्तास्ते सजलधिभूमिभर्तारः ॥ ८२ ॥

अन्वयार्थौ-(येषां महामणयः कलधौतरजतमुक्ताफलप्रवालोपमा दीप्ताः भवंति) जिनकी इंद्रीकी सुपारी सोने चांदी मोती मूँगके रंग केसमान चमकदार होंय(ते सजलधिभूमिभर्त्तारोभवंति)वे पुरुष समुद्र सहितभूमिके स्वामी अर्थात् पालनकरनेवाले राजा होंय ॥ ८२ ॥

दारिद्र्यजुषः परुषैः परुषाभैर्विपाण्डुरैर्मणिभिः ।
मध्योन्नतैर्बहुकन्या जायन्ते दुःखिनः स्फुटितैः ॥८३॥

अन्वयार्थौ- (नराणां परुषैःमणिभिः दारिद्र्यं भवति तथा जुषो भवन्ति) जिन पुरुषोंकी इंद्रीकी सुपारी खरदरी कडी होय तौ दरिद्री होंय और (पुरुषाभैः विपांडुरैर्मणिभिः मध्योन्नतैर्बहुकन्याः भवन्ति) खरदरी जो चीजें हैं वैसी आभा चमक पोता माटीकीसी रंगके समान सुपारी बीचमें ऊंची होय तौ बहुतसी पुत्री होय और (स्फुटितैर्दुःखिनः जायन्ते) फूटी फटीसी दरार होंय तौ दुःखी रहै ॥ ८३ ॥

विद्रुमहेमोपमया महामणौ रेखया नरो धनवान् ।
दौर्भाग्यवान् शबलया धूसरया जायते निःस्वः॥८४॥

अन्वयार्थौ-(नराः महामणौ विद्रुमहेमोपमया रेखया धनिनो भवन्ति) जिस पुरुषकी इंद्रीकी सुपारीमें मूंगे और सुवर्णकीसी चमकदार रेखा होंय तौ धनवान् होंय और (शबलया धूसरया

दौर्भाग्यवान् निःस्वो जायते) अनेक रंग और धूलके रंगकीसी रेखा होंय तौ अभागी और दरिद्री होय ॥ ८४ ॥

रेतसि पुष्पसुगन्धिनि राजा यज्वा नरः सुरागन्धे ।
मधुगन्धे बहुवित्तः सुखधनवान् मीनगन्धे स्यात् ८५॥

अन्वयार्थौ--(यस्य पुरुषस्य रेतसि पुष्पसुगन्धिनि सति राजा स्यात्) जिस पुरुष के वीर्यमें फूलकीसी सुगंध होय तौ राजा होय और (रेतसि सुरागंधे सति यज्वा भवेत्) जिसके वीर्यमें मदिराकीसी गंध होय तौ यज्ञ करानेवाला होय और (रेतसि मधुगंधे सति नरः बहुवित्तः स्यात्) जिसके वीर्यमें शहतकीसी गंध होय तौ वह पुरुष बहुत धनवाला होय और (रेतसि मीनगन्धे सति सुखधनवान् भवेत्) जिस के वीर्यमें मछली कीसी गंध होय तो सुखी और धनवान् होय ॥ ८५ ॥

सुरभिद्रव्यसुगन्धे श्रियोन्यगन्धे तु दारिद्र्यम् ।
लाक्षागन्धे पुत्र्यो नैःस्वे भोगाः पुनः पिशितगंधे ८६ ॥

अन्वयार्थौ-(सुरभिद्रव्यसुगंधे सति श्रियो भवंति) जिसके वीर्यमें सुगंधोंकीसी वस्तु ऐसी जो गंध होय तौ लक्ष्मी और शोभा होय और (अन्यगन्धे सति दारिद्र्यं भवति) जो और किसी-प्रकार की गंध होय तौ दरिद्री होय और (लाक्षागंधे सति पुत्र्यो भवन्ति) जो लाखकीसी गंध होय तौ पुत्री होय और (पुनः पिशितगंधे सति नैःस्वे भोगी स्यात्) जो मांसकीसी गंध होय तौ दरिद्र भोगनेवाला होय ॥ ८६ ॥

जम्बूवर्णेन सुखी दुग्धसवर्णेन रेतसा नृपतिः ।
धूम्रेण दुःखसहितः स्याद्दुःस्थः श्यामवर्णेन ॥ ८७ ॥

अन्वयार्थौ--(जम्बूवर्णेन रेतसा नरः सुखी भवति) जामुनकासा

ऊदा रंग जो वीर्य का होय तौ वह पुरुष सुखी होय और (दुग्ध सवर्णेन रेतसा नरः नृपतिर्भवति) जो दूधके रंगकासा वीर्य होय तौ वह पुरुष राजा होय और (धूम्रवर्णेन रेतसा नरः दुःखसहितो भवति) जो धूयेंकासा रंग वीर्य का होय तौ वह पुरुष दुःख सहनेवाला होय और (श्यामवर्णेन रेतसा नरः दुःस्थः स्यात्) जो काला रंग वीर्यका होय तौ वह पुरुष दुःखसे डोलनेवाला होय ॥ ८७ ॥

यस्य च्यवते रेतो लघुमैथुनगामिनो बहुस्निग्धम् ।
दीर्घायुः संपत्तिं पुत्रानपि विन्दते स पुमान् ॥ ८८ ॥

अन्वयार्थौ-(लघुमैथुनगामिनः यस्य बहु स्निग्धं रेतः च्यवते) थोडी देर मैथुन करनेवाले पुरुषका जो बहुत चिकना वीर्य गिरै तौ (स पुमान् दीर्घायुः संपत्तिं पुत्रान् अपि विन्दते) सो पुरुष बड़ी आयु और संपत्ति और पुत्रोंको पावै ॥ ८८ ॥

न पतति शुक्रं स्तोकं चिरमैथुनसंगतस्यापि ।
दारिद्र्यं सोल्पायुर्बहुकन्याजनकतां भजते ॥ ८९ ॥

अन्वयार्थौ-(चिरमैथुनसंगतस्यापि यस्य स्तोकं शुक्रं न पतति) बहुत देर मैथुन करनेवाले पुरुषका जो थोड़ाभी वीर्य नहीं गिरै तौ (स दारिद्र्यं अल्पायुः बहुकन्याजनकतां भजते) सो पुरुष दारिद्र- थोड़ी आयु-और बहुत कन्याओंकी उत्पन्नताको प्राप्त होय ॥ ८९ ॥

द्वित्रिचतुर्धाराभिः प्रदक्षिणावर्तजातिमूत्रं स्यात् ।
पिञ्जरवर्णं नृपतिः सुखिनो वलितैकधाराद्यम् ॥ ९० ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य प्रदक्षिणावर्तजातिमूत्रं पिंजरवर्णं द्वित्रिचतुर्धाराभिः स्यात्)जिस पुरुषके मूत्रकी धार दहिनी ओरको झुकी

हुई पीले रंग करिके दो तीन चार धारसे होय तौ (स नृपतिः भवति । तथा वलितैकधाराद्यं सुखिनो भवन्ति) सो राजा होय और जो मिलीहुई धाराओंसे होय तौ सुखी होय ॥ ९० ॥

कृतशब्दमेकधारं नृपस्य मूत्रं द्विधारमाद्येच ।
निःशब्दं बहुधारं तदपि दरिद्रस्य विज्ञेयम् ॥९१॥

अन्वयार्थौ–(नृपस्य मूत्रं एकधारं कृतशब्दं भवति) राजाका मूत्र एक धारसे शब्दसहित होता है और (दरिद्रस्य तत् अपि मूत्रम् आद्ये द्विधारं तथा निःशब्दं बहुधारं विज्ञेयं) दरिद्रीका मूत्र आदिमें दो धार शब्दरहित पीछे बहुत धारवाला जानिये ॥ ९१ ॥

स्निग्धं प्रवालतुल्यं यस्याङ्गे भवति शोणितं नचिरम् ।
स वहति स्वकीयभुजया मनुजो निखिलाम्बुधिमेखलां वसुधाम् ॥ ९२ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य पुरुषस्याङ्गे शोणितं प्रवालतुल्यं न चिरं स्निग्धं भवति) जिस पुरुषके अंगमें रुधिर और मूँगेके रंगके समान बहुत चिकना नहीं होय तो (स मनुजः स्वकीयभुजया निखिलाम्बुधिमेखलां वसुधां वहति) सो पुरुष अपनी भुजाओं करिके समुद्र सहित संपूर्ण पृथ्वीको भोगै ॥ ९२ ॥

रुधिरं यस्य शरीरे रक्ताम्बुजवर्णसंमितं भवति ।
भुजवल्लिकङ्कणरणत्कारा तमनुसरति राज्यश्रीः ९३

अन्वयार्थौ–(यस्य शरीरे रुधिरं रक्ताम्बुजवर्णसंमितं भवति) जिसके शरीरमें रुधिर लाल कमलके रंगके तुल्य होय तौ (भुजवल्लिकंकणरणत्कारा राज्यश्रीः तमनुसरति) भुजारूपी बेलिमें जो कंगन तिसका जो रणत्कार शब्द जिसके ऐसी जो राज्यलक्ष्मी स्त्री सो मिलती हैं ॥ ९३ ॥

किंचित् पीतं शोणं शोणितमिह भवति मध्यमे पुंसि।
ईषत्कृष्णं रक्तं तत्तु जघन्ये परिज्ञेयम् ॥ ९४ ॥

अन्वयार्थौ-(इह मध्यमे पुंसि शोणितं किंचित् पीतं शोणं भवति) इस लोकमें मध्यमें पुरुषके शरीरमें रुधिर कुछ पीला कुछ लाल होता है और (जघन्ये पुंसि तत् रक्तं ईषत् कृष्णं परिज्ञेयं) अधम पुरुषका लाल और कुछ काला होता है ॥ ९४ ॥

शक्ता बस्तिः पुंसां विस्तीर्णा मांसलोन्नता स्निग्धा ।
शुक्ताविकटा कठिना दारिद्र्यंदिशति वा बहुदुःखम् ९५

अन्वयः-(पुंसां बस्तिः शक्ता विस्तीर्णा मांसलोन्नता स्निग्धा शुक्ता विकटा कठिना,बहुदुःखं वा दारिद्र्यं दिशति)अस्यार्थः-जिन पुरुषोंका पेडू ठीक ठीक, चौडा, मांसका भरा, ऊंचा, चिकना, लम्बा, चौड़ा, कड़ा जो होय तौ बहुत दुःख वा दरिद्रके देनेवाला होताहै ॥ ९५ ॥

श्वशृगालकरभसैरिभतुल्या बस्तिर्नता भवतियेषाम्
संकीर्णक्लिन्ना ते धनहीनाः स्युर्नराः प्रायः ॥ ९६ ॥

अन्वयः-(येषां नराणां बस्तिः) श्वशृगालकरभसैरिभतुल्यानता संकीर्ण क्लिन्ना भवति ते नराः प्रायः धनहीनाः स्युः) अस्यार्थः-जिन पुरुषोंका पेडू कुत्ता-गीदड़-ऊंट-भैंसा इनके तुल्य झुका हुवा-सकडा-लिबलिबा होय तौ वे पुरुष बहुधा धनहीन होते हैं अर्थात् धन न होय ॥ ९६ ॥

पृथुरुच्चस्थानाभिर्गंभीरा चाण्डाकृतिः सौख्यम् ।
विदधाति धनं मेधां मनुजानां दक्षिणावर्त्ता ॥ ९७ ॥

अन्वयः-(येषां मनुजानां नाभिः पृथुः उच्चस्था अतिगम्भीरा

अण्डाकृतिः दक्षिणावर्ता सौख्यं मेधां धनं विदधाति) अस्यार्थः- जिन पुरुषोंकी टूंडी चौड़ी ऊंची बहुत गहरी अंडेकी सूरत और दाहिनी ओर झुकी हुई जो होय तौ सुख-बुद्धि-धनको देनेवाली होती है ॥ ९७ ॥

शतपत्रकर्णिकाभा नाभिःस्याद्यस्य मनुजमात्रस्य ।
प्राप्नोति सपदि स पुमान् ससुवर्णां सार्णवामवनिम् ९८

अन्वयार्थौ-(यस्य मनुजमात्रस्य नाभिः शतपत्रकर्णिकाभा-स्यात्) जिस पुरुषमात्रकी टूंडी कमलके फूलकीसी आभा चक्राकारवाली होय तौ (स पुमान् सपदि ससुवर्णां सार्णवां अवनिं प्राप्नोति) सो पुरुष शीघ्रही सोनेसहित समुद्रसहित पृथ्वीको प्राप्त होय ॥ ९८ ॥

पुंसां नाभिर्दीर्घा यथाक्रमं पार्श्वयोस्तदूर्द्ध्वमधः ।
दीर्घा पुरीश्वरत्वं गोस्वामित्वं सदा तनुते ॥ ९९ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पुंसः नाभिः दीर्घा यथाक्रमं पार्श्वयोः ऊर्द्ध्वं अधः भवति) जिस पुरुषकी टूंडी बड़ी जैसे क्रमसे पसलियोंके बीचमें ऊंची नीची होय (सः नाभिः पुरीश्वरत्वं च पुनः गोस्वामित्वं सदा तनुते) सो पुरुष नगरीका स्वामी और गऊओंका अधिकारी सदा करै है ॥ ९९ ॥

विषमावलिर्मध्यस्था नैःस्वं शूलं करोति नीचस्था ।
तुङ्गा स्वल्पा क्लेशं वामावर्ता नृणां शाठ्यम् ॥ १०० ॥

अन्वयार्थौ-(येषां पुंसां मध्यस्था विषमावलिः नृणां नैःस्वं शूलं करोति) जिन पुरुषोंके बीचमें स्थित विषम सलवट १-३-५ आदि होय तो मनुष्योंको दरिद्र और शूलको करै और (नीचस्थावलिः तुङ्गा स्वल्पा क्लेशं करोति) जो सलवट कुछ बीचसे नीची

ऊंची छोटी वा खंडित होय तौ दुःखको करै और (वामावर्तावलिः नृणां शाठ्यं करोति) जो बाईं ओरको झुकी हुई सलवट होय तौ मनुष्योंको मूर्खता करै ॥ १०० ॥

क्षोणिपतिस्तनुकुक्षिः शूरो भोगान्वितश्च समकुक्षिः ।
धनहीन उच्चकुक्षिर्मायावी स्याद्विषमकुक्षिः ॥ १०१ ॥

अन्वयार्थौ-(तनुकुक्षिः क्षोणिपतिर्भवति) छोटीकोंखवाला राजा होय और (समकुक्षिः शूरः च पुनः भोगान्वितो भवति) बराबर कोंखवाला बलवान् और भोगी होय और (उच्चकुक्षिः धनहीनो भवति) ऊंचीकोंखवाला धनहीन होय और (विषमकुक्षिः मायावी स्यात्) कुछ ऊंची नीची कोंखवाला कपटी छल करनेवाला होय ॥ १०१ ॥

कुक्षिर्यस्य गभीरा विनिपातं स लभते नरः प्रायः ।
उत्ताना यस्य पुनर्नारीवृत्तेन जीवते सोपि ॥ १०२ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पुरुषस्य कुक्षिः गभीरा भवति) जिस पुरुषकी कोंख गहरी होय (स नरः प्रायः विनिपातं लभते) सो पुरुष निश्चय गिरनेको प्राप्त होय कहींसे गिर पड़ै और (पुनः यस्य कुक्षि उत्ताना भवति) जिसकी कोख ऊंची होय (स अपि नारीवृत्तेन जीवति) सो पुरुष स्त्रीसे जीविका करै अर्थात् उसका स्त्रीसे जीवन होय ॥ १०२ ॥

पार्श्वे मांसोपचिते प्रदक्षिणावर्तरोमाणि मृदूनि ।
यस्य भवेतां वृत्ते नियतं जगतीपतिः स स्यात् १०३ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्य पार्श्वे मांसोपचिते भवेतां च पुनः प्रदक्षिणावर्तरोमाणि मृदूनि भवंति) जिस के पसवाड़े मांससे भरे होंय

और उनमें दाहिनी ओरको नरम नरम रोंगटे होंय और (यस्य पार्श्वे वृत्ते भवेतां स जगतीपतिः नियतं स्यात्) जिसके पसवाड़े गोल होंय सो पृथ्वीपति निश्चय होय ॥ १०३ ॥

निम्नैर्भोज्यवियुक्ताःपार्श्वैःपिशितोज्झितैर्धनविहीनाः ।
स्थूलास्थिभिः पुमांसः कुटिलैः पुरुषाः परप्रेष्याः१०४॥

अन्वयार्थौः—(निम्नैः पार्श्वैः पुरुषाः भोज्यवियुक्ताः भवन्ति) नीचे पसवाड़ेवाले पुरुष अनेक प्रकार के भोजन रहित होते हैं और(पिशितोज्झितैः पार्श्वैः धनहीनाः भवंति) जिसके मांसरहित पसवाड़े होंय वे धनहीन होते हैं और (स्थूलास्थिभिः कुटिलैः पार्श्वैःपुमांसः परप्रेष्याः भवंति) जिसके मोटी मोटी हड्डियाँवाले टेढ़े पसवाड़े होंय तौ वे पुरुष दूसरे के दूत बने जैसे हलकारे होते हैं ॥ १०४ ॥

जठरं यस्य समं स्यादभितः स पुमान्महार्थाढ्यः ॥
सिंहनिभं यस्य पुनः प्राप्नोति स चक्रवर्तित्वम् ॥१०५॥

अन्वयार्थौः—(यस्य जठरं अभितःसमं स्यात्—स पुमान् महार्थाढ्यो भवति). जिसका पेट सब प्रकारसे बराबर होय सो पुरुष बहुत धनवाला होय और (पुनः यस्य जठरं सिंहनिभं स्यात्—स नर चक्रवर्तित्वं प्राप्नोति) जिसका पेट सिंहकी तुल्य होय—सो पुरुष चक्रवर्ती राजा होय ॥ १०५ ॥

भेकोदरो नरपतिर्वृषभमयः परदारभोगी च ।
वृत्तोदरः सुखी स्यान्मीनव्याघ्रोदरः सुभगः॥१०६॥

अन्वयार्थौः—(भेकोदरः नृपतिर्भवति) मेंडकके तुल्य पेटवाला राजा होय और (वृषभमयः परदारभोगी स्यात्) बैलके तुल्य पेटवाला परस्त्रीभोगी होय और (वृत्तोदरः सुखी स्यात्)गोल पेटवाला

सुखी होय और (मीनव्याघ्रोदरः सुभगः स्यात्) मछली और बघेरे के तुल्य पेटवाला सुन्दर भाग्यवान् होय ॥ १०६ ॥

पिठरजठरो दरिद्रो घटजठरो दुर्भगः सदा दुःखी ॥
भुजगजठरो भुजिष्यो बहुभोजी जायते मनुजः १०७

अन्वयार्थौः-(पिठरजठरः नरः दरिद्रो भवति) हंडिया कैसा पेटवाला पुरुष दरिद्री होय और (घटजठरो दुर्भगः तथा सदा दुःखी स्यात्) घड़ेकेसे पेटवाला पुरुष कुरूपी और सदा दुःखी रहै और (भुजगजठरः मनुजः भुजिष्यः च पुनः बहुभोजी जायते) सर्प केसे पेटवाला पुरुष टहलुवा और बहुत भोजी अर्थात् बहुत खानेवाला होय ॥ १०७ ॥

श्ववृकोदरो दरिद्रः शृगालतुल्यो दरो दरोपेतः ॥
पापः कृशोदरः स्यान्मृगभुकसदृशोहरश्चौरः ॥ १०८ ॥

अन्वयार्थौः-(श्ववृकोदरः पुरुषः दरिद्रः स्यात्) कुत्ता और भेडियाकासा पेटवाला पुरुष दरिद्री होय और (शृगालतुल्योदरः दरोपेतः स्यात्) गीदडके तुल्य पेटवाला डरपोकना होय और (कृशोदरःपाप स्यात्)दुबले पतले पेटवाला पापी होय और (मृगभुकसदृशोदरः चौरः स्यात्) चीतेकेसे पेटवाला चोर होता है॥१०८॥

जायेत यस्य मध्यं मुशलो दरसोदरं तनुत्वेन ॥
स पुमान्नृपतिर्ज्ञेयो विपर्ययो भवति विपरीते ॥१०९॥

अन्वयार्थौः-(यस्य उदरं मध्ये तनुत्वेन मुशलोदरसोदरं जायेत-स पुमान् नृपतिर्ज्ञेयः) जिसका पेट बीचमें पतला मूशलके आकार होय सो पुरुष राजा जानिये (विपरीते सति-विपर्ययो भवति) और किसी प्रकारसे जो होय तौ दरिद्री और विपरीत को करै ॥१०९॥

प्रहरणमरणं रमणीभोगानाचार्यपदमनेकसुतताम् ॥
एकद्वित्रिचतुर्भिः क्रमेण वलिभिः पुमाँल्लभते ॥११०॥

अन्वयः--(पुमान् क्रमेण एकद्वित्रिचतुर्भिः वलिभिः प्रहरणमरणं रमणीभोगान् तथा आचार्यपदं अनेकसुततां लभते) अस्यार्थः--पुरुष क्रमसे १--२--३--४ वलि अर्थात् सलवटों करिके शस्त्रसे मरना और स्त्रीसे भोग और आचार्यपद और अनेक पुत्रोंको प्राप्त होता है ॥ ११० ॥

अवलिर्नृपतिः सुखभाकपरदाररतो हि नूनं स्यात् ॥
सरलवलिःपापरतो नित्यमगम्याभिगमनमनाः १११ ॥

अन्वयार्थौ--(अवलिः पुरुषः नृपतिः तथा सुखभाक्) वलिरहित पुरुष राजा होय और सुख भोगनेवाला होय और (परदाररतः नूनं स्यात्) पराई स्त्रीमें निश्चय करिके सुखमाने और (सरलवलिः पापरतः) जिसकी सीधी सलवटें होंय वह पापकर्म करै और (नित्यं अगम्याभिगमनमनाः भवति) जिनसे भोगकरना उचित नहीं उनसे नित्य भोग करनेमें मन जिसका होय ॥ १११ ॥

अभ्युन्नतेन मांसोपचितेन सुसंहतेनभूमिभुजः ॥
हृदयेन महार्थजुषः पृथुना दीर्घायुषःपुरुषाः ॥ ११२ ॥

अन्वयार्थौ--(अभ्युन्नतेन मांसोपचितेन सुसंहतेन हृदयेन भूमिभुजो भवंति) ऊंचाईलिये--मांससे भराहुवा--अच्छी बनावटका ऐसी छाती जो होय तौ राजा होय और (पृथुना हृदयेन पुरुषः महार्थजुषः चपुनः दीर्घायुषो भवंति) जो चौडी छातीवाले पुरुष होंय तौ बड़े धनवाले और बड़ी आयुवाले होय ॥ ११२ ॥

स्थूलशिरापरिकलितं खररोमसमन्वितं पुंसाम् ॥
हृदयं पुनःसकंपं निःस्वत्वं शश्वदाददते ॥ ११३ ॥

अन्वयार्थौ:--(स्थूलशिरापरिकलितं खररोमसमन्वितं पुनः सकंपं हृदयं पुंसां शश्वत् निःस्वत्वं आददते) अस्यार्थः-- मोटी नसोंसे मिलीहुई--खरदरेबालोंकरि युक्त चालसहित जो ऐसी छाती होय तौ पुरुषोंको सदा दरिद्रताको देनेवाली होती है ॥ ११३ ॥

पृथुलं भवत्युरःस्थलमचलशिलाकठिनमुन्नतं नृपतेः॥
मृगनाभीपत्रलतासमानमुरोरोमराजिचितम् ११४॥

अन्वयार्थौ:--(नृपतेः उरस्थलं पृथुलं अचलशिलाकठिनं उन्नतं भवति) राजाकी छाती चौड़ी पर्वतकी शिलाके तुल्य कडी ऊंची होती है (चपुनः उरः मृगनाभीपत्रलतासमानं रोमराजिचितं भवति) फिर वही छाती मृगनाभीपत्रलताकेतुल्य बालोंकी लकीरें करिके व्याप्त होती है ॥ ११४ ॥

उरसा घनेन धनवान्पीनेनभटस्तथोर्द्ध्वरोम्णास्यात् ।
निःस्वस्तनुना विषमेणाकालमृतिरकिंचनश्च नरः ११५

अन्वयार्थौ:--(घनेन उरसा धनवान् तथा पीनेन ऊर्द्ध्वरोम्णा उरसा भटः स्यात्)बहुत कडी छातीवाला धनवान् और मांसकी भरी हुई ऊपरसे रोमयुक्त ऐसी छातीवाला योद्धा अर्थात् शूरवीर होता है और (तनुना उरसा निःस्वःस्यात्)छोटी छातीवाला दरिद्र होय और (विषमेण उरसा अकालमृतिः स्यात्)ऊंची नीची छातीवालोंकी अकालमृत्यु होती है और (चपुनः नरः अकिंचनो भवति) वह मनुष्य धनरहित अर्थात् दरिद्र होय ॥ ११५ ॥

वृत्ताःस्तनाः प्रशस्ताःसुस्निग्धाःकोमलाःसमाःपुंसाम् ।
विषमाः परुषा विकटाः प्रायोदुःखाय जायन्ते ॥११६॥

अन्वयार्थौ:--(वृत्ताः सुस्निग्धाः कोमलाः समाः पुंसां स्तनाःप्रश-

स्ताः सन्ति) गोल-बहुत चिकने-नरम-और बराबरवाले पुरुषोंके स्तन अच्छे होते हैं और (विषमाः परुषाः विकटाः प्रायः दुःखाय जायंते)ऊंचे नीचे कठोर भयानक बहुधा दुःख देनेवाले होते हैं११६

मांसोपचितैर्भूपाः सुभगाः स्युश्चूचुकैरपि द्वंद्वैः ॥
पीनैःसुखिनो विषमायतैःसदानिःस्वताभाजः॥११७॥

अन्वयार्थौः-(मांसोपचितैः अपि चूचुकैः द्वंद्वैः सुभगाः भूपाः स्युः) मांससे भरी हुई दोनों कुचोंकी नोंकवाले श्रेष्ठ राजा होते हैं और (पीनैः सुखिनो भवंति) मोटेपनसे सुखी होते हैं और (तत् विषमायतैः सदा निःस्वताभाजः स्युः) जो वेही कुच ऊंचे नीचे लंबे होंय तौ निर्धन अर्थात् सदा दरिद्री होते हैं ॥ ११७ ॥

पीनेन धनाधिपतिर्जत्रुयुगेनोन्नतेन भोगी स्यात् ।
विषमोन्नतेन दुःखी नतास्थिबंधेन धनहीनः ॥११८॥

अन्वयः-(पीनेन जत्रुयुगेन धनाधिपतिर्भवति) मोटी दोनों संधि होंय तौ धनवान् होय और (उन्नतेन भोगी स्यात्) जो ऊंची होय तौ भोगनेवाला होय और (विषमोन्नतेन दुःखी स्यात्) जो ऊंची और नीची होंय तौ दुःखी होय और (नतास्थिबंधेन धनहीनः स्यात्)जो झुकेहुये हड्डियोंका बंधन होय तौ निर्धन अर्थात् दरिद्री होय ॥ ११८ ॥

स्कन्धावनुक्रमतो मूले पीनौ समुन्नतौ किंचित् ।
वृषककुदसमौ ह्रस्वौ लक्ष्मीं दृढसंहतिं वहतः॥११९॥

अन्वयः-(अनुक्रमतः मूले पीनौ किंचित् समुन्नतौ वृषककुदसमौ ह्रस्वौ स्कंधौ लक्ष्मीं दृढसंहतिं वहतः) अस्यार्थः-जो क्रमसे जड़में मोटे कुछ ऊंचे बैलकी टांटिके तुल्य छोटे कंधे होय तौ लक्ष्मीके

अचल समूहको देते हैं अर्थात् बहुत लक्ष्मीके देनेवाले होते हैं ११९

हुडवद्दीर्घौ स्कंधौ निर्मांसौ भारवाहकौ पुंसाम् ।
कुटिलौ कृशावतितनू खेदकरौ रोमशौ बहुशः॥१२०॥

अन्वयार्थौः—(पुंसां हुडवद्दीर्घौ निर्मांसौ स्कंधौ भारवाहकौ भवतः) जो बैलकेसे बडे मांसरहित जिन पुरुषोंके कंधे होंय वे बोझके ढोनेवाले होंय और (कुटिलौ अतिकृशौ बहुशः रोमशौ खेदकरौ भवतः) जो टेढे बहुत पतले—छोटे—बहुतबालोंके होंय तौ खेद अर्थात् रोगके करनेवाले होते हैं ॥ १२० ॥

भुग्नौ मांसविहीनावंसौ नतरोमशौकृशौ यस्य ।
निर्लक्षणेन लक्ष्म्या नामापि नाकर्णितं तेन॥१२१ ॥

अन्वयार्थौः—(यस्य अंसौ भुग्नौ मांसविहीनौ नतौ रोमशौ कृशौ भवतः) जिसके कंधे टेढे झुके हुये विनामांसके रोमवाले दुबले पतले होंय तौ(निर्लक्षणेन तेन लक्ष्म्या नाम अपि न आकर्णितं) वे अभागे पुरुष लक्ष्मीका नामभी नसुनें कि लक्ष्मी कैसी होती है ॥ १२१ ॥

अत्युच्छ्रितौ च अंसौ किंचिद्बाह्वोः समुन्नतिं दधतः।
सुश्लिष्टसंधिबन्धौ वपुषोर्धनिशूरयोः स्यातास्म्१२२

अन्वयार्थौः—(यस्य सुश्लिष्टसंधिबंधौ अत्युच्छ्रितौ अंसौ बाह्वोः किंचित् समुन्नतिं दधतः) जिसके अच्छे मिले हुए जोड़ बंध कंध बाहुसे कुछ एक ऊंचे होंय तौ(धनिशूरयोः वपुषोः एतादृशौ स्कंधौ स्याताम्) धनी और शूरवीरोंके शरीरके ऐसे कंधे होते हैं ॥१२२॥

मृदुतनुरोमे कक्षे प्रस्वेदमलोज्झिते सुरभिगन्धी ।
पीनोन्नते धनवतामतोन्यथावित्तहीनानाम् ॥ १२३ ॥

अन्वयार्थौ:--(मृदुतनुरोमे प्रस्वेदमलोज्झिते सुरभिगंधी पीनोन्नते एतादृशौ कक्षे धनवतां स्याताम्) कोमल पतले रोंगटे--पसीने और मल करिके रहित--सुंदर गंधवाली और मोटी ऊंची कांखें धनवानोंकी होती हैं और (वित्तहीनानां अतः अन्यथा स्याताम्) इससे अन्यथा निर्धनोंकी होती हैं ॥ १२३ ॥

बाहू वामविवलितौ वृत्तावाजानुलंबितौ पीनौ ।
पाणी फणछत्रांकौ करिकरतुल्यौ समौ नृपतेः॥१२४

अन्वयः--(वामविवलितौ वृत्तौ आजानुलंबितौ पीनौ बाहू तथा फणछत्रांकौ करिकरतुल्यौ समौ नृपतेः पाणी स्याताम्) अस्यार्थः--बांई ओरको फिरी हुई गोल घोंटूतक लंबी लटकती हुई मोटी बाहें और फण छत्रके आकार और हाथीकी सूंडके समान ऐसे हाथ राजाके होते हैं ॥ १२४ ॥

गोपुच्छाकृतिपीनं हीनं खररोमबहुलरोमभिर्दीर्घम्।
निर्मग्नशिरासन्धि प्रशस्यते भुजयुगं पुंसाम्॥१२५॥

अन्वयः--(गोपुच्छाकृतिपीनं हीनं खररोमबहुलरोमभिर्दीर्घं-निर्मग्नशिरासंधि पुंसां भुजयुगं प्रशस्यते) अस्यार्थः-- गऊकी पूंछके आकार मोटी हीन--खरदरे रोम और बहुतसे रोमोंकरिके युक्त और बड़ी जिनकी नसोंकी संधि डूबी हुई ऐसे पुरुषोंकी दोनो भुजा प्रशंसनीय हैं ॥ १२५ ॥

दुष्टःप्रोद्बद्धभुजो बहुरोमा बहुभुजिष्यः स्यात् ।
विषमभुजश्चौर्यरतिः समपीनभुजो नरो दुःस्थः१२६

अन्वयार्थौ:--(प्रोद्बद्धभुजः दुष्टः स्यात्) खूब गठीली फूली हुई भुजावाला दुःखदाई होय और (बहुरोमाः बहुभुजिष्यः स्यात्) बहुत रोमोंकी भुजावाला होय तौ उसके बहुत नौकर चाकर होय

और (विषमभुजः चौर्यरतः स्यात्) ऊंची नीची भुजावाला चोरीमें तत्पर रहै और (समपीनभुजः नरो दुःस्थः स्यात्) बराबर मोटी भुजावाला पुरुष एक जगह न ठहरै फिरता रहै ॥ १२६ ॥

पाणी नृपतेः श्लक्ष्णौ निः स्वेदौ मांसलौ तथाच्छिद्रौ ।
अरुणावकर्मकठिनावुष्णौ दीर्घाङ्गुली स्निग्धौ १२७

अन्वयः--श्लक्ष्णौ निःस्वेदौ मांसलौ तथा अच्छिद्रौ अरुणौ अकर्मकठिनौ उष्णौ दीर्घाङ्गुली स्निग्धौ नृपतेः पाणी स्याताम्) अस्यार्थः--अच्छे चमकदार पसीने रहित मांसके भरेहुये और छिद्र रहित लाल विना काम करे कड़े रहैं गरम बड़ी बड़ी अंगुली चिकने राजाके ऐसे हाथ होते हैं ॥ १२७ ॥

विस्तीर्णौ ताम्रनखौ स्यातां कपिवत्करौ धनाढयस्य ।
शार्दूलवद्विरूक्षौ विकृतौ निःस्वस्य निर्मांसौ॥१२८॥

अन्वयार्थौ--(विस्तीर्णौ ताम्रनखौ कपिवत्करौ धनाढ्यस्य स्याताम्) लम्बे चौड़े लालनखवाले-बन्दरकेसे हाथ जिसके ऐसे हाथ धनवालेके होतेहैं और (शार्दूलवत् विरूक्षौ विकृतौ मिर्मांसौ निःस्वस्य स्याताम्) बघेरेकेसे बुरे सूखेसे विनामांसके होंय तो ऐसे हाथ दरिद्रीके होते हैं ॥ १२८ ॥

रेखाभिः पूर्णाभिस्तिसृभिः करमूलमंकितं यस्य ॥
धनकांचनरत्नयुतं श्रीःपतिमिव भजति लुब्धेव१२९॥

अन्वयार्थौ-(यस्य करमूलं पूर्णाभिः तिसृभिः रेखाभिः अंकितं स्यात्) जिसका पहुंचा पूरी रेखा करिके युक्त होय तो (लुब्धा इव श्रीः धनकांचनरत्नयुतं पतिमिव भजति) तिसको लोभी हो करिके लक्ष्मी धन कांचन रत्नयुक्त पतिकीनांई भजै है ॥ १२९ ॥

करमूलैर्निगूढैः सुदृढं सुश्लिष्टसंधिभिर्भूपाः ॥
निःस्वाः श्लथैः सशब्दैः पाणिच्छेदान्वितैर्हीनाः॥१३०॥

अन्वयार्थौः-(निगूढैः सुदृढं सुश्लिष्टसंधिभिः करमूलैर्भूपाः भवन्ति) छिपे हुए बहुत कड़े मोटे अच्छेप्रकार मिलीहुई संधिवाले पहुंचे वा पंजेसे राजा होताहै और (श्लथैः निःस्वाः भवन्ति) शिथिलतासे दरिद्री होते हैं और (सशब्दैः पाणिच्छेदान्वितैः हीनाः भवन्ति) ढीले और शब्दसे युक्त होंय तो हीन होते हैं ॥ १३० ॥

अवहस्तं करपृष्ठं विस्तीर्णं पीनमुन्नतं स्निग्धम् ॥
विनिगूढशिरं परितः क्षोणिपतेःफणिफणाकारम्१३१

अन्वयः-(अवहस्तं विस्तीर्णं पीनं उन्नतं स्निग्धं परितः निगूढशिरः फणिफणाकारं करपृष्ठं क्षोणीपतेः भवति) अस्यार्थः- अच्छा चौड़ा मोटा ऊंचा चिकना जिसके छोर चारोओरसे मांस में डूबेहुये और सांपके फनके आकार हाथकी पीठ ऐसी राजाओंकी होती हैं ॥ १३१ ॥

मणिबन्धसमं निम्नं निर्मांसं रोमसंचितं सशिरम् ॥
करपृष्ठं निःस्वानां रूक्षं परुषं विवर्णं स्यात् ॥१३२॥

अन्वयः-(मणिबंधसमं निम्नं निर्मांसं रोमसंचितं सशिरं रूक्षं परुषं विवर्णं करपृष्ठं निःस्वानां स्यात्) अस्यार्थः-पहुंचेकी बराबर नीची विनामांसके रोमोंसे युक्त नसों समेत रूखी कडी बुरे रंगकी हाथकी पीठ ऐसी दरिद्रियोंकी होती है ॥ १३२ ॥

संवृत्तनिम्नेन धनी पाणितलेनोन्नतेन दानरुचिः ॥
निम्नेन जनकवित्तत्यक्तो विषमेण धनहीनः ॥१३३॥

अन्वयार्थौः-(संवृत्तनिम्नेन पाणितलेन धनी भवति) गोल नि-

चाई लिये हथेलीसे धनी होता है और (उन्नतेन दानरुचिर्भवति ऊंची हथेलीसे दानमें रुचि करनेवाला होता है और (निम्नेन जनक वित्तत्यक्तो भवति) नीची हथेलीसे पिताके धन करि छोड़ा हु होता है और (विषमेण धनहीनो भवति) ऊंची नीची हथेली धनहीन होता है ॥ १३३ ॥

अरुणेनाढ्यः पीतेनागम्यस्त्रीरतिः करतलेन ॥
सितासितेन दरिद्रो नीलेनापेयपायी स्यात् ॥१३४

अन्वयार्थौः–(अरुणेन करतलेन आढ्यःस्यात्) लाल हथेली धनवान् होता है और (पीतेन अगम्यस्त्रीरतिः स्यात्) पीली हथ लीसे जिनसे भोग उचित नहीं उनसे भोगकी इच्छा रहै औ (सितासितेन दरिद्रः स्यात्) सफेद और काली हथेलीसे दरिद्र होता है और (नीलेन अपेयपायी स्यात्) नीली हथेलीसे पीनेयोग नहीं उसका पीनेवाला अर्थात् मदिराका पीनेवाला होता है॥ १३४

बहुरेखापरिकलितं पाणितलं भवति यस्य मनुजस्य
यदि वा रेखाहीनं सोल्पायुर्दुः खितो निःस्वः॥१३५

अन्वयः–(यस्य मनुजस्य पाणितलं बहुरेखापरिकलितं भवा यदि वा रेखाहीनं स अल्पायुः चपुनः दुःखितो निःस्वो भवति अस्यार्थः–जिस मनुष्यकी हथेली बहुत रेखाओंसे युक्त हो अथवा रेखा न होंय सो थोड़ी आयु और दुःखी–दरिद्री होत है ॥ १३५ ॥

अधुना मीनाद्याकृतिरेखानां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये ॥
वामकरे नारीणां दक्षिणकरे नराणां तु ॥ १३६ ॥

अन्वयः–(अधुना नराणां दक्षिपकरे तथा नारीणां वामक मीनाद्याकृतिरेखाणां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये) अस्यार्थः–अब म

ष्योंके दाहिने हाथ और स्त्रियोंके बांये हाथमें जो मछलीके आकार रेखा हैं उनके लक्षण प्रकट करताहूं ॥ १३६ ॥

जीवितमरणं लाभालाभं सुखदुःखमिह जगत्यखिलम्॥
कररेखाभिः प्रायः प्राप्नोति नरोऽथवा नारी ॥ १३७ ॥

अन्वयः--(नरः अथवा नारी इह जगति अखिलं जीवितमरणं लाभालाभं सुखदुःखं प्रायः कररेखाभिः प्राप्नोति) अस्यार्थः--मनुष्य वा स्त्री इस जगत्में जीना मरना लाभ हानि सुख दुःख संपूर्ण बहुधा करिके हाथकी रेखाहीसे पाता है ॥ १३७ ॥

अन्तर्मुखेन मीनद्वयेन पूर्णेन पाणितलमध्यम् ॥
यस्याङ्कितं भवेदिह स धनी स चाप्रदोमनुजः॥१३८॥

अन्वयः--(यस्य मनुजस्य पाणितलमध्यं अन्तर्मुखेन पूर्णेन मीनद्वयेन अंकितं भवेत्--स इह धनी स अप्रदो भवति) अस्यार्थः--जिस मनुष्यकी हथेलीके बीच भीतरको है मुखजिनका ऐसी पूर्ण दो मछली करिके युक्त रेखा होंय वह पुरुष धनवान् तौ होय परंतु देनेवाला न होय ॥ १३८ ॥

अच्छिन्ना गंभीरा पूर्णा रक्ताब्जदलनिभा मृदुला ॥
अन्तर्वृत्ता स्निग्धा कररेखा शस्यते पुंसाम् ॥ १३९ ॥

अन्वयः--(पुंसां करतले अच्छिन्ना गंभीरा पूर्णा रक्ताब्जदलनिभा मृदुला अन्तर्वृत्ता स्निग्धा रेखा शस्यते) अस्यार्थः-- पुरुषके हाथमें टूटी न--गहरी होय--पूरी होय और लाल कमलकी पत्तीके बराबर नरम भीतरसे गोल चिकनी ऐसी रेखा होंय तौ वे श्रेष्ठ हैं ॥ १३९ ॥

मधुपिङ्गाभिः सुखिनः शोणाभिस्त्यागिनो गभीराः स्युः ।
सूक्ष्माभिर्धीमन्तः समाप्तमूलाभिरथ सुभगाः ॥ १४०

अन्वयार्थौः-(मधुपिंगाभिः रेखाभिः सुखिनो भवन्ति)सरबती रंगकी आभा जिस रेखाकी होय तौ ऐसी रेखासे सुखी होय और (शोणाभिः रेखाभिः त्यागिनः च पुनः गंभीराः स्युः) लाल रंगकी रेखाओं दानी और गंभीर होय और (सूक्ष्माभिः रेखाभिः धीमन्तो भवंति पतलीरेखाओंसे बुद्धिमान् होय और(अथ समाप्तमूलाभिः रेखाभिः सुभगाः स्युः) जड़से लगाय पूरी रेखा होय तौ ऐसी रेखाओं सुंदर और रूपवान् होय ॥ १४० ॥

पल्लविता विच्छिन्ना विषमाः पुरुषाः समास्फुटितरूक्षाः
विक्षिप्ताश्च विवर्णा हरिताःकृष्णाः पुनरशुभाः ॥ १४१

अन्वयः--(पल्लविताः विच्छिन्नाः विषमाः पुरुषाः समास्फुटितरूक्षाः विक्षिप्ताः च पुनः विवर्णाः हरिताः कृष्णाः पुनः अशुभाः भवन्ति अस्यार्थः--फैली हुई--टूटी--ऊंची नीची--खरदरी--बराबर--फटी हुई--रूखी--बिखरी हुई और बुरेरंगकी--हरी--काली ऐसी रेखा ओंके लक्षण अशुभ होते हैं ॥ १४१ ॥

पल्लवितायां क्लेशश्छिन्नायां जीवितस्य सन्देहः ।
विषमायां धननाशः परुषायां कदशनं तस्याम् ॥ १४२

अन्वयार्थौः--(पल्लवितायां तस्यां क्लेशो भवति) पत्तेयुक्त शाखाके तुल्य फैली रेखावालेको दुःख होय और (छिन्नायां तस्यां जीवितस्य संदेहो भवति फटीहुई रेखावालेको जीनेका सन्देह होय और (विषमायां तस्यां धननाशो भवति) ऊंची नीची रेखासे ध

का नाश होय और (परुषायां तस्यां कदशनं भवति) खरदरी रेखांसे बुरा भोजन होता है ॥ १४२ ॥

आपाणिकरमूलभागान्निःसृत्यांगुष्ठतर्जनीमध्ये ॥
आद्या भवन्ति तिस्रो गोत्रद्रव्यायुषां रेखाः ॥१४३॥

अन्वयः—(आपाणिकरमूलभागात् निःसृत्य अंगुष्ठतर्जनीमध्ये आद्यास्तिस्रः रेखाः गोत्रद्रव्ययुषां भवन्ति) अस्यार्थः—हाथके मूल भागसे निकलकर अँगूठा और तर्जनीके बीचमें पहलेही तीन रेखा क्रमसे जो होंय तौ ऐसीरेखा गोत्र द्रव्य आयुकी होती हैं ॥ १४३ ॥

प्रविच्छिन्नाभिच्छिन्नाभिः स्वल्पानि भवति कुलधनायूंषि॥ रेखाभिर्दीर्घाभिर्विपरीताभिर्भवति विपरीतम् ॥ १४४ ॥

अन्वयार्थौ—(प्रविच्छिन्नाभिच्छिन्नाभिः रेखाभिः स्वल्पानि कुलधनायूंषि भवन्ति) फटीटूटी रेखाओंसे थोडी संतान और थोड़ा धन और थोड़ी आयु होती हैं और(दीर्घाभिः विपरीताभिः रेखाभिः विपरीतं भवति)बड़ी पूरी रेखा होंय फटीटूटी विपरीत न होंय तौ बहुत संतान बहुत धन और बहुत आयुवालाहोता है ॥ १४४ ॥

मणिबन्धान्निर्गच्छति रेखा यस्य प्रदेशिनीमूलम् ॥
बहुबन्धुजनाकीर्णं तस्य पुनर्जायतेभिजनः ॥१४५॥

अन्वयः—(यस्य रेखा मणिबंधात् प्रदेशिनीमूलं निर्गच्छति पुनः तस्य बहुबन्धुजनाकीर्णं अभिजनः जायते) अस्यार्थः— जिसके पहुँचेसे रेखा प्रदेशिनी अर्थात् अंगूठेके पासकी तर्जनी अंगुलीकी जड़तक जायतौ तिस पुरुषके बहुत भाई और बहुत मनुष्योंका कुल होय ॥ १४५ ॥

लघ्व्या पुनर्नराणां लघुरिह दीर्घोऽथ दीर्घया वंशः ॥
परिभिन्नो विज्ञेयःप्रतिभिन्नया च्छिन्नया च्छिन्नः१४६

अन्वयार्थौ-(पुनः नराणां लघ्व्या रेखया वंशः लघुः) फिर मनुष्योंकी छोटी रेखासे वंश छोटा होय और (दीर्घया रेखया वंशः दीर्घः) बड़ी रेखासे वंश बड़ा होय और (प्रतिभिन्नया परिभिन्नः छिन्नया च्छिन्नः विज्ञेयः) टूटीफूटी रेखासे वंश बिखराहुवा होय. औरकटी हुई रेखासे वंशभी कटाहुवा विशेषकरि जानिये ॥१४६॥

रेखा कनिष्ठिकाया ज्येष्ठामुल्लंघ्य यस्य याति परम्॥
अच्छिन्ना परिपूर्णा सनरो वत्सरशतायुः स्यात्१४७

अन्वयः--(यस्य कनिष्ठिकाया रेखा ज्येष्ठां उल्लंघ्य परं याति स नरः अच्छिन्ना परिपूर्णा वत्सरशतायुः स्यात्) अस्यार्थः-- जिस मनुष्यकी कनिष्ठिका अंगुलीकी रेखा ज्येष्ठा अर्थात् बीचकी अंगुलीको उलांघि जाय तो उस मनुष्यकी बराबर पूरी सौवर्षकी आयु होय॥ १४७ ॥

यावन्मात्राऽच्छेदाज्जीवितरेखा स्थिरा भवन्ति नृणाम्।
अपमृत्यवोऽपि तावन्मात्रा नियतं परिज्ञेयाः ॥ १४८॥

अन्वयार्थौ--(नृणां जीवितरेखा छेदात् यावन्मात्राः स्थिराः भवन्ति) मनुष्योंके जीनेकी रेखा टूटी हुई जितनी स्थिर होंय तौ (तावन्मात्रा अपमृत्यवः अपि नियतं परिज्ञेयाः)उतनीही अल्पमृत्यु निश्चय करि जानने योग्य है ॥ १४८ ॥

पुंसामायुर्भागे प्रत्येकं पंचविंशतिः शरदाम् ॥
कल्प्याःकनिष्ठिकाङ्गुलिमूलादिह तर्जनीपरतः॥१४९

अन्वयः--(पुंसां आयुर्भागे प्रत्येकं शरदां पंचविंशतिः कनिष्ठि-

कांगुलीमूलात् इह तर्जनी परतः कल्प्याः) अस्यार्थः— मनुष्योंकी आयुके भागमें हरएक अंगुलीके नीचेतक पच्चीस वर्ष और कनिष्ठिकाके मूलसे तर्जनीतक कल्पना करना चाहिये ॥ १४९ ॥

रेखा मणिमन्धाद्यदिवांत्यंगुष्ठप्रदेशिनीमध्यम् ।
ऋद्धियुतं ख्यापयति विज्ञानविचक्षणं पुरुषम्॥१५०॥

अन्वयार्थौः—(यदि रेखा मणिवन्धात् अंगुष्ठप्रदेशिनीमध्यं याति) जो रेखा पहुंचेसे अंगूठा और तर्जनीके बीचमें जाय तौ (तदा ऋद्धि युतं विज्ञानविचक्षणं पुरुषं ख्यापयति) वह ऋद्धिसिद्धि युक्त विशेष ज्ञानमें चतुर पुरुषको जनाती है ॥ १५० ॥

चेदंगुष्ठंगच्छति सैवंततोवितनुते महीशत्वम् ।
यदि सैव तर्जनीं वा साम्राज्यं मंत्रिपदमथवा॥१५१॥

अन्वयार्थौः—(चेत् सा एव रेखा अंगुष्ठं गच्छति तर्हि महीशत्वं वितनुते) सो वही रेखा जो अंगूठेतक जाय तौ पृथ्वीका राजा होय और (यदि सा एव रेखा तर्जनीं वा गच्छति तर्हि साम्राज्यं अथवा मंत्रिपदं ददाति) जो वही रेखा तर्जनीतक जाय तौ राजाओंका राजा अथवा मंत्रीके पदको देती है ॥ १५१ ॥

निष्क्रान्ता मणिबन्धात्प्राप्तायदि मध्यमांगुलीरेखा ।
नृपतिं सेनाधिपतिं सा कुरुते वा तमाचार्यम् ॥ १५२ ॥

अन्वयार्थौः—(यदि मणिवन्धात् निष्क्रान्ता रेखा मध्यमांगुलीं प्राप्ता) जो पहुँचेसे निकलकर रेखा बीचकी अंगुलीतक जाय तौ तर्हि नृपतिं सेनापतिं कुरुते वा तं एव पुरुषं आचार्य्यं कुरुते) उसै राजा तथा राजाका सेनापति अर्थात् फौजका मालिक करै अथवा उसी पुरुष को आचार्य अर्थात् गुरु करै ॥ १५२ ॥

न च्छिन्ना न स्फुटिता दीर्घतरा विगतपल्लवा पूर्णा ।
ऊर्ध्वा रेखा कुरुते सहस्रजनपोषमेकोऽपि ॥ १५३ ॥

अन्वयः–(यस्य ऊर्ध्वरेखा न छिन्ना न स्फुटिता तथा दीर्घतरा विगतपल्लवा पूर्णा भवति एकः अपिस सहस्रजनपोषं कुरुते)अस्यार्थः– एकही जो ऊर्ध्व रेखा टूटी फूटी न होय और लंबी बड़ी और शाखा न लागी होय पूरी होय तौ वह हजार मनुष्योंके पालन करनेवाला होय ॥ १५३ ॥

सा ब्राह्मणस्य रेखा वेदकरी क्षत्रियस्य राज्यकरी ॥
वैश्यस्य महार्थकरी सौख्यकरी भवति शूद्रस्य १५४

अन्वयः–(सा एव ऊर्ध्वा रेखा ब्राह्मणस्य वेदकरी–क्षत्रियस्य राज्यकरी–वैश्यस्य महार्थकरी–शूद्रस्य सौख्यकरी भवति)अस्यार्थः–सो वही ऊर्ध्व रेखा जो ब्राह्मणके होय तौ वेदपाठी, और क्षत्रियके होय तौ राज्यके करनेवाली, और वैश्यके होय तौ बहुत धनके करनेवाली, और शूद्रके होय तौ सुखके करनेवाली होती है ॥ १५४ ॥

करमूलान्निर्याता यदि रेखानामिकांगुलीमेति ॥
विदधाति सार्थवाहं सार्थाढ्यं नृपति मान्यम् ॥१५५॥

अन्वयः– (यदि ऊर्ध्व रेखा करमूलान्निर्याता तथा अनामिकांगुलिं तदा एति सार्थवाहं सार्थाढ्यं नृपतिमान्यं विदधाति)अस्यार्थः– जो वही ऊर्ध्वरेखा हाथकी जड़से निकलकर अनामिका अंगुलीतक जायतौ सौदागर साहूकार करै अथवा धनी राजाओं करिके पूजने योग्य होय ॥ १५६ ॥

निष्क्रम्य पाणितलात्प्राप्नोति कनिष्ठिकांगुलीं रेखा ॥
धनकनकाढ्यं श्रेष्ठिनामिह कुरुते सा यशोनिष्ठम् १५६

अन्वयः-(या रेखा पाणितलान्निष्क्रम्य कनिष्ठिकाङ्गुलीं प्राप्नोति सा इह धनकनकाढ्यं श्रेष्ठिनं यशोनिष्ठं कुरुते) अस्यार्थः- जो रेखा हथेलीसे निकलकर कनिष्ठिका अंगुलीतक जाय तौ वह उस पुरुषको धन और सुवर्णसे युक्त यशके काममें लगेहुए सेठको करै अर्थात् वह सेठजी होय ॥ १५६ ॥

आलिखितं काकपदं धनरेखायान्तु सदृशतो यस्य ॥
अर्जयति धनानि पुनस्तत्क्षणमपिस व्ययं कुरुते १५७

अन्वयः--(यस्य धनरेखायां आलिखितं सदृशतः काकपदं भवति स धनानि अर्जयति पुनः तत्क्षणं अपि व्ययं कुरुते) अस्यार्थः- जिसकी धन रेखामें काकपदके तुल्य लिखाहुआ होय सो बहुत धनको इकट्ठाकरै फिर उसी समय शीघ्र खर्च करै ॥ १५७ ॥

त्रिपरिक्षेपाव्यक्ता यवमाला यस्य मणिबन्धे ॥
नियतं महार्थपतिः ससार्वभौमो नराधिपतिः॥१५८॥

अन्वयः-(यस्य मणिबंधे त्रिपरिक्षेपा व्यक्ता यवमाला भवति स नियतं महार्थपतिः तथा सार्वभौमः नराधिपतिर्भवति)अस्यार्थः- जिसके पहुंचेमें तिहरी प्रकट जौमालाहोय सो निश्चय बडे धनका पति और सार्वभौम अर्थात् सबपृथ्वीका राजाहोय ॥ १५८ ॥

करमूले यवमाला द्विपरिक्षेपामनोहरायस्य ॥
मनुजःसराजमंत्री विपुलमतिर्जायते मतिमान् १५९

अन्वयः-(यस्य करमूले द्विपरिक्षेपा मनोहरा यवमाला भवति समनुजः राजमंत्री विपुलमतिर्मतिमान् जायते) अस्यार्थः-जिसके

करमूलमें दुहरी सुंदर जौमाला होय सो पुरुष राजाका मंत्री बडी बुद्धिवाला और बुद्धिमान् अर्थात् चतुर होय ॥ १५९ ॥

सुभगैकपरिक्षेपा यवमाला यस्य पाणिमूले स्यात् ॥
सभवति धनधान्ययुतः श्रेष्ठिजनपूजितो मनुजः १६०

अन्वयः–(यस्य पाणिमूले सुभगा एकपरिक्षेपा यवमालास्यात् स मनुजः धनधान्ययुतः श्रेष्ठिजनपूजितो भवति) अस्यार्थः–जिसके हाथके मूलमें सुंदर इकहेरी जौमाला होय सो पुरुष धनधान्य करिके युक्त उत्तम पुरुषों अर्थात् सेठोंकरिके पूजित होय ॥१६०॥

यदि तिस्रोपरमाला मणिबंधादुभयतो विनिःसृत्य ॥
परिवेष्टयन्ति पृष्ठंतदधिकतममिह फलं ज्ञेयम्॥१६१॥

अन्वयः–(यदि मणिबंधात् उभयतः विनिःसृत्य तिस्रः अपरमालाः पृष्ठं परिवेष्टयंति इहतत् अधिकतमं फलं ज्ञेयं) अस्यार्थः–जो पहुंचेसे दोनों ओर निकलकर औरभी जौमाला हाथकी पीठको ढकलेय तौ इससे अधिक फल जानना चाहिये ॥ १६१ ॥

इह ताभिः पूर्णाभिः पूर्णां प्राप्नोति संपदं सदसि ॥
मध्याभिर्वा मध्यां ह्रस्वाभिर्वा पुमान् ह्रस्वाम् ॥१६२॥

अन्वयः–(इह ताभिः पूर्णाभिः पुमान् सदसि पूर्णां संपदं प्राप्नोति ताभिः मध्याभिः वा मध्यां संपदं प्राप्नोति-तथा ह्रस्वाभिः ह्रस्वां संपदं प्राप्नोति) अस्यार्थः–वही जौमाला पूरी होय तौ उस पुरुषको पूरी संपदा मिलै और–जौमाला कुछ बहुत न थोडी होय तौ मध्यम संपदा मिलै–और जो थोडीही जौमाला होय तौ थोडी संपदा प्राप्त होय ॥ १६२ ॥

आयुर्लेखानामांगुलिमूलान्तर्गता भवेद्दूर्द्धा ।

यस्यव्यक्ता रेखा स धर्मनिरतः सततं स्यात् ॥ १६३॥

अन्वयः–(यस्य आयुर्नाम रेखा अंगुलिमूलान्तर्गता ऊर्ध्वा व्यक्ता–स पुरुषः सततं धर्मनिरतो भवति) अस्यार्थः–जो आयुकीऊर्द्ध्व रेखा अंगुलियोंकी जडतक जाय और प्रकट होय सो पुरुष सदा धर्ममें तत्पर होय अर्थात् धर्मके काममें लगारहै॥१६३॥

यदि रेखा सर्वांगुलिसमस्तपर्वान्तरे स्थिता व्यक्ता॥
स्पष्टो यवोपि पुंसां महीयतां तन्महीशत्वम् ॥१६४॥

अन्वयः–(यदि रेखा सर्वाङ्गुलिसमस्तपर्वान्तरे स्थिता व्यक्ता तथा यवः अपि स्पष्टः महीयतां पुंसां तन्महीशत्वं भवति) अस्यार्थः–जो रेखा सब अंगुलियोंके सब पर्वों अर्थात् टुकडोंपर प्रकट होय और जौभी प्रगट होयँ तौ वह पुरुष पूजनीय पुरुषोंमें पृथ्वीका राजा होय ॥ १६४ ॥

रेखा कनिष्ठिकायुर्लेखामध्ये नरस्य यावंत्यः ॥
तावन्त्यो महिलाःस्युर्महिलायाःपुनरपि मनुष्याः१६५

अन्वयः–(यस्य नरस्य कनिष्ठिकायुर्लेखायां मध्ये यावन्त्यः रेखाःस्युः तावन्त्यः महिलाः स्युः महिलायाः पुनः अपि मनुष्याः स्युः)अस्यार्थः–जिस पुरुषकी कनिष्ठा अंगुलीकी आयुकी रेखाके बीचमें जितनी रेखा होयँ उतनीही स्त्री अथवा विवाह होने चाहिये और स्त्रीके होयँ तौ उतनेही पुरुष जानिये ॥ १६६ ॥

रेखाभिर्विषमाभिर्विषमा समाभिरथ सुदीर्घाभिः ॥
सुभगा सूक्ष्माभिःस्यात्स्फुटिताभिर्दुर्भगा नारी१६६॥

अन्वयः–(विषमाभिः रेखाभिः विषमा अथदीर्घाभिः समाभिः सुभगा सूक्ष्माभिः स्फुटिताभिः दुर्भगा नारी भवति)

अस्यार्थः--विषम अर्थात् कहीं थोडा कहीं बहुत रेखाओंसे विषम होतीहैं और बड़ी बराबर रेखाओंसे अच्छे चलनवाली होती हैं-औ पतली छोटी फूटी रेखाओंसे कुचालिनी स्त्री होती हैं ॥ १६६

मूलेंगुष्ठस्य नृणां स्थूला रेखा भवन्ति यावन्त्यः ॥
तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिःपुत्रिकास्ताभिः ॥१६७

अन्वयः--(नृणां अंगुष्ठस्य मूले यावन्त्यः स्थूला रेखाः भवन्ति तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिः ताभिः पुत्रिकाः स्युः) अस्यार्थः मनुष्योंके अंगूठेकी जडमें जितनी मोटी रेखा होयँ उतनेही पु होतेहैं और पतली रेखाओंसे उतनीही पुत्रियां होतीहैं ॥ १६७

यावन्त्यो मणिबंधायुर्लेखान्तः प्रतीक्षिताः स्थूलाः ।
तावन्तः संख्याकान्भ्रातॄन् वदन्ति सूक्ष्मा पुनर्भ
गिनी ॥ १६८ ॥

अन्वयः–(यावन्त्यः रेखाः मणिबंधात् आयुर्लेखान्तः स्थूल प्रतीक्षिताः तावन्तः संख्याकान्भ्रातॄन्वदन्ति पुनः ता रेखाः सूक्ष्म भगिन्यो भवन्ति) अस्यार्थः–जितनी रेखा पहुंचेके और आयुरे खाके बीचमें मोटी दीखें तौ उतनीही गिनतीके भाई कहेजायँ फि वेही रेखा जो पतली होयँतौ बहिनें होयँ ॥ १६८ ॥

रेखाभिश्छिन्नाभिर्भिन्नाभिर्भाविमृत्यवो ज्ञेयाः ॥
यावन्त्यस्ताःपूर्णा नियतंजीवन्ति ताभिरेखाभिः १६

अन्वयः–(यस्य आयुर्लेखाभिः छिन्नाभिर्भिन्नाभिर्भाविमृत्य ज्ञेयाःयावन्त्यस्ताः पूर्णाः ताभिः रेखाभिःनियतं जीवन्ति)अस्यार्थः जितनी आयुकी रेखा टूटी फूटी होयँ तौ उतनीही होन हार अल्प मृत्यु जानिये–और जो वेही रेखा पूरी होयँ तौ निश्च

करिके उन पूरी रेखाओंसे उतनेही वर्षतक आयु होय अर्थात् निश्चय जीवै ॥ १६९ ॥

मीनोमकरः शंखः पद्मोवांतर्मुखः सदा फलदः ॥
पाणौबहिर्मुखो यदि तत्फलं पश्चिमेवयसि ॥ १७० ॥

अन्वयः--(यदि पाणौ मीनः मकरः शंखः वा पद्मः अंतर्मुखः तदा सदा फलदः भवति–यदि बहिर्मुखः तत्फलं पश्चिमे वयसि भवति) अस्यार्थः–जो हाथमें मछली मगर शंख वा कमल हाथकेभीतर मुखकिये होयँ तौ सदा फलकेदेनेवाले होतेहैं और जो वेही बाहर मुख किये होयँ तौ उसका फल पिछली अवस्थामें होय ॥ १७० ॥

मीनाङ्कःशतभागी सहस्रभागी सदैव मकराङ्कः ॥
शंखाङ्को लक्षपतिः कोटिपतिर्भवति पद्माङ्कः ॥ १७१ ॥

अन्वयः–(मीनाङ्कःशतभागी स्यात्–मकराङ्कः सदैव सहस्रभागीस्यात्–शङ्खाङ्कः लक्षपतिर्भवति–पद्माङ्कः कोटिपतिर्भवति) अस्यार्थः–मछलीके चिह्नवाला सौका धनी होय और मगरके चिह्नवाला सदा हजारका धनी होथ और शंखके चिह्नवाला लक्षपती होय और कमलके चिह्नवाला करोड़पती होय ॥ १७१ ॥

छिन्नैर्भिन्नैः स्फुटितैरव्यक्तैः किमपि नास्ति फलमेतैः ॥
रहितैरविमुखा जायंते पाणितले प्रायोमी सार्वभौमा-
नाम् ॥ १७२ ॥

अन्वयः–(पाणितले एतैश्छिन्नैर्भिन्नैः स्फुटितैः अव्यक्तैः रहितैः किमपि फलं नास्ति–प्रायः अमी सार्वभौमानां अविमुखाजायन्ते) अस्यार्थः–जो हाथकी हथेलीमें वेही चिह्न टूटे फूटे निर्मल नदीखें तौ इनसे कुछ फल नहीं है--बहुधा येही चिह्न राजा महाराजाओंके सीधे सुमुख होतेहैं ॥ १७२ ॥

शैलः प्रांशुस्तले यस्य विस्फुटः स्फुरति सपुमान् ॥
प्रायो राज्यं लभते निजभुजसहायोपि ॥ १७३ ॥

अन्वयः—(यस्य तले प्रांशुः शैलःविस्फुटः स्फुरति—निजभुजसहायः अपि सपुमान् प्रायः राज्यं लभते) अस्यार्थः—जिसकी हथेली में ऊंचा पर्वत प्रकट होय तौ वह पुरुष अपनी भुजाओंके बलसेभी बहुधा राज्यको पाताहै ॥ १७३ ॥

रथयानकुंजरवाजिवृषाद्याः स्फुटः करे येषाम् ॥
परसैन्यजयनशीलास्तेसैन्याधिपतयः पुरुषाः ॥१७४॥

अन्वयः—(येषांकरे रथयानकुंजरवाजिवृषाद्याः स्फुटाः दृश्यंते—ते पुरुषाः परसैन्यजयनशीलाः सैन्याधिपतयः भवन्ति (अस्यार्थः—जिनके हाथमें रथ पालकी हाथी घोड़ा बैल आदिके आकार प्रकट दिखाई देयँ तौ वे पुरुष पराई सेनाके जीतनेवाले--सेनाके स्वामी-अर्थात् फौजके मालिक होतेहैं ॥ १७४ ॥

उडुपोवा बेडीवा पोतो वा यस्य करतले पूर्णः ॥
धनकांचनरत्नानां पात्रं सांयात्रिकः स स्यात् ॥१७५॥

अन्वयः—(यस्य करतले उडुपः वा बेडी वा पोतः पूर्णः भवति स धनकाञ्चनरत्नानां पात्रं सांयात्रिकः स्यात्)अस्यार्थः--जिसके हाथकी अथेलीमें डोंगा बेडा वा नाव पूरी होय तौ वह पुरुष धन सुवर्ण और रत्नोंका पात्र अर्थात् जहाजी सौदागर नावोंका व्यौपारी माल भरनेवाला होय ॥ १७५ ॥

श्रीवत्साभा सुखिनां चक्राभा भूभुजां करे रेखा ।
वज्राभा विभववतां सुमेधसां मीनपुच्छाभा ॥१७६॥

अन्वयः—(सुखिनां करे श्रीवत्साभा भवति-भूभुजांकरेचक्राभाभवति विभववतां करे वज्राभा भवति--सुमेधसां करे मीनपुच्छाभा भवति

अस्यार्थः-- सुखी पुरुषोंके हाथमें श्रीवत्स चिह्नके आकार रेखा होतीहै और राजाओंके हाथमें चक्रके आकार रेखा होतीहै और- ऐश्वर्यवालेके हाथमें वज्रकी रेखा होती है और उत्तम बुद्धिवालेंके हाथमें मछलीकी पूंछके आकार रेखा होतीहै ॥ १७६ ॥

वापीकूपजलाद्यैर्धर्मपरः स्यात्त्रिकोणरेखाभिः ॥
सीरेण नरः कृषिमानुलूखलप्रभृतिभिर्यज्वा ॥ १७७ ॥

अन्वयः--(त्रिकोणरेखाभिः वापीकूपजलाद्यैर्धर्मपरः स्यात्- सीरेण नरः कृषिकःस्यात्--उलूखलप्रभृतिभिः श्रीमान् यज्वा भवति) अस्यार्थः--जो त्रिकोण रेखा होय तौ बावडी कूवा तालाव आदिका बनानेवाला-और धर्ममें तत्पर होय-और जो हलकी रेखा होय तौ खेती करनेवाला होय-और जो ओखली आदि रेखा होय तौ धनवान् और यज्ञ करानेवाला होय ॥ १७७ ॥

करवालाङ्कुशकार्मुकमार्गणशक्त्यादयः करे यस्य ॥
नियतं स क्षोणिपतिर्वीरः शत्रुभिरजेयः स्यात्॥१७८॥

अन्वयः--(यस्य करे करवालांकुशकार्मुकमार्गणशक्त्यादयो रेखाः भवंति--स पुरुषः नियतं क्षोणिपतिर्भवति--सवीरः शत्रुभिः अजेयः स्यात्) अस्यार्थः--जिसके हाथमें तलवार और अंकुश वा धनुषबाणके आकार जो रेखा होय तौ सो पुरुष निश्चय राजा होय और उस वीर पुरुषको शत्रुभी नहीं जीतसकतेहैं॥ १७८ ॥

जायन्ते श्रीमंतः प्रासादैर्दामभिःस्फुटं मनुजाः ॥
निधिनायकाःकमंडलुकलशस्वस्तिकपताकाभिः१७९

अन्वयः--(प्रासादैर्दामभिःरेखाभिः मनुजाः स्फुटं श्रीमन्तो जायन्ते-

तथा कमंडलुकलशस्वस्तिकपताकाभिः मनुजाः निधिनायका जायन्ते) अस्यार्थः-मंदिर और मालारूप रेखाओंकरिके मनुष्य धनवाले होते हैं-और कमंडलु कलश साँथिया ध्वजाके आकार रेखा होय तौ वह पुरुष नवनिधिके नायक अर्थात् मालिक होतेहैं १७९

यस्य सदंडंछत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठितं पाणौ ॥
सोम्बुधिरशनावासां भुनक्ति भूमिं भुजिष्योपि १८०

अन्वयः-(यस्य पाणौ सदंडं छत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठितं भवति-सभुजिष्यः अपि अम्बुधिरशनावासां भूमिं भुनक्ति) अस्यार्थः-जिसके हाथमें दंडसहित छत्र और दोनों चमर प्रतिष्ठित कहिये होयँ सो पुरुष दासभी होय तौ समुद्रही है रशना और वसन जिसके ऐसी पृथ्वीके भोगनेवाले होते हैं ॥ १८० ॥

विप्रस्य यस्य यूपो वेदनिभं ब्रह्मतीर्थमपि हस्ते ॥
विश्वाधिपतिर्नियतं स भवेदथवाग्निहोत्रीशः ॥ १८१ ॥

अन्वयः-(यस्य विप्रस्य हस्ते यूपः वेदनिभं-ब्रह्मतीर्थं अपि स नियतं विश्वाधिपतिः अथवा स अग्निहोत्रीशः भवेत्) अस्यार्थः-जिस ब्राह्मणके हाथमें यज्ञस्तंभके और वेदके तुल्य और ब्रह्मतीर्थके आकार रेखा होयँ तौ वे पुरुष निश्चय जगत्का पति अथवा अग्निहोत्री होत हैं ॥ १८१ ॥

भाग्येन भवन्ति यवाः पुंसामंगुष्ठपर्वसु स्पष्टाः ॥
पोषविशेषनिमित्तं कर्मकरं यशस्तुरंगः स्यात् ॥ १८२ ॥

अन्वयः-(यस्य अंगुष्ठस्य यवाः पर्वसु पुंसां भाग्येन स्पष्टाःभवंति-पोषविशेषनिमित्तं कर्मकरं यशः तथा तुरंगः स्यात्) अस्यार्थः-जिसके अँगूठेके पोरुवेमें जौका चिह्न पुरुषोंके भाग्य वशकरिके

प्रकट होय तो वे पालन करनेके विशेष कारणसे कर्म करनेके यश और घोड़े होते हैं ॥ १८२ ॥

सुतवंतः श्रुतवन्तो जायन्तेंगुष्ठमूलगैस्तु यवैः ॥
मध्यगतैर्धनकाञ्चनरत्नाढ्या भोगिनः सततम्॥१८३

अन्वयः-(अंगुष्ठमूलगैः यवैः सुतवन्तः श्रुतवन्तो जायन्ते तथा मध्यगतैः यवैः धनकांचनरत्नाढ्याः सततं भोगिनो भवंति) अस्यार्थः-जिसके अंगूठेकी जड़में जौका चिन्ह होय तौ पुत्र और शास्त्रवाला होय-और जिसके अंगूठेके बीचमें जौका चिन्ह होय तौ वह धन सुवर्ण रत्नोंकरिके सदा भोगनेवाला होता है ॥ १८३ ॥

त्रिपरिक्षेपामूलेंऽगुष्टगता भवति यस्य यवमाला ॥
द्विपसुसमृद्धः सपुमान्राजा वा राजसचिवो वा १८४॥

अन्वयः-(यस्य अंगुष्ठगता मूले यवमाला त्रिपरिक्षेपा भवति-स पुमान् द्विपसुसमृद्धः राजा वा राजसचिवो भवति) अस्यार्थः-जिसके अंगूठेकी जड़में जौमालाकी तिलड़ी होय सो पुरुष हाथियोंकी ऋद्धिसमेत राजा वा राजमंत्री होता है ॥१८४ ॥

यस्य द्विपरिक्षेपा सैव नरो राजपूजितः स स्यात् ॥
यस्यैकपरिक्षेपा यवमाला सोपि वित्ताढ्यः ॥१८५॥

अन्वयः-(यस्य सा एव यवमाला द्विपरिक्षेपा स नरः राजपूजितः स्यात्-यस्य यवमाला एक परिक्षेपा स अपि वित्ताढ्यः स्यात्) अस्यार्थः- जिसके वही जौमाला दुलड़ी होय सो पुरुष राजका पूजनीय होय-और जिसके जौमाला एक होय सो धनी होता है १८५॥

यस्यांगुष्ठाधस्तात्काकपदं भवति विस्पष्टम् ॥
स नरः पश्चिमकाले शूलेन विपद्यते सद्यः ॥१८६॥

अन्वयः—(यस्य नरस्य अंगुष्ठाधस्तात्काकपदं विस्पष्टं भवति स नरः सद्यः पश्चिमकाले शूलेन विपद्यते) अस्यार्थः—जिस पुरुषके अंगूठेके नीचे जो कौवेके आकार चिह्न प्रकट होय सो मनुष्य शीघ्रही पिछली अवस्थामें शूलसे माराजाय ॥ १८६ ॥

अव्यक्ताः स्युस्तनवःखंडा रेखाथकरे स्थिता यस्य ॥
तिग्मांशोरिव रजनी श्रीस्तस्य पलायते सततम् १८७

अन्वयः—(यस्य करे रेखाः अव्यक्ताः खंडाः तनवः स्थिताःस्यु तस्यश्रीः सततं पलायते तिग्मांशोः रजनी इव पलायते) अस्यार्थः— जिसके हाथकी रेखा स्वच्छ नहीं होय खंडित होय और बहुत पतली होय तिसके लक्ष्मीजी सदा नहीं रहै भगिजाती है जैसे सूर्यसे रात्रि भगिजाती है ॥ १८७ ॥

एवमपरापि पाणौ शुभसंस्थाना शुभावहा रेखा ॥
किंबहुना मनुजानामशुभा पुनरशुभसंस्थाना ॥१८८॥

अन्वयः—(एवं मनुजानां पाणौ अपरापि शुभसंस्थाना रेखा शुभावहा बहुना किं पुनः अशुभसंस्थाना रेखा अशुभा) अस्यार्थः— ऐसेही मनुष्योंके हाथमें औरभी शुभ रेखा शुभके करनेवाली होती हैं बहुत कहनेसे क्याहै फिरभी अशुभ रूप रेखा अशुभ होतीहै १८८

ऋजुरंगुष्ठः स्निग्धास्तुंगोवृत्तःप्रदक्षिणावर्त्तः ॥
अंगुष्ठोपि धनवतां सुघनानि समानि पर्वाणि ॥१८९॥

अन्वयः—(धनवतां अंगुष्ठःअपि ऋजुः स्निग्धः तुंगः वृत्तः प्रदक्षिणावर्तो भवति च पुनःधनवतां अंगुष्ठःअपि सुघनानि वा समानि पर्वाणि भवंति) अस्यार्थः—धनवानोंका अंगूठा सूधा चिकना ऊंचा गोल दाहिनी ओर झुकाहुवाहोताहै और धनवानोंके अंगूठेमेंभी कठिन और बराबर पोरुवे होतेहैं ॥ १८९ ॥

सततं भवंति वलिताः सौभाग्यवतां सुमेधसां सूक्ष्माः॥
पाण्यंगुलयः सरला दीर्घा दीर्घायुषां पुंसाम् ॥ १९० ॥

अन्वयः–(सौभाग्यवतां सुमेधसां पुंसां पाण्यंगुलयः सततं वलिताः भवन्ति तथा दीर्घायुषां पुंसां सरला वा दीर्घा भवन्ति) अस्यार्थः–भाग्यवान् और बुद्धिमान् पुरुषोंके हाथकी अंगुली निरंतर मिली हुई होती हैं और बडी आयुवाले पुरुषोंकी अंगुली सूधी और बडी होती हैं ॥ १९० ॥

नियतं कनिष्ठिकांगुलिरनामिकापर्व उल्लंघ्य ॥
यद्यधिकतरा पुंसां धनमधिकं जायते प्रायः ॥१९१॥

अन्वयः–(यदि पुंसां कनिष्ठिकांगुलिः नियतं अनामिकापर्व उल्लंघ्य आधिकतरा भवति प्रायः अधिकं धनं जायते) अस्यार्थः–जो पुरुषकी कनिष्ठिका छोटी अंगुली निरंतर अनामिका अंगुलीके पोरुवेको उलोंघिकरि अधिक होतौ बहुधा धन अधिक होय ॥ १९१ ॥

दीर्घायुरंगुलीभिः सौभाग्ययुतः सुदीर्घपर्वाभिः ॥
विरलाभिः कुटिलाभिःशुष्काभिर्भवति धनहीनः॥१९२

अन्वयः–(दीर्घाभिः अंगुलीभिः दीर्घायुर्भवति च पुनः दीर्घपर्वाभिः अंगुलीभिः सौभाग्ययुतः स्यात् तथा विरलाभिः कुटिलाभिः शुष्काभिः अंगुलीभिः धनहीनो भवति) अस्यार्थः–लंबी अंगुलियों करिके बडी आयुवाला होय और बडे पोरुवोंकी अंगुली से भाग्यवान् होय और धनी नहीं टेढी सूधी पतली अंगुलियोंसे धनहीन अर्थात् दरिद्री होताहै ॥ १९२ ॥

स्थूला धनोज्झितानां शस्त्रान्वितानां बहिर्नताः पुंसाम् ॥
ह्रस्वांगुल्यश्चिपिटाश्चेटानां हन्त जायन्ते ॥ १९३ ॥

अन्वयः-(धनोज्झितानां पुंसां स्थूला भवंति शस्त्रान्वितानां पुंसां बहिर्नताः भवंति हंत चेटानां पुंसां ह्रस्वाः चिपिटाः अंगुल्यो भवंति) अस्यार्थः--धनरहित पुरुषोंकी अंगुली मोटी होतीहैं और हथियारवाले पुरुषोंकी अंगुली बाहिरको झुकी होती हैं और बडे खेदकी बात है कि दासोंकी अंगुली छोटी और चपटी होती हैं ॥ १९३ ॥

अंगुष्ठांगुलयो वा संख्यान्यूनाधिकाः स्फुटं यस्य ॥
धनधान्यैः परिहीनः सोल्पायुर्भूतले भवति ॥१९४॥

अन्वयः-(यस्य अंगुष्ठांगुलयःवा स्फुटं न्यूनाधिकाःसंख्याः भवंति स भूतले धनधान्यैः परिहीनः अल्पायुर्भवति) अस्यार्थः-जिसके अंगूठेकी अंगुली प्रकट कमती बढती जैसे पांच से छठी संख्या हो सो पृथ्वीमें धनधान्य करके हीन और थोडी आयुवाला होताहै॥१९४॥

छिद्रे मिथः कनिष्ठानामामध्यप्रदेशिनां स्यात् ॥
वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशो नरस्य सुखम् ॥१९५॥

अन्वयः-(यस्यकनिष्ठाअनामिकामध्यमाप्रदेशिनांमध्ये यदि छिद्रं स्यात् नरस्य वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशः सुखं भवति)अस्यार्थः-जिसकी कनिष्ठिकामें छिद्र होयतौ बूढेपनमें सुख होय और अनामिकामें छिद्र होयतो तरुणाईमें सुख होय,और मध्यमा प्रदेशिनीके बीचमें जो छिद्र होय तौ बालकपन में सुख होय ॥ १९६ ॥

विद्रुमरुचयःश्लक्ष्णाः पाणिनखाःकच्छपोन्नताः स्निग्धाः
सशिखाःक्रमेण विपुलाः पर्वार्द्धमिता महीशानाम्॥१९६

अन्वयः-(महीशानां पाणिनखाः विद्रुमरुचयः श्लक्ष्णाः कच्छपोन्नताः स्निग्धाः सशिखाः विपुलाः क्रमेण पर्वार्द्धमिता भवन्ति) अस्यार्थः-राजाओंके हाथोंके नख मूंगेकेसे रंग और चिकने कछुवेकीसी पीठके ढलाव चमकदार बडे बडे पोरुवेके आधेतक होतेहैं ॥१९६॥

दीर्घाः कुटिला रूक्षाः शुक्तनिभा यस्य करनखाविशि-
खाः॥तेजोमृजाविहीनाः सहीयते धान्यधनभोगैः १९७

अन्वयः–(यस्य पुरुषस्य करनखाः दीर्घाः कुटिलाः रूक्षाः शुक्तनिभाः तेजोमृजाविहीनाः विशिखाः भवन्ति स धनधान्यभोगैः हीयते) अस्यार्थः--जिस पुरुषके हाथके नख बड़े टेढे रूखे सफेद तेजकरिके स्वच्छतासे हीन चमत्काररहित ऐसे होयँ सो धन धान्यके भोगसे हीन होते हैं ॥ १९७ ॥

पुष्पयुतैर्दुःशीलाः श्वेतैः श्रमणास्तुषोपमैः क्लीबाः ॥
परतर्ककाविवर्णैश्चिपिटैःस्फुटितैर्नखैर्निःस्वाः॥१९८॥

अन्वयः–(पुष्पयुतैर्नखैःदुःशीला भवन्ति तथा श्वेतैःश्रमणास्तुषोपमैः क्लीबाः भवंति वा विवर्णैः परतर्ककाः चिपिटैः स्फुटितैःनिःस्वाः भवंति)अस्यार्थः–पुष्पयुक्तछींटेवाले नखोंसे दुःशील अर्थात् कुटिल स्वभावके होते हैं. और सफेद नखोंसे भिखारी होतेहैं और जिनके भुसीके बराबर नख होयँ वे नपुंसक होतेहैं,और बुरेरंगवाले नख पराई तर्क करनेवाले होतेहैं. और चिपटे टूटे फटे नखोंसे धनहीन अर्थात् दरिद्री होते हैं ॥ १९८ ॥

अपसव्यसव्यकरयोर्नखेषु सितबिंदवश्चरणयोर्वा ॥
आगन्तवः प्रशस्ताः पुरुषाणां भोजराजमतम् ॥१९९॥

अन्वयः–(पुरुषाणां अपसव्यसव्यकरयोः वा चरणयोर्नखेषु आगन्तवः सिताबिन्दवः प्रशस्ताः इति भोजराजमतम्) अस्यार्थः-- मनुष्योंके बायें वा दायें हाथके वा पांवके नखोंमें आये हुए सफेद बूंदवाले अच्छे होते हैं–यह भोजराजका मत है ॥ १९९ ॥

कच्छपपृष्ठो राजा हयपृष्ठो भोगभाजनं भवति ॥

धनसंपत्तिसुसेनाऽधिपतिः शार्दूलपृष्ठोपि ॥ २०० ॥

अन्वयः—(कच्छपपृष्ठः राजा भवति—हयपृष्ठः भोगभाजनं भवति—शार्दूलपृष्ठः अपि धनसंपत्तिसुसेनाधिपतिर्भवति) अस्यार्थः—कछुवेकीसी पीठके समान नखवाला राजा होय—और घोडेकीसी पीठके समान नखवाला भोगका पात्र अर्थात् भोगी होय और बघेरेकीसी पीठके समान नखवाला धन और संपत्ति युक्त सेनाका स्वामी होता है ॥ २०० ॥

लभते शिरालपृष्ठो निर्धनतां भुग्नवंशपृष्ठोपि ॥
कष्टं रोमशपृष्ठः पृथुपृष्ठो बन्धुविच्छेदम् ॥ २०१ ॥

अन्वयः—(शिरालपृष्ठः भुग्नवंशपृष्ठः अपि निर्धनतां लभते-रोमशपृष्ठः कष्टं लभते—पृथुपृष्ठः बंधुविच्छेदं लभते) अस्यार्थः—नसीली पीठवाला वा टेढीपीठवाला निर्धनताको पाताहै—और रोमयुक्त पीठवाला कष्ट अर्थात् दुःख पाताहै—और मोटी पीठवाला भाईयोंसे नाशको प्राप्त होता है ॥ २०१ ॥

नियतं कृकाटिका रोमाशिरासंयुता नृणां सा ॥
कुरुते कुटिला विकटा विसंकटा रोगदारिद्रयम् ॥ २०२

अन्वयः—(रोमशिरायुता कुटिला विकटा विसंकटा कृकाटिका यस्य भवति सा एव कृकाटिका नियतं नृणां रोगदारिद्र्यं कुरुते) अस्यार्थः—रोमभी हों नसेंभी हों टेढी ऊंची सकडी नारि और पीठकी संधि जिसकी ऐसी होय सोई कृकाटिका निश्चय मनुष्योंको रोग और दरिद्री करती है ॥ २०२ ॥

ह्रस्वग्रीवः शस्तो वृत्तग्रीवः सुखी धनी सुभगः ॥
कम्बुग्रीवस्तु भवेदेकातपवारणो नृपतिः ॥२०३॥

अन्वयः-(ह्रस्वग्रीवः शस्तः स्यात्-वृत्तग्रीवः सुखी धनी सुभगः स्यात्-कम्बुग्रीवः एकातपवारणो नृपतिर्भवति)अस्यार्थः-छोटी नारिवाला श्रेष्ठ होता है-और गोल नारिवाला सुखी धनवान् सुंदर होता है-तीन रेखावाली शंखकीसी नारिवाला एक छत्रधारी राजा होताहै ॥ २०३ ॥

महिषग्रीवः शूरो लम्बग्रीवोपि घस्मरः सततम् ॥
पिशुनो वक्रग्रीवः शस्तविनाशो महाग्रीवः स्यात् २०४

अन्वयः-(महिषग्रीवः शूरःस्यात्-लम्बग्रीवः अपि सततं घस्मरः स्यात् वक्रग्रीवः पिशुनः स्यात् महाग्रीवः शस्तविनाशः स्यात्)अस्यार्थः--भैंसेकीसी नारिवाला शूर अर्थात् योद्धा होय और लंबी नारिवाला निरंतर बहुत खानेवाला होय और टेढ़ी नारिवाला चुगली खानेवाला होय और बड़ी नारिवाला श्रेष्ठ बातको नाश करता है ॥ २०४ ॥

रासभकरभग्रीवो दुःखीस्याद्दांभिको बकग्रीवः ॥
शुष्कशिरालग्रीवाश्चिपिटग्रीवश्च धनहीनः ॥ २०५ ॥

अन्वयः-(रासभकरभग्रीवः दुःखी स्यात् बकग्रीवः दांभिकः स्यात्-चिपिटग्रीवः शुष्कशिरालग्रीवःच धनहीनःस्यात्) अस्यार्थः-गधा और ऊंटकीसी नारिवाला दुःखी होय और बगुलाकीसी नारिवाला पाखंडी होय और चपटी सूखीसी नसोंकी नारिवाला धनहीन होताहै ॥ २०५ ॥

पुण्यवतामिह चिबुकं वृत्तंमांसलमदीर्घलघुसंयुतंमृदुलं॥ अतिकृशदीर्घस्थूलं द्विधाग्रभागं दरिद्राणाम् २०६

अन्वयः-(इह पुण्यवतां चिबुकं वृत्तं मांसलं अदीर्घलघुमृदुलं

सुसंयुतं भवति तथा अतिकृशदीर्घस्थूलं द्विधाग्रभागं चिबुकं दरि
द्राणां भवति) अस्यार्थः—इस संसारमें पुण्यवानोंकी ठोडी गोल
मांससे भरी बड़ी न छोटी नरम सुडोल बनावटकी होती है और
पतली दुबली बड़ी और दो भागवाली अर्थात् गढ़ेलेदार ऐसी ठो
ड़ी दरिद्रियोंकी होती है ॥ २०६ ॥

हनुयुगलं सुश्लिष्टं चिबुकोभयपार्श्वसंस्थितं पुंसाम् ॥
दीर्घ चक्रं शस्तं पुनरशुभं भवति विपरीतम् ॥ २०७ ॥

अन्वयः—(पुंसां चिबुकोभयपार्श्वसंस्थितं हनुयुगलं दीर्घचक्रं
सुश्लिष्टं शस्तं पुनः विपरीतं अशुभं भवति) अस्यार्थः पुरुषकी
ठोड़ीके दोनों ओर स्थित दोनों जावड़े अच्छे प्रकार मिले हुए बड़े
और गोल श्रेष्ठ होतेहैं फिर वेही जो विपरीत होयँ तो अशुभ
होतेहैं ॥ २०७ ॥

कूर्चप्रलम्बमुज्ज्वलमस्फुटिताग्रं निरंतरं मृदुलम् ॥
स्निग्धं पूर्णं सूक्ष्मं मेचकं तु विशिष्यते पुंसाम् ॥ २०८ ॥

अन्वयः—(पुंसां प्रलंबं उज्ज्वलं अस्फुटिताग्रं निरंतरं मृदुलं
स्निग्धं पूर्णं सूक्ष्मं मेचकं कूर्चं विशिष्यते) अस्यार्थः—पुरुषके लंबे
निर्मल जिनकी नोंक फटी नहीं आगेसे केवल नरम चिकने पूरे
महीन काले चमकदार बाल हों तो अच्छे होतेहैं ॥ २०८ ॥

परदाररताश्चौराः श्मश्रुभिररुणैर्नटानखैः स्थूलैः ॥
रूक्षैः सूक्ष्मैः स्फुटितैः कपिलैः केशान्विता बहुशः २०९

अन्वयः—(अरुणैः श्मश्रुभिः परदाररताश्चौराः भवंति तथा स्थूलैः
रूक्षैः सूक्ष्मैः स्फुटितैः कपिलैः नखैः बहुशः केशान्विता नटा भवंति)
अस्यार्थः— लाल डाढ़ी मूछोंके पुरुष पराई स्त्रीके भोगनेवाले चोर

होते हैं—और मोटे रूखे पतले टूटे फटे कंजाकेसे रंगके नखोंसे बहुतसे बालों करियुक्त नट होतेहैं ॥ २०९ ॥

सांतर्द्वितीयदशमिह शुक्रोद्वयेकोधिकः क्रमेण नृणाम
तदयं श्मश्रुभेदस्तद्विकृतिः षोडशे वर्षे ॥ २१० ॥

अन्वयः–(नृणां क्रमेण तदयं श्मश्रुभेदः सांतर्द्वितीयदशं द्व्येकोधिक इह शुक्रो भवेत्—चपुनः षोडशे वर्षे तद्विकृतिः स्यात्) अस्यार्थः—मनुष्योंको क्रम करिके मूछोंका भेदहै—सो बीस वर्षके भीतर वा२१वर्षके भीतर जो मूछें निकलें तो वीर्यको उत्पन्नता करनेवाली होती हैं और जो सोलह वर्षके भीतर निकलें तो वीर्यको रोग करनेवाली होती हैं ॥ २१० ॥

सुखिनः समुन्नतैः स्युः परिपूर्णा भोगयुतांश्चमांसयुतैः॥
सिंहद्विपेन्द्रतुल्यैर्गंडैर्नराधिपा नरा धन्याः ॥ २११ ॥

अन्वयार्थौः–(समुन्नतैः गंडैः नराः सुखिनो भवंति) ऊँचे गंडस्थल होनेसे मनुष्य सुखी होतेहैं—और (मांसयुतैः गंडैः परिपूर्णा भोगयुताः स्युः) मांसके भरे गंडस्थलसे भरे पूरे भोगी होते हैं और (सिंहद्विपेन्द्रतुल्यैः गंडैः धन्याः नराः नराधिपाः स्युः) सिंह वा हाथीके समान गंडस्थल होनेसे उत्तम पुरुष राजा होते हैं ॥ २११ ॥

निम्नौ यस्य कपोलौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ॥
पापास्ते दुःखजुषो भाग्यविहीनाः परप्रेष्याः ॥ २१२॥

अन्वयः–(यस्य कपोलौ निम्नौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ते पापाः दुःखजुषः भाग्यविहीनाः परप्रेष्याः भवंति) अस्यार्थः—जिसके कपोल नीचे मांसरहित छोटी मूछेंवाले और रोमों करिके युक्त होयँ वे पापी दुःख पानेवाले अभागी और पराये दूत अर्थात् नौकर होते हैं ॥ २१२ ॥

समवृत्तमवलं सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं समं सुरभि वदन
सिंहेभनिभं राज्यं संपूर्णं भोगिनां चेति ॥ २१३ ॥

अन्वयार्थौः-(यस्य वदनं समवृत्तं अवलं सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं स सुरभि सिंहेभनिभं राज्यं स्यात्) जिसका मुख सब ओरसे गो डरावना नहीं छोटा चिकना दर्शनीय अर्थात् देखने योग्य बरा सुगंध लिये सिंह और हाथीके तुल्य होय सो राज्य करनेवा होता है और (च पुनः संपूर्णं भोगिनामपि भवति) संपूर्ण भोगि योंकाभी ऐसाही मुख होता है ॥ २१३ ॥

जननीमुखानुरूपं मुखकमलं भवति यस्य मनुजस्य
प्रायो धन्यः स पुमानित्युक्तमिदं समुद्रेण ॥ २१४

अन्वयः-(यस्य मनुजस्य मुखकमलं जननीमुखानुरूपं भवति स पुमान् प्रायः धन्यो भवति समुद्रेण इदमिति उक्तं) अस्यार्थः- जिस मनुष्यका मुखकमल माताके मुखकासा होय सो पुरुष बहुध करिके धन्य होता है यह समुद्रने इस प्रकार कहाहै ॥ २१४ ॥

दौर्भाग्यवतां पृथुलं पुंसां स्त्रीमुखमपत्यरहितानाम् ।
चतुरस्रं धूर्तानामतिह्रस्वं भवति कृपणानाम् ॥ २१५

अन्वयार्थौः-(दौर्भाग्यवतां पुंसां मुखं पृथुलं भवति) अभा पुरुषोंका मुख चौड़ा भाडसा होता है और (अपत्यरहितानां स्त्रीमुख भवति) संतान रहित पुरुषोंका मुख स्त्रीकासा होताहै और (धूर्ता नां मुखं चतुरस्रं भवति) दगाबाज मायावी पुरुषोंका मुख चौकोर होता है और (कृपणानां मुखं अतिह्रस्वं भवति) लोभी औ कंजूषोंका मुख बहुत छोटा होता है ॥ २१५ ॥

भीरुमुखं पापानां निम्नं कुटिलं च पुत्रहीनानाम् ॥
दीर्घं निर्द्रव्याणां भाग्यवतां मंडलं ज्ञेयम् ॥ २१६ ॥

अन्वयार्थौः–(पापानां भीरु मुखं भवति) पापियोंका डरावना मुख होता है और (पुत्रहीनानां मुखं निम्नं च पुनः कुटिलं भवति) पुत्रहीनोंका मुख नीचा और टेढा होता है और (निर्द्रव्याणां मुखं दीर्घं भवति) धनहीनोंका मुख लंबा होता है और (भाग्यवतां मुखं मंडलं ज्ञेयं) भाग्यवानोंका मुख गोल होता है ॥ २१६ ॥

रासभकरभप्लवगव्याघ्रमुखा दुःखभागिनः पुरुषाः ॥
जिह्ममुखा विकृतमुखाःशुष्कमुखाहयमुखानिःस्वाः ॥

अन्वयार्थौः–(रासभकरभप्लवगव्याघ्रमुखाः पुरुषाः दुःखभागिनो भवंति) गधा ऊंट बंदर बघेरेकेसे मुखवाले पुरुष दुःख भोगनेवाले होते हैं और (जिह्ममुखा विकृतमुखाः शुष्कमुखा हयमुखा निःस्वाः भवन्ति) टेढे मुख बुरे मुख सूखे घोडेकेसे मुखवाले दरिद्री होते हैं ॥ २१७ ॥

बिम्बाधरो धनाढ्यः प्रज्ञावान् पाटलाधरो भवति ॥
प्रायोराज्यं लभते प्रवालवर्णाधरस्तु नरः ॥२१८॥

अन्वयार्थौः–(बिम्बाधरः धनाढ्यः स्यात्) कुँदरुकेसे लाल रंगके होठवाला धनवान् होताहै और (पाटलाधरः प्रज्ञावान् स्यात्) गुलाबकेसे होठवाला बुद्धिवान् होताहै और (प्रवालवर्णाधरः नरः प्रायः राज्यं लभते) मूंगेके रंगकीसी चमकदार होठवाला पुरुष निश्चय राज्यको पाताहै ॥ २१८ ॥

यस्याधरोत्तरोष्ठौ द्व्यंगुलमानौ सुकोमलौ मसृणौ ॥
मृदुसममसृक्काणौ सजायते प्रायशो धनवान् ॥२१९॥

अन्वयः--(यस्य अधरोत्तरोष्ठौ द्व्यंगुलमानौ सुकोमलौ मसृ मृदुसममसृक्कार्णौ प्रायशः स धनवान् जायते) अस्यार्थः-जिस होठ ऊपर नीचेके नापमें दोअंगुलके नरमाई लिये और चिक बराबर किनारेके होयँ सो बहुधा धनवान् होताहै ॥ २१९ ॥

पीनोष्ठःसुभगःस्याल्लंबोष्ठो भोगभाजनं मनुजः ॥
अतिविषमोष्ठोभीरुर्लघ्वोष्ठो दुःखितो भवति ॥२२०॥

अन्वय.थौः--(पीनोष्ठः सुभगःस्यात्) मोटे होठवाला अच्छे चलनका होताहै और (लम्बोष्ठः मनुजः भोगभाजनं स्यात्) लम्बे होठवाला मनुष्य भोगोंका पात्र होताहै और (अतिविषमोष्ठः भीरु स्यात्) बहुत छोटे बड़े होठोंवाला डरपोकना होता है और(लघ्वोष्ठ दुःखितो भवति) छोटे होठवाला दुःखी होता है ॥ २२० ॥

रूक्षैःकृशैर्विवर्णैःप्रस्फुटितैः खंडितैरतिस्थूलैः ॥
ओष्ठैर्धनसुखहीना दुःखिनः प्रायशः प्रेष्याः ॥२२१॥

अन्वयः--(रूक्षैः कृशैर्विवर्णैः प्रस्फुटितैः खंडितैः अतिस्थूलैः ओष्ठैः धनसुखहीनाः दुःखिनः प्रायशः प्रेष्याः भवन्ति) अस्यार्थः-- रूखे पतले बुरे रंगके फटे हुए खंडित और मोटे होठोंसे धन और सुखसेहीन और दुःखी बहुधा ऐसे दूत अर्थात् हरकारे होते हैं२२१

कुंदमुकुलोपमाः स्युर्यस्यारुणपीडिकाः समाःसुघनाः
दशनाःस्निग्धाः श्लक्ष्णास्तीक्ष्णादंष्ट्राःसवित्ताढ्यः २२२

अन्वयः--(यस्य दशनाः कुंदमुकुलोपमाः अरुणपीडिकासमा सुघनाः स्निग्धाः श्लक्ष्णाः सुतीक्ष्णा दंष्ट्राः स्युः स वित्ताढ्यः भवति) अस्यार्थः--जिसके दाँत कुंदकी कलीके तुल्य या लाल फुंसीके समान बहुत घने चिकने स्वच्छ और तेज डाढों युक्त होयँ सो धनवान् होता है ॥ २२२ ॥

धनिनः खरद्विपरदा निःस्वाभल्लूकवानराःस्युरदाः॥
निंद्याः करालविरलद्विपंक्तिशितिविषमरूक्षरदाः २२३

अन्वयार्थौ–(खरद्विपरदाः धनिनो भवन्ति) गधे और हाथीकेसे लंबे दांतवाले धनी होते हैं और (भल्लूकवानराः रदाः निःस्वा भवन्ति) रीछ और बंदरकेसे दांतवाले दरिद्री होते हैं और (करालविरलद्विपंक्तिशितिविषमरूक्षरदाः निंद्याः स्युः) भयंकर और जुदे जुदे काले ऊंचे नीचे दांतवाले निंदक अर्थात् बुराई करनेवाले होते हैं॥ २२३॥

द्वात्रिंशतानरपतिर्दशनैस्तैरेकविरहितैर्भोगी॥
स्यात्त्रिंशतातनुधनोऽष्टाविंशत्या सुखी पुरुषः॥ २२४॥

अन्वयार्थौ–(द्वात्रिंशता दशनैः पुरुषः नरपतिर्भवति) बत्तीस दांतवाले पुरुष राजा होते हैं और (एकविरहितैः तैः दशनैः भोगीस्यात्) जो वेही दांत ३१ होयँ तो भोगी होय और (त्रिंशता दशनैः तनुधनः स्यात्) ३० दांतवाला थोड़े धनवाला होय और (अष्टाविंशतिदशनैः सुखीस्यात्) २८ दांतवाला सुखी होता है॥ २२४॥

दारिद्र्यदुःखभाजनमेकोनत्रिंशता सदा दशनैः॥
ऊर्द्ध्वमधस्तैरपि विहीनसंख्यैर्नरो दुःखी॥ २२५॥

अन्वयार्थौः–(एकोनत्रिंशता दशनैः सदा दारिद्र्यदुःखभाजनं भवति) २९ दांतवाला सदा दरिद्री और दुःखका भाजन होताहै और (उर्द्ध्व अधः तैः विहीनसंख्यैः दशनैः स पुरुषः दुःखी स्यात्) ऊपर नीचेसे वेही दाँत संख्यासे कमती होयँ सो पुरुष दुःखी होता है॥ २२५॥

स्यातांद्विजावधः प्राक् द्वादशगे मासि राजदन्ताख्यौ ।
शस्तावूर्द्ध्वावशुभौ जन्मन्येवोद्गतौ तद्वत् ॥ २२६ ॥

अन्वयार्थौः-(द्विजाः द्वादशगे मासि प्राक् अधः स्यातां तो राजदन्ताख्यौ शस्तौ) १२ महीनेके भीतर नीचेके जो दाँत निकलें तो राजदन्त कहावें ये शुभहैं और (ऊर्द्धौ अशुभौ) जो ऊपरके निकलें तो अशुभहैं और (तद्वत् जन्मनि एव उद्गतौ अशुभौ) जो एक साथ जन्मसेही निकलें तो वेभी अशुभहैं ॥२२६॥

सर्वे भवन्ति दशनाः पूर्णे वर्षद्वयेजनिप्रभृति ॥
आसप्तमदशमान्तं नियतं पुनरुद्गमं यान्ति ॥ २२७ ॥

अन्वयार्थौः-(जनिप्रभृति वर्षद्वये पूर्णे सति सर्वे दशनाः भवन्ति) जन्मसे लेकर दो वर्षतक पूरे होनेपर सब दाँत होतेहैं और(आसप्तमदशमांतं नियतं पुनः उद्गमं यान्ति) सातवीं वर्षसे दशवें वर्षके अंततक निश्चय फिर उत्पन्न होते हैं ॥ २२७ ॥

रसना रक्तादीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनु समा येषाम् ॥
मिष्टान्नभोजिनस्ते यदिवात्रैविद्यवक्तारः ॥ २२८ ॥

अन्वयार्थौः-(येषां रसना रक्ता दीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनु समा भवति ते मिष्टान्नभोजिनो भवन्ति) जिनकी जीभ लालवडी छोटी नरम पतली बराबर होय वे मीठेके खानेवाले होतेहैं-और (यदि वा त्रैविद्यवक्तारो भवन्ति) अथवा तीनों वेदोंके वक्ता अर्थात् कहनेवाले होतेहैं ॥ २२८ ॥

संकीर्णाग्रास्निग्धा रक्ताम्बुजपत्रसन्निभा रसना॥
न स्थूला नच पृथुला यस्य सपृथ्वीपतिर्मनुजः ॥२२९॥

अन्वयः-(यस्य रसना संकीर्णाग्रा स्निग्धा रक्ताम्बुजपत्रसन्निभा

नस्थूला नच पृथुला समनुजः पृथ्वीपतिर्भवति) अस्यार्थः--जिस मनुष्यकी जीभका आगेका भाग सँकडा होय और चिकना लाल कमलके फूलकी पंखडी अर्थात् पत्तेके समान न मोटी न चौडी होय सो मनुष्य पृथ्वीपति अर्थात् राजा होय ॥ २२९ ॥

शौचाचारविहीना सितजिह्वाः सततं भवन्ति नराः ॥
धनहीनाः शितिजिह्वाः पापोपगताःशबलजिह्वाः ॥२३०

अन्वयार्थौः--(सितजिह्वाः नराः सततं शौचाचारविहीना भवन्ति) सफेद जीभवाले मनुष्य शौच आचारसे सदा भ्रष्ट होतेहैं और (शितिजिह्वाः धनहीनाः भवंति)काली जीभवाले मनुष्य धनहीन होते हैं और (शबलजिह्वाः पापोपगताः स्युः) कबरी चित्र विचित्र रंगकी जीभवाले मनुष्य पापयुक्त होतेहैं ॥ २३० ॥

सूक्ष्मारूक्षापरुषास्थूलासमपृथुलामलसमन्वितायस्य
जिह्वा पीता सपुमान् मूर्खो दुःखाकुलः सततम् ॥२३१

अन्वयः--(यस्य जिह्वा सूक्ष्मा रूक्षा परुषा स्थूला समा पृथुला मल समन्वितापीता भवति स पुमान् मूर्खः सततं दुःखाकुलो भवति) अस्यार्थः--जिसकी जीभ पतली रूखी टेढी मोटी बराबर चौडी मलसंयुक्त पीली होय सो पुरुष मूर्ख और सदा दुःखमें व्याकुल रहताहै ॥ २३१ ॥

रक्ताम्बुज तालुदरो भूमिपतिर्विक्रमी भवति मनुजः ॥
वित्ताढ्यः सिततालुर्गजतालुर्मंडलाधीशः ॥ २३२ ॥

अन्वयार्थौः--(रक्ताम्बुजतालुदरो मनुजः विक्रमी भूमिपतिर्भवति) लाल कमल के समानजिसके तालुवेका बीच होय वह पुरुष पराक्रमी पृथ्वीका राजा होताहै और (सिततालुः वित्ताढ्यो भवति) सफेद

तालुवेवाला धनवान् होय और (गजतालुः मंडलाधीशः स्यात् हाथीकेसे तालुवेवाला मंडलका स्वामी होताहै ॥ २३२ ॥

रूक्षं शबलं परुषं मलान्वितं न प्रशस्यते तालु ॥
कृष्णं कुलनाशकरं नीलं दुःखावहं पुंसाम् ॥ २३३ ॥

अन्वयार्थौः—(रूक्षं शबलं परुषं मलान्वितं पुंसां तालु न प्रशस्यते) रूखा चित्र विचित्र टेढामलयुक्त पुरुषोंका तालुवा अच्छा नहीं होता है और (कृष्णं तालु कुलनाशकरं भवति) काला तालुवाला कुलके नाश करनेवाला होताहै और (नीलं तालु पुंसां दुःखावहं भवति) नीले तालुवेवाला पुरुष दुःखदेनेवाला होताहै ॥ २३३ ॥

अरुणतालुर्गुणयुक्तस्तीक्ष्णाग्रा घंटिका शुभास्थूला ॥
लम्बा कृष्णा कठिना सूक्ष्माचिपिटा नृणांनशुभा२३४

अन्वयार्थौः—(अरुणतालुः गुणयुक्तो भवति) लाल तालुवाला गुणवान्होताहै और (तीक्ष्णाग्रा नृणां घंटिका शुभा भवति) पैनी नोंककी मनुष्योंकी घाटी शुभ होतीहै और (स्थूला. लंबा कृष्णा कठिना सूक्ष्मा चिपिटा न शुभा भवति) मोटी लंबी काली कड़ी छोटी चपटी शुभ नहीं होती है ॥ २३४ ॥

हसितमलक्षितदशनं किञ्चिद्विकसितकपोलमतिमधुरम्॥पुंसांधीरमकंपं प्रायेणस्यात् प्रधानानाम् २३५॥

अन्वयः—(अलक्षितदशनं किंचिद्विकासितकपोलं अतिमधुरं धीरं अकंपं हसितं प्रायेण प्रधानानां पुंसां स्यात्) नहीं दीखें दांत जिसमें कुछ विकसितकपोल बहुत मीठा धीरजयुक्तकोपनेसे. रहित हँसना बहुधा प्रधान अर्थात् मुखिया पुरुषोंका होता है ॥ २३५ ॥

उत्कंपितांसकाशिरः संमीलितलोचनं निपतदश्रु ॥

विकृष्टस्वरमुद्धतं मध्यमानामसकृदंते स्यात् ॥ २३६ ॥

अस्यार्थः--कंपतेहैं कंधे और शिर जिस्में मुँदिगये हैं नेत्र और गिरते हैं आंसू जिसमें और मध्यम पुरुषोंका वारवार अंतमें भारी ऐसा अधिक हास्य होता है ॥ २३६ ॥

चतुरंगुलप्रमाणा स्थूलपुटांतस्तनुच्छिद्रा ॥
न च प्रपीनात्ववलिता चिरायुषां भोगिनां नासा २३७

अस्यार्थः--चार अंगुलके प्रमाण लंबी और मोटे नकुवे और भीतर छोटा छिद्र बहुत मोटी न होय और सुकडी न होय ऐसी नाक बडी आयुवाले भोगी पुरुषकी होती है ॥ २३७ ॥

उन्नतनासः सुभगो गजनासः स्यात्सुखी महार्थाढ्यः॥
ऋजुनासो भोगयुतश्चिरजीवी शुष्कनासः स्यात् २३८

अन्वयार्थौः--(उन्नतनासः सुभगः स्यात्) ऊंचीनाकवाला बहुत अच्छे चलनवाला होताहै और (गजनासः सुखी च पुनः महार्थाढ्यः स्यात्) हाथीकीसी नाकवाला सुखी और बहुत धनवान् होताहै और (ऋजुनासः भोगयुतः स्यात्) सीधी नाकवाला भोगयुक्त होताहै और (शुष्कनासः चिरजीवी स्यात्) सूखी नाकावला बहुत कालतक जीवताहै ॥ २३८ ॥

तिलपुष्पतुल्यनासः शुकनासो भूपतिर्मनुजः ॥
आढ्योग्रवक्रनासो लघुनासा शीलधर्मपरः ॥ २३९ ॥

अन्वयार्थौः--(तिलपुष्पतुल्यनासः च पुनः शुकनासः भूपतिर्मनुजः स्यात्) तिलके फूलके समान नाकवाला और तोतेकीसी नाकवाला मनुष्य राजा होताहै और (उग्रवक्रनासः आढ्यःस्यात्) उग्र और टेढी नाकवाला धनवान् होताहै और (लघुनासा शीलधर्म

परः स्यात्) छोटी नाकवाला गुणधर्म में तत्पर होताहै ॥ २३९

क्रमविस्तीर्णसमुन्नतनासा महीशितुर्भवति ॥
द्वेधास्थिताग्रभागातिदीर्घह्रस्वाचनिः स्वस्य॥२४०॥

अस्यार्थः—क्रमसे फैलीहुई उठी नाक राजाकी होती है और दो प्रकारसे जिसका आगेका भाग स्थित होय और बहुत लंबी अथवा बहुत छोटी नाकवाला दरिद्री होताहै ॥ २४० ॥

कुंचित्याचौर्यरतिर्नासिकया चिपिटया युवतिमृत्युः ॥
छिन्नानुरूपयास्यादगम्यरमणीरतः पापः ॥ २४१ ॥

अन्वयार्थौः—(कुंचित्यानासिकया चौर्यरतिर्भवति) सुकडी हुई नाकवाला चोरीमें प्रीति करनेवाला होताहै और (चिपिटया नासिकया युवतिमृत्युः स्यात्) चपटी नाकवालेकी स्त्रीसे मृत्यु होती है और (छिन्नानुरूपया नासिकया अगम्य रमणीरतः पापः स्यात्) कटीसी सूरतकी नाकवाला जिनसे भोग उचित नहीं तिनसे भोग करनेवाला पापी होताहै ॥ २४१ ॥

विकृतामध्यविहीना स्थूलाग्रापिच्छिलासा दुःखस्य॥
दक्षिणवक्रानासा अभक्ष्यभक्षकक्रूरयोर्ज्ञेया ॥ २४२ ॥

अन्वयार्थौः—(विकृता मध्यविहीना स्थूलाग्रा पिच्छिला नासा स दुःखस्य भवति) बुरी बीचमें हीन आगेसे मोटी और रपटनी ऐसी नाकवाला पुरुष दुःखी होताहै और (दक्षिणवक्रा नासा अभक्ष्यभक्षकक्रूरयोः ज्ञेया) दाहिनी ओरसे टेढी नाकवाला नहीं खाने योग्य वस्तु तिसके खानेवाला और क्रूर होताहै ॥ २४२ ॥

निर्ह्रादिसानुनासादसकृत्क्षुतं भोगिनां धनवतां द्विः ॥
दीर्घायुषां प्रयुक्तं सुसहितं त्रिभवंति पुंसाम् ॥ २४३ ॥

अन्वयार्थौः—(भोगिनां असकृत् सानुनासात् निर्द्रादिधनवतां द्विः क्षुतं भवति) भोगी पुरुषोंकी वारबार नाकसे शब्दवाली एक छींक होती है और धनवानोंकी दो छींक होती हैं और (दीर्घायुषां पुंसां सुसहितं प्रयुक्तं त्रिःक्षुतंभवति) बडी आयुवाले पुरुषोंकी एक साथ करी हुई तीन छींक होती हैं ॥ २४३ ॥

स्खलितं लघु च नराणां क्षुतं चतुर्भवति भोगवताम् ॥
ईषदनुनादसहितं करोति कुशलं निरंतरं पुंसाम् २४४

अन्वयार्थौः—(भोगवतां नराणां स्खलितं तथा लघु चतुः क्षुतंभवति) भोगी पुरुषोंकी कुछखाली कुछभरी और हलकी छींक होतीहै और (ईषदनुनादसहितं क्षुतं पुंसां निरंतरं कुशलं करोति) थोडे शब्दयुक्त जो छींक है सो पुरुषोंको निरंतर कुशलकरे है अर्थात् मंगलकारी होती है ॥ २४४ ॥

अक्षिणीनिर्मलनीलस्फटिकारुणमये ईषत् स्निग्धे ॥
स्यातामंतर्मेचककृशान्तशोणेदृशौ धनिनः ॥ २४५ ॥

अस्यार्थः—जिस पुरुषके दोनों नेत्र निर्मल और नीले स्फटिककेसे रंगके लाल युक्त कुछ चिकने चमकदार बीचमें काले और छोटे हैं अंत जिनके लाल ऐसे नेत्र धनवानोंके होते हैं॥२४५॥

हरितालाभैर्नयनैर्जायन्ते चक्रवर्तिनो नियतम् ॥
नीलोत्पलदलतुल्यैर्विद्वांसो मानिनो मनुजाः॥२४६॥

अन्वयार्थौः—(हरितालाभैर्नयनैः मनुजाः नियतं चक्रवर्तिनो जायन्ते) हरतालके रंगके नेत्रवाले पुरुष निश्चय चक्रवर्ती होते हैं और (नीलोत्पलदल तुल्यैःनयनैः मनुजाः मानिनः विद्वांसो भवंति) नीलकमलके दलके समान नेत्रवाले पुरुष गर्ववाले और पंडित होते हैं ॥ २४६ ॥

लाक्षारुणैर्नरपतिर्नयनैर्मुक्तासितैः श्रुतज्ञानी ॥
भवति महार्थःपुरुषो मधुकांचनलोचनैःपिङ्गैः॥२४७॥

अन्वयार्थौः–(लाक्षारुणैः नयनैः नरपतिर्भवति)लाखकेसे लाल-रंगके नेत्रवाला राजा होता है और (मुक्तासितैः नयनैः श्रुतज्ञानी भवति) मोतीकेसे सफेद रंगके नेत्रवाला शास्त्रज्ञानी होता है और (पिङ्गैः मधुकांचनलोचनैः पुरुषः महार्थो भवति) पीले और शहद सोनेकेसे रंगके नेत्रवाला पुरुष बहुत धनवान् होता-है ॥ २४७ ॥

सेनापतिर्गजाक्षश्चिरजीवीजायतेसुदीर्घाक्षः ॥
भोगी विस्तीर्णाक्षः कामीपारावताक्षोपि ॥ २४८ ॥

अन्वयार्थौः–(गजाक्षः सेनापतिः स्यात्) हाथीकेसे नेत्रवाला सेनापती होता है और (सुदीर्घाक्षः चिरजीवी जायते) बहुत बडे नेत्रवाला बहुत समयतक जीवे है और (विस्तीर्णाक्षः भोगी स्यात्) लम्बे चौडे नेत्रवाला भोगी होता है और (पारावताक्षः अपि कामी स्यात्) कबूतरकेसे नेत्रवाला कामी होता है ॥ २४८ ॥

श्यावदृशां सुभगत्वं स्निग्धदृशां भवति भूरिभोगित्वम्।
स्थूलदृशां धीमत्त्वं दीनदृशां धनविहीनत्वम् ॥ २४९॥

अन्वयार्थौः–(श्यावदृशां सुभगत्वं भवति) धूमले नेत्रवाला अच्छा होता है और (स्निग्धदृशां भूरिभोगित्वं भवति) चिकने नेत्रवाला बडा भोगी होता है और (स्थूलदृशां धीमत्त्वं भवति) मोटे नेत्रवाला बुद्धिमान् होता है और (दीनदृशां धनविहीनत्वं भवति) दीन दृष्टिवाला धनहीन होताहै ॥ २४९ ॥

नकुलाक्षमयूराक्षा जायन्ते जगति मध्यमाः पुरुषाः।

अधमा मण्डूकाक्षाः काकाक्षा धूसराक्षाश्च ॥ २५० ॥

अन्वयार्थौः—(नकुलाक्षमयूराक्षाः पुरुषाः जगति मध्यमाः जायन्ते) नौला और मोरकेसे नेत्रवाले पुरुषको जगत्में मध्यम कहते हैं और (मंडूकाक्षाः तथा काकाक्षाः धूसराक्षाः अधमा जायन्ते) मेंडक और कउवे और धूसरके रंगकेसे नेत्रवाले अधम होते हैं ॥ २५० ॥

बहुवयसो धूम्राक्षाः समुन्नताक्षा भवन्ति तनुवयसः ॥
विष्टब्धवर्तुलाक्षाः पुरुषा नातिक्रामन्तितारुण्यम् २५१

अन्वयार्थौः—(धूम्राक्षाः बहुवयसो भवंति) धूमले नेत्रवाले बहुत-आयुके होते हैं और(समुन्नताक्षाः तनुवयसो भवंति) झुकीसी आंखवाले थोडी आयुके होते हैं और (विष्टब्धवर्तुलाक्षाः पुरुषाः तारुण्यं नातिक्रामन्ति) एंठे अकडे और गोल नेत्रवाले पुरुष तरुणाई नहीं उलाँघते अर्थात् तरुणाईके पहलेही मरजातेहैं ॥ २५१ ॥

ऋजु पश्यति सरलमनाः पश्यंत्यूर्ध्वं सदैव पुण्याढ्याः
पश्यत्यधः सपापस्तिर्यक्पश्यति नरः क्रोधी ॥२५२॥

अन्वयार्थौः—(सरलमनाः ऋजु पश्यति) सूधे मनवाला सीधा देखता है और पुण्याढ्याः सदैव ऊर्ध्वं पश्यंति) पुण्यवान् सदा ऊपरको देखते हैं और (सपापः अधः पश्यति) पापी नीचेको देखताहै और(क्रोधी नरः तिर्यक् पश्यति) क्रोधी मनुष्य तिरछा देखताहै२५२

सततमबद्धो लक्ष्म्या विघूर्णते कारणं विना दृष्टिः ॥
यस्य म्लाना रूक्षा सपापकर्मा पुमान् नियतम् २५३

अन्वयार्थौः—(यस्य दृष्टिः कारणं विना विघूर्णते स सततं लक्ष्म्या अबद्धो भवति) जिसकी दृष्टि विनाप्रयोजन घूमे सो पुरुष सदा

लक्ष्मी हीन होताहै और (यस्य दृष्टिः म्लाना रूक्षा स पुमान् निय
पापकर्मा भवति) जिसकी दृष्टि मैली और सूखीसी होय सो पुरु
निश्चय पाप कर्म के करनेवाला होताहै ॥ २५३ ॥

अंधः क्रूरः काणः काणादपि केकरो मनुजात् ॥
काणात्केकरतोपि क्रूरतरः कातरो भवति ॥ २५४

अन्वयार्थौः–(अंधः काणः क्रूरो भवति) अंधा और काणा क्रू
होताहै और (काणात् अपि मनुजात् केकरः क्रूरो भवति)काणेसे
अधिक दृष्टि फेरनेवाला मनुष्य क्रूर होताहै और (काणात् केकरत
अपि कातरः क्रूरतरो भवति) काणे और दृष्टि फेरनेवालेसे अधि
आँख चुरानेवाला बड़ा क्रूर अर्थात् खोटा होताहै ॥ २५४ ॥

अहि दृष्टिःस्याद्रोगी बिडालदृष्टिः सदा पापः ॥
दुष्टो दारुणदृष्टिः कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियो भवति २५५

अन्वयार्थौः–(अहिदृष्टिः रोगी स्यात्) सर्पकीसी दृष्टिवाला रोगी
होताहै और (बिडालदृष्टिः सदा पापः स्यात्) बिड़ालकीसी दृष्टि
वाला सदा पापी होय और (दारुणदृष्टिः दुष्टः स्यात्) भयकारी
दृष्टिवाला दुष्ट होताहै और (कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियो भवति
मुरगेकेसी दृष्टिवाला लड़ाका अर्थात् लड़ाई करनेवाला होता
है ॥ २५५ ॥

अतिदुष्टा घूकाक्षा विषमाक्षा दुःखिताः परिज्ञेयाः ॥
हंसाक्षा धनहीना व्याघ्राक्षाः कोपना मनुजाः॥२५६॥

अन्वयार्थौः–(घूकाक्षा अतिदुष्टाः भवंति) उल्लूकीसी आँखवाले
बड़े दुष्ट अर्थात् दुःख देनेवाले होतेहैं और विषमाक्षाः दुःखिता
परिज्ञेयाः) छोटी बड़ी आँखेंवाला दुःखी जानना और (हंसाक्षाः ध

नहीनाः भवंति) हंसकीसी आँखेंवाले दरिद्री होतेहैं और (व्याघ्राक्षाः मनुजाः कोपनाः भवंति) बघेरेकीसी आँखेंवाले पुरुष क्रोधी होते हैं ॥ २५६ ॥

नियतं नयनोद्धारः पुंसामत्यन्तकृष्णताराणाम् ॥
भूरिस्निग्धदृशां पुनरायुःस्वल्पं भवेत् प्राज्ञः॥२५७॥

अन्वयार्थौः–(अत्यन्तकृष्णताराणां पुंसां नियतं नयनोद्धारो भवति) बहुत काली आँखके तारेवाले मनुष्यकी आँखें निश्चय निकाली जायँ अर्थात् आँखें बनाई जायँ और (भूरिस्निग्धदृशां पुंसां आयुः स्वल्पं पुनः प्राज्ञः भवेत्) बहुत चिकनी आँखवाले पुरुषकी आयु थोडी होतीहै फिरभी पंडित होय ॥ २५७ ॥

अतिपिङ्गलैर्विवर्णैर्विभ्रान्तैर्लोचनैश्चलैरशुभः ॥
अतिहीनारुणरूक्षैः सजलैःसमलैर्नरा निःस्वाः॥२५८॥

अन्वयार्थौः–(अतिपिंगलैः विवर्णैः विभ्रान्तैः चलैर्लोचनैः नरो अशुभः भवति) बहुत कंजे और बुरे रंगकेसे फिरते हुये चलायमान नेत्रोंसे पुरुष अशुभ होता है और (अतिहीनारुणरूक्षैः सजलैः समलैः लोचनैः नराः निःस्वाः भवन्ति) बहुतहीन छोटे लाल रूखे जलसे भरे मैलसहित नेत्रवाले पुरुष दरिद्री होते हैं ॥ २५८ ॥

इह वदनमर्द्धरूपं वपुषो यदि वा समनुरूपमिदम् ॥
तत्रापि वरा नासा ततोपि मुख्ये दृशौ पुंसाम्॥२५९॥

अन्वयः–(इह वपुषः अर्द्धरूपं वदनं यदि वा इदं समनुरूपं तत्रापि नासा वरा ततः अपि पुंसां मुख्ये दृशौ भवतः) अस्यार्थः–इस शरीरमें आधा रूप तो मुख है–और यह मुख बराबर और भारी तिस मुखसेभी नाक श्रेष्ठ है–और नाकसेभी पुरुषोंके मुख्य नेत्र होते हैं ॥ २५९ ॥

सुदृढैः कृष्णैर्नयनच्छेदस्थितैः पक्ष्माभिर्घनैः सूक्ष्मै
सौभाग्यं चिरमायुर्लभते मनुजो धनेशत्वम्॥२६

अन्वयः–(मनुजः सुदृढैः कृष्णैः नयनच्छेदस्थितैः सूक्ष्मैः घ
पक्ष्मभिः चिरं आयुः धनेशत्वं सौभाग्यं लभते) अस्यार्थः–मनु
ऐसे दृढसहित काले नेत्रोंके छेदोंमें स्थित पतले घने बन्नीवाले ब
कालकी आयु और धनका स्वामी और अच्छा भाग्य पाताहै२६

पक्ष्मभिरधमाविटलैः पिङ्गैः स्थूलैर्विवर्णैश्च ॥
पक्ष्मततिविरहिताः पुनरगम्यनारीरताःपापाः॥२६१

अन्वयार्थौः–(विटलैः पिंगैः स्थूलैः विवर्णैः पक्ष्मभिः अधम
भवन्ति) बिगडी और पीली मोटी बुरी रंगकी ऐसी बन्नी वाले पु
अधम होते हैं और (पुनः पक्ष्मततिविरहिताः पुरुषाः अगम्यनारी
रताः पापाः भवंति) फिर बन्नीकी पंक्ति रहित पुरुष जो स्त्री भोग
योग्य नहीं तिन स्त्रियोंके भोगी और पापी होते हैं ॥ २६१ ॥

अनिमेषो रहितः पुरुषः स्यादेकमात्रानिमेषोपि ॥
नियतं द्विमात्रनिमेषः परजन्माश्रित्यजीवति सः२६

अन्वयार्थौः–(अनिमेषः एकमात्रानिमेषः अपि पुरुषः रहित
स्यात्) जिसमें एक मात्राके लगनेसे जितना समय लगे उतनेमें व
पुरुष अनिमेषरहित होते हैं और (द्विमात्रनिमेषः सः पुरुषः निय
परजन्माश्रित्य जीवति) दो मात्राके बोलनेमें जितना समय ल
उतने समयतक वह पुरुष निश्चय दूसरे मनुष्यके जन्मके आसरे
रहे ॥ २६२ ॥

धनिनस्त्रिमात्रनिमेषास्तथा चतुर्मात्रनिमेषवंतोपि॥
न तु पंचमात्रनिमेषाश्चिरायुषो भोगिनो धनिनः २६३

अन्वयार्थौः–(त्रिमात्रनिमेषाः तथा चतुर्मात्रनिमेषवंतः अ

धनिनो भवंति) तीन मात्रामें तथा चार मात्रामें जिसका जितना पलक लगे वे धनी होते हैं और (पंचमात्रं निमेषः चिरायुषः भोगिनः धनिनो नतु भवन्ति) जिसका पाँचमात्रामें पलक लगै वह बड़ी आयु और भोगी धनी नहीं होते हैं ॥ २६३ ॥

नयनं निमिषैरल्पैर्मध्यैर्दीर्घैश्च जायते पुंसाम् ।
आयुः स्वल्पं मध्यं सुदीर्घमथानुपूर्विकया ॥ २६४ ॥

अन्वयार्थौ-(पुंसां नयनं अल्पैः निमिषैः मध्यैर्दीर्घैः आयुः स्वल्पं जायते) जिनपुरुषोंके नेत्र थोड़े पलक लगनेवालेहों उनको आयु थोड़ी होती है और (चपुनः मध्यं सुदीर्घं अथ आनुपूर्विकया पुंसां आयुर्भवति) जो बहुत देरमें पलक लगनेवाले होयँ उनकी मध्यम आयु होती है इस क्रमसे आयु जाननी चाहिये ॥ २६४ ॥

जानुं प्रदक्षिणीकृत्य यावत् करो घंटिकां दत्ते ।
तदिदमिह समयमानं मात्राशब्देन निगदति ॥२६५॥

अन्वयः-(यावत् करः जानुं प्रदक्षिणीकृत्य घंटिकां,आदत्ते तदिदं इह समयमानं मात्राशब्देन निगदति) अस्यार्थः-जबतक हाथ जितनी देरमें जानुतक फिरकें आवै और गलेकी घैंटीको पकड़े उतनेही समयको मात्रा कहते हैं ॥ २६५ ॥

मन्दरमन्थानकमध्यमानजलराशिघोषगंभीरम् ॥
बालस्य यस्य रुदितं स महीमहीयान् संपालयति २६६

अन्वयः-(यस्य बालस्य रुदितं मंदरमंथानकमध्यमानजलराशि-घोषगंभीरं स महीमहीयान् संपालयति (अस्यार्थः-जिसबालकका रोना ऐसा जैसा मंदराचल पर्वतसे समुद्रके मथनेमें जो शब्दहुवा वैसा गंभीर होय सो पृथ्वीके राजाओंके पालनेवाला होताहै ॥ २६६ ॥

बाष्पाम्बु विनिर्मुक्तं स्निग्धमदीनरोदनं शस्तम् ॥
रूक्षं दीनं घर्घरमश्रु पुनर्दुःखदं पुंसाम् ॥ २६७ ॥

अन्वयार्थौ–(पुंसां विनिर्मुक्तं बाष्पाम्बु स्निग्धं अदीनं रोदनं श
पुरुषके छोडे हुए आंसू चिकने गरीबोंकेसे नहीं ऐसा रोनेवा
श्रेष्ठ होताहै और (पुनः रूक्षं दीनं घर्घरं अश्रु दुःखदं भवति) रू
गरीबीके जिसमें घर्घर शब्दके आंसू निकलें वह दुःखके देनेवा
होताहै ॥ २६७ ॥

बालेन्दुनते वित्तं दीर्घे पृथुलोन्नते श्यामे ॥
नासावंशविनिर्गतदले इव भ्रूदले दिशतः ॥ २६८ ॥

अन्वयः–(भ्रूदले बालेन्दुनते दीर्घे पृथुलोन्नते श्यामे इव नास
वंशविनिर्गतदले वित्तं दिशतः) अस्यार्थः–जिसकी दोनों भौं
बालचंद्रमाकीसी झुकीहुई बडी चौडी काली और नाकके वंश
पहलेही निकली ऐसी जो होंय तौ बहुत धनको देतीहैं ॥ २६८ ॥

नृणामयुते स्निग्धे मृदुतनुरोमान्विते भ्रुवौ शस्ते ॥
हीने स्थूले सूक्ष्मे खरपिङ्गलरोमके न शुभे ॥ २६९ ॥

अन्वयार्थौ–(नृणां भ्रुवौ अयुते स्निग्धे मृदुतनुरोमान्विते शस्ते
मनुष्योंकी भौं हैं मिलीनहोंय चिकनी और नरम छोटे रोमोंकरिके
युक्त होयतौ ऐसी श्रेष्ठ होतीहैं और (हीने स्थूले सूक्ष्मे खरपिंगल
रोमके न शुभे) हीन मोटी छोटी खरदरी पिंगल वर्णकीसी रो
वाली भौं हैं शुभ नहीं हैं ॥ २६९ ॥

ह्रस्वान्ता बहुदुःखानामगम्ययोषाजुषां च मध्यनताः ॥
स्तोकायुषामतिनता विषमाः खण्डा भ्रुवौ दरिद्रा
णाम् ॥ २७० ॥

अन्वयार्थौः-(बहुदुःखानां पुरुषाणां भ्रुवः खंडा ह्रस्वांता भवंति) बहुत दुःखी पुरुषोंकी भौंहके खंड अर्थात् टूक छोटे छोरवाले होते हैं और (अगम्ययोषाजुषां भ्रुवः खंडा मध्यनता भवंति) अगम्य स्त्रियोंके गमन करनेवालोंकी भौंहके टुकडे बीचमें झुके हुए होतेहैं और (स्तोकायुषां भ्रुवः खंडा अतिनताः भवंति) थोडी आयुवालोंकी भौंहके खंड बहुत झुकेहुए होतेहैं और (दरिद्राणां भ्रुवः खंडाः विषमाः भवंति) दरिद्रियोंकी भौंहके खंड ऊंचे नीचे होतेहैं ॥ २७० ॥

धनवन्तः सुतवन्तः शिखरैः पुरुषाः समुन्नतैर्विशदैः ॥
निम्नैः पुनर्भवन्ति द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः ॥ २७१ ॥

अन्वयार्थौः-(पुरुषाः विशदैः शिखरैः समुन्नतैः धनवन्तः सुतवन्तो भवन्ति) पुरुषोंकी अच्छी भौंह करिके ऊंची होयँ तो धनसंतान वाले होतेहैं और (पुनः निम्नैः शिखरैः द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः भवंति नीची भौंहवाले-धन सुख संतानसे रहित होतेहैं ॥ २७१ ॥

परिपूर्णकर्णपाली पिप्पलिकाद्यवयवः सुसंस्थानः ॥
लघुविवरो विस्तीर्णः कर्णः प्रायेण भूमिभुजाम् ॥२७२॥

अस्यार्थः-परिपूर्ण हैं कानके अंग जिसमें पिप्पलिकाको आदि लेकर जो अवयव अच्छी सुडौलके बनेहुए छोटे छेदवाले ऐसे बड़े कान बहुधा राजाओंके होतेहैं ॥ २७२ ॥

आद्यः प्रलम्बकर्णः सुखी स्वभावपीनमृदुकर्णः ॥
मतिमान्मूषककर्णश्चमूपतिः शङ्खकर्णः स्यात् ॥२७३॥

अन्वयार्थौः-(प्रलंबकर्णः स्वभावमृदुपीनकर्णः आद्यः सुखी स्यात्) लम्बे कान वाला स्वभाव करिके नरम-और मोटे कानोंसे पहलीही अवस्थामें सुखी होताहै और (मूषककर्णः मतिमान् भवेत्) मूसेकेसे कानवाला बुद्धिमान् होताहै और (शंखकर्णः चमूपतिः

स्यात्) शङ्ककेसे कानवाला सेनाका पति अर्थात् स्व
होताहै ॥ २७३ ॥

चिपिटश्रवणो भोगी दीर्घायुर्दीर्घरोमशः श्रवणः ॥
अतिपीनमहाभोगी श्रवणो जननायको भवति ॥२७४

अन्वयार्थौः–(चिपिटश्रवणः भोगी भवति) चिपकेसे कानवाला भोगी होताहै और (दीर्घरोमशः श्रवणः दीर्घायुर्भवति) रोमवाले कानोंसे बडी आयुवाला होताहै और (अतिपीनश्रव भोगी तथा जननायको भवति) बहुत मोटे कानवाला भोगी औ मनुष्योंका स्वामी होताहै ॥ २७४ ॥

ह्रस्वैर्निःस्वाः कर्णैर्निर्मांसैः पापमृत्यवो ज्ञेयाः ॥
व्यालंबिभिः शिरालैः क्रूराः स्यु प्रायशः कुटिलैः २७

अन्वयार्थौः–(ह्रस्वैः निर्मांसैः कर्णैः नराः निःस्वाः भवन्ति) छो मांसरहित कानवाले मनुष्य दरिद्री होतेहैं और (तथा पापमृत्य ज्ञेयाः) पापसे मरनेवाले होतेहैं और (व्यालंबिभिः शिरालैः कर्ण प्रायशः कुटिलैः क्रूराः स्युः) लम्बे और नसीले और कुटि अर्थात् टेढे कानवाले बहुधा क्रूर अर्थात् खोटे होतेहैं ॥ २७५ ।

येषां पृथुलाः क्षुद्राः कर्णाः स्युः कर्णशष्कुलीहीनाः ॥
स्वल्पायुषो दरिद्रा विलोक्यमाना विरूपास्ते ॥ २७६ ॥

अन्वयार्थौः–(येषां कर्णाः पृथुलास्ते पुरुषाः क्षुद्राः स्युः) जिनवे कान चौडे होयँ वे पुरुष ओछे अर्थात् नीच होतेहैं और (शष्कुली हीनाः कर्णाः स्वल्पायुषो भवंति) बीचकी नसों करिके हीन कान वाले थोडी आयुके होतेहैं और (ते पुरुषाः विलोक्यमाना विरूपा दरिद्रा भवन्ति) वे पुरुष देखनेमें कुरूप और दरिद्री होतेहैं ॥ २७६ ॥

विपुलमूर्द्धमधिकमुन्नतमर्द्धेन्दुसम्मितं राज्यम् ॥

प्रादिशत्याचार्यपदं शुक्तिविशालं नृणां भालम्॥२७७॥

अन्वयार्थौः–(नृणां भालं विपुलं ऊर्द्ध्वं अधिकं उन्नतं अर्द्धेन्दुसं-मितं राज्यं ददाति) मनुष्यका लिलार चौडा ऊंचा और बहुत ऊंचा आधे चंद्रमाके आकार होय तो राज्यके देनेवाला होता है और (शुक्तिविशालं नृणां भालं आचार्यपदं प्रादिशति) सीपीकासा चमकना और बड़ा मनुष्यका लिलार होय तो आचार्यपदके देने-वाला होता है ॥ २७७ ॥

स्वल्पैर्धर्मप्रवणा धनहीनाः संवृतैस्तथाविषमैः ॥
निम्नैः केवलबंधनवधभाजः क्रूरकर्माणः ॥ २७८ ॥

अन्वयार्थौः–(स्वल्पैः भालैः धर्मप्रवणा भवंति) छोटे लिलार-वाले धर्ममें तत्पर अर्थात् उदारचित्त होते हैं और (संवृतैः तथा विषमैः भालैः धनहीनाः भवन्ति) ढके वा औंधे तथा ऊंचे नीचे लिलारवाले धनहीन होते हैं और (निम्नैः भालैः केवलबंधनवध भाजः क्रूरकर्माणो भवंति) नीचे लिलारवाले केवल कैद मार इनके पानेवाले और क्रूरकर्म अर्थात् खोटे काम करनेवाले होते हैं ॥ २७८ ॥

भालस्थलस्थिताभिः सुशिराभिरधमाः सदैव पाप कराः ॥अभ्युन्नताभिराढ्यास्ताभिरपिस्वस्तिकाकृतिभिः ॥ २७९ ॥

अन्वयार्थौः–(भालस्थलस्थिताभिः सुशिराभिः रेखाभिः अधमाः सदैव पापकराः भवन्ति) लिलारमें स्थित नसों करिके जो रेखा होय तो नीच और सदा पाप करनेवाले होते हैं और (अभ्युन्नता-भिः तथा स्वस्तिकाकृतिभिःरेखाभिः अपि ताभिः आढ्याःभवन्ति) ऊंची और सांथियेके आकार उनही लिलारकी नसोंसे जो रेखा होय तो धनवान् अर्थात् धनाढ्य होते हैं ॥ २७९ ॥

रेखाभिर्वर्षशतं पञ्चभिरायुर्ललाटसंस्थाभिः ॥
पुरुषाणां स्त्रीणां वा कर्मकरत्वं करोति श्रीः ॥२८०॥

अन्वयार्थौः-(ललाटसंस्थाभिः पंचभिः रेखाभिः पुरुषाणां वा स्त्रीणां वर्षशतं आयुर्भवति) लिलारमें स्थित जो पाँच रेखा होयँ तो पुरुष वा स्त्रीकी सौवर्षकी आयु होतीहै और (श्रीःकर्मकरत्वं करोति) लक्ष्मी उनके कामके करनेवाली अर्थात् टहलनी होती है ॥ २८० ॥

भालस्थलस्थितेन स्फुटेन रेखाचतुष्टयेन नृणाम् ॥
वर्षाण्यशीतिरायुर्वसुधेशत्वं पुनर्भवति ॥ २८१ ॥

अन्वयार्थौः-(भालस्थलस्थितेन स्फुटेन रेखाचतुष्टयेन नृणां वर्षाणि अशीतिः आयुर्भवति) लिलारमें स्थित प्रकट चार रेखा करिके मनुष्यकी अस्सीवर्षकी आयु होती है और (पुनः वसुधेशत्वं भवति) और पृथ्वीका राजा होता है ॥ २८१ ॥

स्यादायुर्लेखाभिस्तिसृभिर्द्वाभ्यामथैकया नियतम् ॥
शरदां सप्ततिषष्टि चत्वारिंशदपि क्रमशः ॥ २८२ ॥

अन्वयार्थौः-(तिसृभिः रेखाभिः शरदांसप्ततिःभवति) तीन रेखा करिके तो ७० वर्षकी आयु होती है और (द्वाभ्यां रेखाभ्यां षष्टि भर्वति) दो रेखा करिके ६० वर्षकी आयु होती है और (एकया रेखया चत्वारिंशत् अपि क्रमशः नियतं आयुर्भवति) एक रेखा करिके ४० वर्षकी क्रमसे निश्चय आयु होती है ॥ २८२ ॥

भाले लेखाहीने पंचाधिकविंशतिसमाः ॥
आयुः स्याद्ध्रुवमखिला जायंते संपदः सपदि॥२८३॥

अन्वयार्थौ-(यदि भाले लेखाहीने सति पंचाधिकविंशतिसमाः

आयुः स्यात्) जो रेखारहित लिलार होयतौ २५ वर्षकी आयुहोय और (ध्रुवं अखिलाः सपदि संपदो जायन्ते) निश्चय संपूर्ण शीघ्रही संपदा होय ॥ २८३ ॥

यदि वा तिर्यग्दीर्घास्तिस्रो रेखाः शतायुषां भाले ॥
भूमिजुषां तु चतस्रः पुनरायुः पंचहीनशतम् ॥२८४॥

अन्वयार्थौः–(यदिवा शतायुषां भाले दीर्घा तिस्रः तिर्यक् रेखा भवंति) अथवा सौवर्षकी आयुवालोंके लिलारमें बड़ी तिरछीतीन रेखा होतीहैं और (पुनः भूमिजुषां तु चतस्रः पंचहीनशतं आयुर्भवति) फिर भूमिवालोंके लिलारमें वेही बड़ी तिरछी रेखा होंयतौ चार पांच कम सौवर्षकी आयु होतीहै ॥ २८४ ॥

जीवति वर्षाण्यशीतिः केशान्तोपगते रेखे ॥
भालेन वर्षनवतिः पुरुषो रेखाचितेन पुनः ॥ २८५ ॥

अन्वयार्थौः–(यदि केशान्तोपगते रेखे भवतः तर्हि वर्षाण्यशीतिः नरो जीवति)जो दो रेखा केशोंके अंततक जायतौ वह पुरुष८०वर्ष तकजीवेहै और (पुनर्भालेन रेखाचितेन पुरुषः वर्षनवतिर्जीवति) जो फिर अनेक रेखा करिके युक्त लिलार होयतौ वह पुरुष ९०वर्ष जीवेहै ॥ २८५ ॥

रेखाः सप्ततिरायुः पंचैताग्रस्थिताः पुनः षष्टिः ॥
बह्वयो नृणां शतार्द्धं दशोनमपि भंगुरा ददते॥२८६॥

अन्वयार्थौः–(यदि एताः पंच रेखा अग्रस्थिता भवंति तदा सप्तति र्वा षष्टिरायुर्भवति) जो वेही पांचरेखा आगेस्थित होंय तौ७०अथवा ६० वर्षकी आयुहोतीहै और (नृणां बह्वयः रेखा शतार्द्धं आयुः ददते) मनुष्योंके (बह्वयः)बहुत रेखा होंयतौ ५० वर्षकी आयुहोती

है और (यदि भंगुरा पंच रेखा भवंति तदा दशोनं अपि शता
आयुः ददते) जो वेही पांचरेखा टूटीफटी होंय तौ दशकमपचा
अर्थात् ४० वर्षकी आयु होतीहै ॥ २८६ ॥

भ्रूयुग्मोपगताभिस्त्रिंशद्वर्षाणि जीवति शरीरी ।
विंशत्यब्दानि पुनर्लेखाभिर्वा च वक्राभिः ॥ २८७ ॥

अन्वयार्थौः–(भ्रूयुग्मोपगताभिः रेखाभिः शरीरी त्रिंशद्वर्षाणि जीवति) दोनोंभौंहके ऊपर जो रेखा होंय तौ मनुष्य तीस वर्षतक जीवेहै और (पुनः वक्राभिः रेखाभिः विंशत्यब्दानि जीवति) फिर जो वेही टेढी रेखा होय तौ २० वर्ष जीवेहै ॥ २८७ ॥

छिन्नाभिरगम्यस्त्रीगामी क्षुद्राभिरपि नरोऽल्पायः ॥
रेखाभिर्मनुजः स्यादित्याह सुमंतविप्रेन्द्रः ॥ २८८ ॥

अन्वयार्थौः–(छिन्नाभिः रेखाभिः अगम्य स्त्रीगामीस्यात्) टूटी फटी रेखाओंसे मनुष्य, नहीं है गम्य जिसमें ऐसी स्त्रीसे भोग करने वाला होय और (क्षुद्राभिः रेखाभिः अपिनरः अल्पायुः स्यात) छोटी रेखाओंसे मनुष्य थोड़ी आयुवाला होताहै और (सुमन्त विप्रेन्द्र इत्याह रेखाभिर्मनुजः स्यात्) सुमंत नाम ब्राह्मणने मनुष्यकी ऐसी रेखाओंका यह फल कहाहै ॥ २८८ ॥

श्रीवत्सकार्मुकाद्या यस्य शिरारोमाभिः कृता भाले ।
रेखाभिर्वा नृपतिर्भोगी वा जायते सपदि ॥ २८९ ॥

अन्वयः–(यस्य भाले श्रीवत्सकार्मुकाद्याः शिरारोमभिः रेखाभिः कृता भवंति स नृपतिर्वा भोगि सपदि जायते) अस्यार्थः–जिसके लिलारमें नसों और रोमयुक्त रेखाओं करिके श्रीवत्स और धनुषको आदि लेकर चिह्न होंय सो पुरुष राजा और भोगी शीघ्रही होता है ॥ २८९ ॥

मस्तकमिभकुम्भनिभं भूमिभुजां मंडलं गवाद्यानाम् ॥
भोगवतां भवति समं क्रमोन्नतं मण्डलेशानाम् ॥ २९० ॥

अन्वयार्थौः–(भूमिभुजां मस्तकं इभकुंभनिभं भवति) राजाओंके मस्तक हाथीके मस्तकके तुल्य होते हैं और (गवाद्यानां मंडलं भवति) उनका गौ आदिका समूह होता है और (भोगवतां मस्तकं समं भवति) भोगनेवालोंका मस्तक बराबर होता है और (मंडलेशानां मस्तकं क्रमोन्नतं भवति) मंडलेशोंका मस्तक क्रम–करिके ऊंचा होता है ॥ २९० ॥

विकसच्छत्राकारं यस्य शिरो युवतिकुचनिभं वापि ॥
नृपतिःस सार्वभौमो निम्नं वा यस्य स महीशः ॥ २९१ ॥

अन्वयार्थौः–(यस्य शिरः विकसच्छत्राकारं वा युवतिकुचनिभं भवति स सार्वभौमः नृपतिर्भवति) जिसका मस्तक खुलेहुए छातेके आकार वा स्त्रीके कुचके आकार होय सो सर्वभूमिका राजा होता है और (यस्य शिरः निम्नं स महीशो भवति) जिसका मस्तक नीचा होय सो भूमिका राजा होता है ॥ २९१ ॥

विषमो धनहीनानां करोटिकाभश्चिरायुषो मूर्द्धा ॥
द्राघिष्ठो दुःखवतां चिपिटो मातृपितृघ्नानाम् ॥ २९२ ॥

अन्वयार्थौः–(धनहीनानां मूर्द्धा विषमो भवति) दरिद्रियोंका मस्तक ऊंच नीच होता है और (चिरायुषः मूर्द्धा करोटिकाभो भवति) बडी आयुवालेका मस्तक खोपडीके आकार होता है और (दुःखवतां मूर्द्धा द्राघिष्ठो भवति) दुःख पानेवालेका मस्तक बहुतही लम्बाहोता है और (मातृपितृघ्नानां मूर्द्धा चिपिटो भवति) माता पिताके मारनेवालेका मस्तक चिपटासा होताहै ॥ २९२ ॥

नविरहितो द्विमौलीः पापरतो मीनमौलिरतिदुःखी ॥
अधमरुचिर्घटमौलिर्घननतमौलिः सदा निन्द्यः॥२९३॥

अन्वयार्थौः—(द्विमौलिः धनविरहितः स्यात्) दो मस्तकवाला दरिद्री होता है और (मीनमौलिः पापरतः वा अतिदुःखी स्यात्) मछलीकेसे मस्तकवाला पाप करनेमें चाह रक्खे और बहुत दुःखी होता है और (घटमौलिः अधमरुचिः स्यात्) घडेकेसे मस्तकवाला नीचोंमें संगति करनेवाला होता है और (घननतमौलिः सदा निंद्यः स्यात्) कडे और झुके हुए मस्तकवाला सदा बुराईके योग्य होता है ॥ २९३ ॥

अत्रुटिताग्राः स्निग्धा ऋजवो मृदवःसमास्तनीयांसः ॥
अस्तोकदीर्घबहवस्तरङ्गिणो भुभूजां केशाः ॥ २९४ ॥

अन्वयः—(अत्रुटिताग्राः स्निग्धाः ऋजवः मृदवः समाः तनीयांसः अस्तोकदीर्घबहवः तरंगिणः भूभुजां केशाः भवंति) अस्यार्थः— नहीं टूटेहैं शिरे जिनके और चिकने सूधे नरम बराबर पतले बहुत लंबे और बहुत बलदार ऐसे बाल राजाओंके होते हैं ॥ २९४ ॥

ऊर्ध्वा रूक्षाः कपिलाः स्थूला विषमाः खरविभिन्नाग्राः॥
अतिह्रस्वदीर्घकुटिला जटिला विरला दरिद्राणाम् २९५

अन्वयः—(उर्ध्वाः रूक्षाः कपिलाःस्थूलाःविषमाः खरविभिन्नाग्राः अतिह्रस्वदीर्घकुटिलाः जटिला विरला दरिद्राणां भवंति) अस्यार्थः— ऊंचे रूखे भूरे मोटे ऊंचे नीचे खरदरे आगेसे शिरे फटे हुए बहुत छोटे बड़े टेढे बलदार मिले हुये जुदे जुदे ऐसे बाल दरिद्रियोंके होते हैं ॥ २९५ ॥

अंगं यद्यपि पुंसां स्त्रीणां वा पिशितविरहितं सूक्ष्मम ॥
परुषं शिरावनद्धं तत्तदनिष्टं परं ज्ञेयम् ॥ २९६ ॥

अन्वयः-(यद्यपि पुंसां अंगं वा स्त्रीणां अपि अंगं पिशितविरहितं सूक्ष्मं परुषं शिरावनद्धं तत्तत्परं अनिष्टं ज्ञेयम्) अस्यार्थः-जिन पुरुषोंका अंग वा स्त्रियोंका अंग मांसरहित पतला खरदरा चमकती हैं नसें जिसमें ऐसा अंग स्त्रीका हो परंतु पुरुषका बुराहै ॥ २९६ ॥

आयुःपरीक्षा पूर्वं नृणां लक्षणं तदा ज्ञेयम् ॥
व्यर्थं लक्षणज्ञानं लोके क्षीणायुषां यस्मात् ॥ २९७ ॥

अन्वयः-(नृणां आयुःपरीक्षा पूर्वं लक्षणं तदा ज्ञेयं यस्माल्लोके क्षीणायुषां लक्षणज्ञानं व्यर्थं भवति) अस्यार्थः-मनुष्योंकी आयु परीक्षा पूर्वक होय तौ वह लक्षणभी ठीकहै और जिस कारणसे लोकमें बहुत कमती आयुवालोंके लक्षण जाननेमें झूंठे होतेहैं ॥ २९७ ॥

यल्लक्ष्म पुनः शुभमपि करे रेखाप्रभृतिकं च संवदति ॥
बाह्याभ्यन्तरमपरं तत्र समुद्रेण निर्दिष्टम् ॥ २९८ ॥

अन्वयः-(यल्लक्ष्म शुभं अपि पुनः करे रेखाप्रभृतिकं च पुनः संवदति अपरं लक्षणं बाह्याभ्यंतरं तत्र समुद्रेण निर्दिष्टम् (अस्यार्थः-जो लक्षण शुभभीहैं और हाथकी रेखाओंका लक्षणभी कहताहै तिन दोनोंमें बाहिरी और भीतरी लक्षणोंको औरभी जानने चाहिये यह समुद्रने कहाहै ॥ २९८ ॥

इति महत्तमश्रीनरसिंहात्मजदुर्लभराजविरचितेतिलकापरनाम्नि नरस्त्रीलक्षणशास्त्रे शारीरिकाधिकारः प्रथमः ॥ १ ॥

संहतिसारानूकस्नेहोन्मानप्रमाणमानानि ॥
क्षेत्राणि प्रकृतिरथो मिश्रमेतदपि शारीरम् ॥ १ ॥

अन्वयः—(संहतिसारानूकस्नेहोन्मानप्रमाणमानानि क्षेत्राणि प्रकृति अपि एतत् मिश्रं शारीरम्) अस्यार्थः—बनावट जोड बल आचरण प्रीत उंचाई संख्या चौडाई आकार स्वभाव इनके मिलनेका नाम क्षेत्र और शरीरहै ॥ १ ॥

यत्र मिथः श्लिष्टत्वं मांसस्नाय्वस्थिसंधिबंधानाम् ॥
संहननं संघातः संहतिरिति कथ्यते सद्भिः ॥ २ ॥

अन्वयः—(यत्र मांसस्नाय्वस्थिसंधिबंधानां मिथः श्लिष्टत्वं संहननं संघातः इति सद्भिः संहतिः कथ्यते) अस्यार्थः—जहाँ मांस बडी बडी नसें और हाड जोडकी जगह बंधान आपसमें मिलना इसीका नाम संहनन और संघात है सत्पुरुष इसको संहति कहते हैं ॥२॥

यंत्रारिष्टमिवांगं प्रत्यंगं दृश्यते देहे ॥
संस्थानेन सुरूपं संहतिर्भवति सा महेच्छ ॥ ३ ॥

अन्वयः—(देहे यंत्रारिष्टं इव अंगं प्रत्यंगं दृश्यते संस्थानेन सुरूपं हे महेच्छसा संहतिर्भवति) अस्यार्थः—शरीरमें यंत्रकीसी भांति शुभ शुभ लक्षण अंगमें अंग दीखते हैं सोई बनावट करिके रूप होताहै हे महेच्छ अर्थात् महाशय सोई संहति होतीहै ॥ ३ ॥

मांसास्थिसन्धिबंधो ह्यशिथिलो हि लक्ष्यते यस्य ॥
सच संहतिमान् धन्यो दीर्घायुर्जायते नियतम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—(यस्य मांसास्थिसन्धिबंधः अशिथिलः लक्ष्यते ससंहतिमान् नियतं धन्यः दीर्घायुर्जायते) अस्यार्थः—जिसका मांस हाड बंधान ढीले नहीं दीखें सो संहतिमान् ऐसे शरीरवाला निश्चय धन्य और बडी आयुवाला होताहै ॥ ४ ॥

संहतिरहितो रूक्षः पिशितविहीनः शिरायुतः शिथिलः॥
स्थूलास्थिसन्निवेशो भवति क्लेशावहः स पुमान् ॥ ५ ॥

अन्वयः–(यः पुरुषः संहतिरहितः रूक्षः पिशितविहीनः शिरायुतः शिथिलः स्थूलास्थिसन्निवेशः स पुमान् क्लेशावहः भवति) अस्यार्थः–जिस पुरुषका शरीर अच्छी बनावटका नहीं होय और रूखा मांस रहित थोड़े मांसका बड़ी बड़ी नसें दीखें और ढीला मोटे हाड़ होयँ जिसमें सो ऐसा पुरुष दुःख भोगनेवाला होताहै ॥ ५ ॥

अथ सारः ।

त्वग्रक्तमांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राण्यनुक्रमेण नृणाम् ॥
साराः सप्त भवेयुः समासतस्तत्फलं ब्रूमः ॥ ६ ॥

अन्वयः–(अनुक्रमेण नृणां सप्त साराः भवेयुः त्वक्रक्तमांसमेदः अस्थि मज्जा शुक्रं समासतः तत्फलं वयं ब्रूमः) अस्यार्थः–क्रमसे मनुष्योंके७ सार होतेहैं-चर्म, रक्त, मांस,चर्बी, हाड़, मज्जा, वीर्य, सो संक्षेपसे उसका फल हम कहतेहैं ॥ ६ ॥

स्निग्धत्वचो बोधनाढ्यास्तनुत्वचः कुबुद्धयो मनुजाः॥
सुभगा मृदुत्वचः स्युः प्रागुक्तत्रित्वचः सुखिनः ॥ ७ ॥

अन्वयः–(स्निग्धत्वचः मनुजाः बोधनाढ्याः, तनुत्वचः मनुजाः कुबुद्धयः, मृदुत्वचः सुभगाः स्युः, प्रागुक्तत्रित्वचः सुखिनो भवन्ति) अस्यार्थः–चिकनी खालवाले मनुष्य ज्ञानवान् होते हैं–और पतली खालवाले मनुष्य खोटी बुद्धिके होतेहैं–और नरम खालवाले सुंदर होतेहैं–और पहले जो कहीगई तीन त्वचावालेभी सुखी होतेहैं ॥ ७ ॥

रसनोष्ठदन्तपीठकरांघ्रिगुदतालुलोचनान्तेन ॥
रक्तेन रक्तसारा धनतनयस्त्रीसुखोपेताः ॥ ८ ॥

अन्वयः-(रसनोष्ठदंतपीठकरांघ्रिगुदतालुलोचनान्तेन रक्ते
मनुजाः रक्तसाराः धनतनयस्त्रीसुखोपेताः भवंति) अस्यार्थः-जी
होठ मसूड़े हाथ पाँव गुदा तालुवा नेत्रोंके अंत जो ये सात ला
होयँ वे पुरुष रक्तसार कहातेहैं वे धन संतान स्त्री करिके युक्त सुख
होतेहैं ॥ ८ ॥

सर्वाङ्गीणेन चितो यथाप्रदेशं घनेन मांसेन ॥
उक्तः स मांससारो विद्याधनरूपपरिकलितः ॥ ९ ॥

अन्वयः-(यथाप्रदेशं घनेन सर्वाङ्गीणेन मांसेन चितः समांससा
उक्तः विद्याधनरूपपरिकलितो भवति) अस्यार्थः-जैसा जिस जग
चाहिये सब शरीरका मांस कड़े करिके जो पुरुष युक्त होय
मांससार कहिये वह विद्या धन रूप इन करिके युक्त होताहै ॥ ९

नखदन्तदृष्टिस्निग्धो मेदःसारः सुखान्वितः सुतवान्
स्थूलास्थिरस्थिसारः कान्तो विद्यां गतः सबलः॥१०

अन्वयार्थौ-(नखदन्तदृष्टिस्निग्धः मनुजः मेदःसारो भवति सुखा
न्वितः सुतवान् स्यात्) नख दाँत दृष्टि चिकने ऐसे जिस पुरुष
होयँ वह मेदसार कहाताहै वही सुखी और पुत्रवान् होताहै औ
(स्थूलास्थिरस्थिसारः मनुजः कान्तः विद्यांगतः सबलः स्यात्
मोटे हाडवाला अस्थिसार कहाताहै वह पुरुष और स्त्री विद्यावा
और बलवान् होतेहैं ॥ १० ॥

घनशुक्रोपचययुतः संस्थितियों महाबलः स्निग्धः
कथितः समज्जसारो बहुतनयः स्त्रैणसुखभागी ॥११

अन्वयः-(यः घनशुक्रोपचययुतः संस्थितिः स्निग्धः महाबलः स मज्जसारः कथितः स एव बहुतनयः स्त्रैणसुखभागी स्यात्) अस्यार्थः-जो बहुत वीर्यके समूहसे स्थित है जिसकी मज्जा चिकनी बहुत बल करिके युक्त होय सो मज्जसार कहाता है सोई पुरुष बहुत पुत्र और स्त्रियोंके सुखका भोगनेवाला होता है ॥ ११ ॥

योभवति शुक्रसारो विद्यासौभाग्यरूपपरिकलितः॥
प्रायेण सत्तसारः सर्वोत्कर्षप्रदः पुरुषः ॥ १२ ॥

अन्वयार्थौः-(यः पुरुषः शुक्रसारो भवति विद्यासौभाग्यरूपपरि कलितः स्यात्) जो पुरुषके शुक्रसार अर्थात् वीर्यका बल होय तो विद्या और सौभाग्य रूप इन करिके युक्त होता है और (यः पुरुषः प्रायेण सत्तसारो भवति सः सर्वोत्कर्षप्रदो भवति) जो पुरुषके बहुत करिके सत्तसार होय तो सब प्रकार करिके अधिकताका देनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ अनूकम् ।

पूर्वभवे ह्यनुवरतं सत्वस्वरूपगतिभिरभ्यस्तम् ॥
पुनरिह यदनुक्रियते तदनूकं कथ्यते सद्भिः ॥१३॥

अन्वयः-(सत्वस्वरूपगतिभिः अभ्यस्तं पूर्वभवे अनवरतं इह पुनः यत् अनुक्रियते सद्भिः तत् अनूकं कथ्यते) अस्यार्थः-जैसे सत्वस्वरूप गति अभ्यास कियाथा पहिले जन्ममें, वही इस जन्ममें भी बराबर होय तो उसीके नामको पंडित अनूक कहते हैं ॥ १३॥

सिंहव्याघ्रगरुत्मद्वृषभानूका भवन्ति ये मनुजाः ॥
अप्रातिहतप्रतापा जितरथास्ते नराधीशाः ॥ १४ ॥

अन्वयः--(ये मनुजाः सिंहव्याघ्रगरुत्मद्वृषभानूका भवंति अप्रतिहतप्रतापाजितरथाः ते नराधीशाः भवन्ति) अस्यार्थः जिन मनुष्योंके सिंह बघेरे गरुड बैल इनकेसे आचरण हो तो नहीं रुका है तेज जिनका और जीते हैं रथी आदि यो जिन्होंने सो ऐसे मनुष्य राजा होते हैं ॥ १४ ॥

वानरमहिषक्रोडच्छगलानूकाः सुखार्त्तसुसहिताः ।
रासभकरभानूका धनहीना दुःखिताः प्रायः ॥१५

अन्वयः--(वानरमहिषक्रोडच्छगलानूकाः सुखार्त्ताः सुसहि भवंति--तथा रासभकरभानूकाः प्रायः धनहीनाः दुःखिताः भवन्ति अस्यार्थः--बंदर भैंसा सूकर बकरा इनकेसे आचरणवाले सुख अ सहित होते हैं--और गधा ऊंट इनकेसे आचरणवाले निश्चय दरि और दुःखी होते हैं ॥ १५ ॥

अथ स्नेहः ।

चित्तप्रसूतिजननं प्रीणनमिति कथ्यते ध्रुवं स्नेहः ॥
तन्मूलमिह ज्ञेयं सुखसौभाग्यादिकं सर्वम् ॥ १६

अन्वयः--(चित्तप्रसूतिजननं प्रीणनं ध्रुवं स्नेहः इति कथ्य इह तन्मूलं सर्वं सुखसौभाग्यादिकं ज्ञेयम्) अस्यार्थः--चित्त उ न्नता जन्म इनकी जो प्रसन्नता है इसीका नाम निश्चय स्नेह है कहते हैं और इस लोकमें इसकी जड़ सकल सुख सौभाग्य आदि जानने योग्य है ॥ १६ ॥

रसनायां दशनेषु त्वचि लोचनयोर्नखेषु केशेषु ॥
पुण्यवतां प्रायेण स्नेहोयं षड्विधो ज्ञेयः ॥ १७ ॥

अन्वयः-(रसनायां दशनेषु त्वचि लोचनयोः नखेषु प्रायेण पुण्यवतां अयं स्नेहः षड्विधः ज्ञेयः)अस्यार्थः-जीभमें-दाँतोंमें-त्वचामें नेत्रोंमें-नखोंमें बालोंमें यह निश्चय करके पुण्यवानोंका स्नेह अर्थात् चिकनाई छः प्रकारसे जानने योग्यहै॥ १७॥

प्रियभाषित्वं रसनास्निग्धत्वं सुभोजनं रदाः स्निग्धाः
अतिसौख्यं त्वक् स्निग्धानियतं भजतेभुजिष्योपि १८

अन्वयः-(प्रियभाषित्वं रसनास्निग्धत्वं रदाः स्निग्धाः सुभोजनं त्वक्स्निग्धाः अतिसौख्यं भुजिष्यः अपि नियतं भजते)अस्यार्थः-प्रियबोलना जीभकी चिकनाई दाँतोंकी चमक सुंदरभोजन त्वचा की साचिक्कनता बहुत सुख ऐसा जो टहलुवा भी होयतौ वह सदा अतिसुखको भजैहै॥ १८॥

जनास्निग्धो नयनास्निग्धः समधिकधनं नखास्निग्धः॥
केशस्निग्धो बहुविधसुगन्धमाल्यं नरो लभते ॥१९॥

अन्वयार्थौ:-(नयनास्निग्धः जनास्निग्धः नखास्निग्धः समाधिकधनं लभते)नेत्रोंमें चिकनाईसे मनुष्योंमें प्रीतिकरै और नखोंमें साचिक्कनता होयतो अधिकधनवाला होताहै और (केशास्निग्धः नरः बहुविधसुगंधमाल्यं लभते) बालोंमें जिसके चिकनाई होय वह पुरुष अनेक प्रकारकी सुगंधमालाको प्राप्तकरै॥ १९॥

मंजिष्ठादीनामिव तुलया यत्तोलनं भवति पुंसाम्॥
उन्मीयतेत्र नियतं तदुच्यते सद्भिरुन्मानम् ॥२०॥

अन्वयः-(मंजिष्ठादीनां इव तुलया यत्तोलनं भवति उन्मीयते अत्र नियतं सद्भिः तत् पुंसां उन्मानं उच्यते)अस्यार्थः--मंजीठ अ-

दिचीजोंका जैसे तराजूमें तोलनाहोताहै तैसेही पुरुषोंकाभी उन्मा
किया जाताहै वह निश्चय बुद्धिमान् पुरुष उसीको उन्मा
कहतेहैं ॥ २० ॥

योद्ध्यर्द्धभारदेहःस विश्वम्भरेश्वरो भवति ॥
भारवपुर्यः पुनरिह जगति स कोटिध्वजो भवति॥२१

अन्वयार्थौः–(यःद्व्यर्द्धभारदेहः स विश्वम्भरेश्वरो भवति) जि
का शरीर ढाईभारके तोलमें होय सो संपूर्ण पृथ्वीका पालनेवा
राजा होय और(पुनः इह भारवपुः यः जगति स कोटिध्वजो भव
जिसपुरुषका शरीर एकभार तोलमें होय वह क्रोड़पति विख्या
होताहै ॥ २१ ॥

भारार्द्धं यस्याङ्गं स सुखाढ्यो भोगभाजनवान् ॥
भारार्द्धार्द्धतनुर्यः स दुर्गतो दुःखितः प्रायः ॥ २२

अन्वयार्थौः–(यस्य अंगं भारार्द्धं स पुरुषः सुखाढ्यो भोगभाज
वान् भवति)जिसका अंग आधाभार तोलमें होय सो पुरुष सुख अ
भोगका पानेवाला होय और (यः पुरुषः भारार्द्धार्द्धतनुः प्रा
स दुर्गतः दुःखितः स्यात्)जिसपुरुषका शरीर चौथाई भार तोल
होय तो निश्चय दरिद्री और दुःख भोगनेवाला होताहै ॥ २२ ॥

काष्ठेषु मणिषु वज्रेष्वाकरधातुषु तथान्यवस्तुषु ॥
स्निग्धं यत्तद्वद्गुरु यद्रूक्षं च लघु तादिदम् ॥ २३ ॥

अन्वयः–(काष्ठेषु मणिषु वज्रेष्वाकरधातुषु तथा अन्यवस्तु
यत् स्निग्धत्वं रूक्षत्वं तद्वत् गुरु च पुनः तत् इदं लघु भवति)
स्यार्थः–काठमें मनिमें हीरामें जितनी खानिकी धातुहैं उनमें
और वस्तुओंमें जो चिकनाई और रूखापन तैसे इनमें भारी
और हलकापन सो वह चिकनापनही जानना चाहिये॥ २३ ॥

अथ प्रमाणम् ॥

आपार्ष्णितलशिरोन्तं यदिह वपुर्मीयते प्रकर्षेण ॥
प्रवदन्ति तत्प्रमाणं केप्यायामं पुनः प्राहुः ॥ २४ ॥

अन्वयः–(आपार्ष्णितलशिरोन्तं यत् इह वपुः प्रकर्षेण मीयते पुनः केपि तत् प्रमाणं आयामं प्राहुः प्रवदंति) अस्यार्थः–पावके तलुवेसे लेकर शिरतक जो यह शरीर तोलकर नापा जाय उसी प्रमाणको कोई आयाम कहतेहैं ॥ २४ ॥

शतमष्टाभिःसमधिकं ज्येष्ठःस्यान्मध्यमोपिषण्णवतिः।
चतुरधिकाशीतिरथांगुलानिदैर्घ्यात्पुमानधमः ॥ २५ ॥

अन्वयार्थौः–(यः पुमान् दैर्घ्यात् अंगुलानि अष्टाभिः अधिकं शतं स ज्येष्ठः स्यात्) जिस पुरुषकी लम्बाई १०८ अंगुलकी होय सो ज्येष्ठ अर्थात् उत्तम होताहै और(षण्णवतिः दैर्घ्यात् अंगुलानि अपि मध्यमः स्यात्) जिसकी लम्बाई ९६ अंगुलकी होय सो मध्यम अर्थात् बीचका होता है और(चतुरधिकाशीतिः दैर्घ्यात् अंगुलानि अधमः स्यात्) जिसकी लम्बाई ८४ अंगुलकी होय सो अधम अर्थात् नीचा होता है ॥ २५ ॥

दैर्घ्या गुल्फोपगता चतुरंगुलिका भवेदथो जंघा ॥
दैर्घ्यं चतुर्विंशतिरथोङ्गुलचतुष्टयं जानु ॥ २६ ॥

अन्वयः–(गुल्फोपगता दैर्घ्या चतुरंगुलिका भवेत् आथो जंघा दैर्घ्यं चतुर्विंशतिर्भवेत् अथो जानु अंगुलचतुष्टयं भवेत्) जिसके टकनेकी लंबाई चार अंगुल होय और पिंडलीकी लंबाई २४ अंगुल होय और जानुकी लंबाई ४ अंगुल होती है ॥ २६ ॥

ऊरू जंघातुल्यौ बस्तिः स्याद्द्वादशांगुलायामा ॥
तदर्द्धमितं नाभियुतमुदरं च कुचसहितम् ॥ २७ ॥

अन्वयः-(ऊरू जंघातुल्यौ द्वादशांगुलायामा बस्तिः स्यात्-नाभियुतं उदरं कुचसहितं तदर्द्धमितं स्यात्) अस्यार्थः-ऊरू और जंघा बराबर होती हैं और १२ अंगुलकी लंबी बस्ति कहते हैं और नाभियुक्त उदर कुचसहितकी लंबाई उससे आधी होती है ॥ २७ ॥

चत्वारि ग्रीवा स्याच्चिबुककुचान्तमंगुलानि मुखम् ।
द्वादश पुंसां भवतीत्यायामोष्टाधिकं शतकम् ॥२८॥

अन्वयः-(चत्वारि ग्रीवा स्यात् चिबुककुचांतं द्वादश अंगुलानि मुखं भवति पुंसां अष्टाधिकशतकं आयामः) अस्यार्थः--गर्दन की लंबाई चार अंगुलकी-और नाक कुचके अंतकी लंबाई १२ अंगुलकी मुखसे होती है-और पुरुषकी लंबाई १०८ अंगुलकी कहते हैं ॥ २८ ॥

एतदपि मतं केषामष्टोत्तरमुत्तमस्य भवति शतम् ।
मध्यस्याष्टविहीनं ततो दशोनं जघन्यस्य ॥ २९ ॥

अन्वयः-(उत्तमस्य पुरुषस्य अष्टोत्तरं शतं अंगुलं शरीरं-मध्यस्य पुरुषस्य अष्टविहीनं-जघन्यस्य ततः दशोनं अंगुलं शरीरं-एतत् केषां अपि मतं भवति) अस्यार्थः-उत्तम पुरुषका १०८ अंगुलका शरीर होता है-और मध्यम पुरुषका १०० अंगुलका और अधम पुरुषका ९८ अंगुलका शरीर होता है यहभी किसीका मत है ॥ २९ ॥

इदं मतमप्यन्यस्योत्तममुत्तमे नरे भवति ॥
मध्ये मध्ये हीने तदपि विहीनं परिज्ञेयम् ॥ ३० ॥

अन्वयः-(उत्तमे नरे उत्तमं आयुः मध्यमे नरे मध्यमं आयुः ततोऽपि हीनं मतमिदमप्यन्यस्य परिज्ञेयम्) अस्यार्थः-उत्तमपुरुष

१०८ वर्ष और ९ दिनकी आयु होतीहै और मध्यमपुरुषकी मध्यम आयु होतीहै—और अधम पुरुषकी अधम आयु होती है यहभी और किसीका मतहै ॥ ३० ॥

उत्तममध्यमहीनाः कालक्षेत्रानुमानतो ये स्युः ॥
निजपर्वांगुलिसंख्या नियतं तेषां विबोद्धव्या ॥ ३१ ॥

अन्वयः–(कालक्षेत्रानुमानतः ये नराः उत्तममध्यमहीनाः स्युः तेषां निजपर्वांगुलिसंख्या नियतं विबोद्धव्या) अस्यार्थः–समय क्षेत्र के अनुमानसे जो मनुष्य उत्तम मध्यम अधम होतेहैं–तिन पुरुषोंकी अपने पोरुओंके अंगुलोंसे गिनती निश्चय जाननी चाहिये ॥ ३१ ॥

रामो दशरथसूनुर्बलिरपि विंशतिशतांगुलौ चैव ॥
पूर्वं मानाधिक्याद्द्वावपि पुनरेतौ दुःखितौ तदिह ॥३२॥

अन्वयः–(दशरथसूनुः रामः तथा बलिः अपि विंशतिशतांगुलौ बभूवतुः पूर्वं मानाधिक्यात् द्वौ अपि पुनः तत् इह एतौ दुःखितौ जातौ)अस्यार्थः–दशरथका पुत्र राम और राजा बलि ये दोनों १२० अंगुलके पहले मानसे अधिक हुए सोई वे इतने दुःखीहुए ॥ ३२ ॥

अथ मानम् ।

जलभृतकटाहमध्यासीनस्य चतुर्दिशं नरस्यबहिः
पतति यदम्बुद्रोणं परिहाणत्वेन तन्मानम् ॥ ३३ ॥

अन्वयः–(जलभृतकटाहमध्यासीनस्य नरस्य चतुर्दिशं बहिः यत् द्रोणं अम्बु पतति परिहाणत्वेन तत् मानम्) अस्यार्थः–जलकी भरी हुई कढाईके बीचमें जिस मनुष्यके बैठनेसे चारों ओर बाहरको ३२ सेर पानी गिरै उस प्रमाण करिके उसे मान कहतेहैं ॥३३॥

मानोपेतशरीराश्चिरायुषः संपदान्विताः पुरुषाः ॥
तद्धीनाधिक्ययुताः पुनर्भजन्ते सदा दुःखम् ॥ ३४

अन्वयार्थौः--(मानोपेतशरीराः पुरुषाः चिरायुषः संपदान्वि भवन्ति) मानके शरीरयुक्त जो ऐसे पुरुष होयँ वे बड़ी आयुव और संपदायुक्त होतेहैं और (पुनः तद्धीनाधिक्ययुताः सदा दु भजन्ते) फिर उससे कमती बढती मानके शरीरवाले होयँ तो स दुःखको भजते है ॥ ३४ ॥

यदि वा तिर्यग्मानं नरस्य पद्मासनोपविष्टस्य ॥
जानुयुगलबाह्यपक्षांतराश्रितंसोत्र परिणाहः ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौः--(पद्मासनोपविष्टस्य नरस्य यदिवा तिर्यग्मानं भव जो पद्मासन अर्थात् कमलके आसनसे बैठे उस पुरुषके मान तिर्यग्मान कहतेहैं और (तथा जानुयुगलबाह्यपक्षांतराश्रितं सः परिणाहः) जो दोनों जानु बाहरको और बगलकोभी रहैं तो मानका नाम परिणाह है ॥ ३५ ॥

आसनतो भालान्तं शरीरमध्ये तथोपविष्टस्य ॥
यन्मानं स्यादूर्ध्वं सचोच्छ्रयः कथ्यते सद्भिः ॥ ३६

अन्वयः--(शरीरमध्ये तथोपविष्टस्य आसनतः भालान्तं यन् स्यात् तत् ऊर्ध्वं सः सद्भिः उच्छ्रयः कथ्यते) अस्यार्थः--शरीर बीचमें, बैठा जो पुरुष उसके आसनसे ललाटके अंततक जो प्रमा सोई कहिये ऊर्ध्वमान उसीके नामको पंडित उच्छ्रय-कहतेहैं॥३

यस्योच्छ्रयः समः स्यात्परिणाहेणोदितेनभाग्यवशा
नियतं जगति प्रायः स पुमान् पुरुषोत्तमो भवति॥३५

अन्वयः--(यस्य उच्छ्रयः भाग्यवशात् उदितेन परिणाहेन स

स्यात्-स पुमान् जगति प्रायः नियतं पुरुषोत्तमो भवति) अस्यार्थः-जिस पुरुषका उच्छ्रयमान भाग्यके वशसे उदित जो परिणाह तिसके बराबर होय सो पुरुष जगत्में बहुधा निश्चय उत्तम पुरुष होताहै ॥ ३७ ॥

अंगोपांगानामिह विस्तारायामपरिधिभेदेन ॥
मानं यथानुरूपं संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि ॥ ३८ ॥

अन्वयः-(इह अंगोपाङ्गानां विस्तारायामपरिधिभेदेन यथानुरूपं मानं संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि) अस्यार्थः-जो इस ग्रंथमें अंग उपांगमें विस्तार आयाम परिधि इन तीन भेदों करके जैसेको तैसा-मान संक्षेपसे कहता हूं ॥ ३८ ॥

आपार्ष्णिज्येष्ठान्तं तलमत्र चतुर्दशांगुलायामम् ॥
विस्तारेण षडंगुलमंगुष्ठो द्व्यंगुलायामः ॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौ:-(आपार्ष्णितलं ज्येष्ठान्तं अत्र चतुर्दशांगुलायामं स्यात्) पाँवके तलुवेकी लम्बाई १४ अंगुलको अंततक होती है और (विस्तारेण षडंगुलं द्व्यंगुलायामः अंगुष्ठः स्यात्) चौड़ाई ६ अंगुलकीहै--और दो अंगुलकी अंगूठे तक होती है ॥ ३९ ॥

पञ्चांगुलपरिणाहः पादान्तं तन्नखांगुलं दैर्घ्यात् ॥
अंगुष्ठसमा ज्येष्ठा मध्या तत्षोडशांशोना ॥ ४० ॥

अन्वयः-(दैर्घ्यात् पादांतं तन्नखाङ्गुलं पंचांगुलपरिणाहः अंगुष्ठसमा ज्येष्ठा मध्या तत् षोडशांशोना स्यात्) अस्यार्थः--लंबाईसे पाँवके अंततक नखोंके अंगुल ५ प्रमाणका होताहै और अंगूठेके प्रमाणसे बराबर बड़ी अंगुली होती है--और बीचकी अंगुलीसे जो प्रमाण कहा उससे १६ वें भाग होतीहै ॥ ४० ॥

अष्टांशोनानामा कनिष्ठिका षष्ठभागपरिहीना ॥
सर्वासामप्यासां नखाः स्वस्वपर्वत्रिभागमिता ॥ ४१ ॥

अन्वयः--(अनामा अष्टांशोना कनिष्ठिका षष्ठभागपरिहीना सर्वासां अप्यासां नखाः स्वस्वपर्वत्रिभागमिताः स्युः) अस्यार्थः अनामिका अंगुली ८ वें भागहीन होय और कनिष्ठिका अंगुली ६ भाग होय और सब इन अंगुलियोंके नख अपने अपने पोरुवों तीन भाग प्रमाण होतेहैं ॥ ४१ ॥

सत्र्यंगुलपरिणाहा प्रथमांगुलविस्तृतांगुली भवति ।
अष्टाष्टभागहीनाः शेषाः क्रमशः परिज्ञेयाः ॥ ४२ ॥

अन्वयः--(प्रथमांगुली सत्र्यंगुलपरिणाहा विस्तृतांगुली भवति शेषाः अंगुलयः क्रमशः अष्टाष्टभागहीनाः परिज्ञेयाः) अस्यार्थः पहली अंगुली तीन अंगुलके प्रमाण करके लंबाई होती है औ जो बाकी अंगुलोंके क्रमसेहैं वे आठ आठवें भाग हीन होती हैं॥४२

जंघातः परिणाहो ध्रुवमष्टाधिकदशांगुलानि स्यात् ।
विंशतिरेकोपगतो जानुर्द्वात्रिंशदूरुरपि ॥ ४३ ॥

अन्वयः--(जंघातः ध्रुवं परिणाहः अष्टाधिकदशांगुलानि स्यात् विंशतिः एकोपगतः जानुः स्यात् अपि द्वात्रिंशत् ऊरुःभवति)अस्यार्थः--जंघाका प्रमाण १८ अंगुलकाहै--और २१ अंगुलका प्रमाण जानुका होताहै--और ३२ अंगुलका प्रमाण ऊरुका होता है॥४३

अष्टादशांगुलमिता विस्तारा जायते कटिः ॥
पुंसां नाभेरन्तः परिधि षट्चत्वारिंशदंगुलतः ॥ ४४ ॥

अन्वयः--(पुंसां कटिः अष्टादशांगुलमिता विस्तारा जायते

तथा नाभेः अंतःपरिधि षट्चत्वारिंशदंगुलतः स्यात् (अस्यार्थः— पुरुषोंकी कमर प्रमाण १८ अंगुलकी लंबी होती है और नाभिसे अंततक प्रमाण ४० अंगुलकी लंबाई होती है ॥ ४४ ॥

पुंसां द्वादश कुचयोरभ्यन्तरमंगुलानि दैर्घ्येण ॥
उरसि च युगोपनिष्ठात्षडंगुलो भवति कक्षांतः॥४५॥

अन्वयः—(पुंसां दैर्घ्येण कुचयोः अभ्यंतरं द्वादश अंगुलानि स्यात्—च पुनः उरसि युगोपनिष्ठात् षडंगुलः कक्षान्तो भवति) अस्यार्थः—पुरुषोंकी कुचकी लंबाई बीचमें १२ अंगुलके प्रमाणकी होती है और हृदयसे दोनों कुचोंकी जगहसे ६ अंगुल प्रमाण कक्षाका अंग होताहै ॥ ४५ ॥

विंशत्युरःस्थलं स्याद्विस्तारादंगुलानि चतुरधिकः ॥
पृष्ठ्या सह परिणाहे षडधिकं पंचाशदंगुलिकम्॥४६॥

अन्वयः—(उरःस्थलं विस्तारात् अंगुलानि चतुरधिकः विंशतिः स्यात्—पृष्ठ्या सह परिणाहे षट् अधिकं पंचाशदंगुलिकं स्यात्) अस्यार्थः—हृदयकी जगहकी लंबाईका प्रमाण २४ अंगुलका होता है और पीठकी लंबाईका प्रमाण ५६ अंगुलका होताहै ॥ ४६ ॥

पर्व प्रथमं बाहोरष्टादशांगुलानि दैर्घ्येण ॥
षोडश पुनर्द्वितीयं सप्ततलं मध्यमांगुलिका ॥ ४७॥

अन्वयः—बाह्वोः प्रथमं पर्व दैर्घ्येण अष्टादशांगुलानि स्यात्—पुनः द्वितीयं षोडश स्यात्--मध्यमांगुलिका सप्ततलं स्यात्) अस्यार्थः--भुजाके पहले खंडकी लंबाई १८ अंगुल प्रमाणकी होती है और दूसरे खंडकी लंबाई १६ अंगुलकी है और बीचकी अंगुलीतक हथेलीकी लंबाई ७ अंगुलकी होती है ॥ ४७ ॥

इति समुदायेन भुजःषट्चत्वारिंशदंगुलानि स्यात् ॥
पञ्चांगुलविस्तारं पाणितलं शस्तरेखान्तम् ॥ ४८ ॥

अन्वयार्थौः--(इति समुदायेन भुजः षट्चत्वारिंशदंगुलानि स्यात्) इस समुदाय करके भुजा ४६ अंगुलके प्रमाणकी होती है और (पाणितलं रेखान्तं पंचांगुलविस्तारं शतं स्यात्) हथेलीकी रेखाके अंततक लम्बाई ५ अंगुलकी श्रेष्ठ होती है ॥ ४८ ॥

मध्यांगुलीविहीना प्रदेशिनी भवति पर्वणार्द्धेन ॥
तत्समनामानामा कनिष्ठिका पर्वपरिहीना ॥ ४९ ॥

अन्वयार्थौः–(अर्द्धेन पर्वणा मध्यांगुलीविहीना प्रदेशिनी भवति) आधे पोरुवाके प्रमाण बीचकी अंगुलीसे हीन तर्जनी होती है और (तत्समनामानामा कनिष्ठिका पर्वपरिहीना भवति) तिसके समान है नाम अनामिका जिसका कनिष्ठिका १ पोरुवा उससे कमती होती है ॥ ४९ ॥

अंगुष्ठस्यायामोंगुलानि चत्वारि जायते पुंसाम् ॥
निजपर्वार्द्धपरिमिता भवन्ति सर्वेपि पाणिनखाः ॥५०॥

अन्वयार्थौः--(पुंसां अंगुष्ठस्य आयामः चत्वारि चांगुलानि जायते) पुरुषके अंगुठेकी लंबाई ४ अंगुलकी होतीहै और (सर्वेपि पाणिनखाः निजपर्वार्द्धपरिमिताः भवन्ति) सब हाथके नख अपने पोरुवेके आधे प्रमाणके होते हैं ॥ ५० ॥

ग्रीवायाः परिणाहोंगुलानि चतुरधिकविंशतिः शस्तः ॥
नासापुटद्वयान्तर्विस्तारो द्व्यंगुलं मानम् ॥ ५१ ॥

अन्वयार्थौः–(ग्रीवायाः परिणाहः अंगुलानि चतुरधिकाविंशतिः शस्तः स्यात्) गर्दनकी लंबाई चारों ओरसे २४ अंगुलकी श्रेष्ठ

होती है और (नासापुटद्वयान्तः द्व्यंगुलं मानं विस्तारो भवति) नाकके नथने दोनों अंततक२अंगुल प्रमाणके लंबे होते हैं ॥ ५१ ॥

आचिबुकपश्चिमकचप्रान्तं द्वात्रिंशदंगुलो मूर्द्धा ॥
कर्णद्वयस्य मध्ये पुनरष्टाधिकदशांगुलिकः ॥ ५२ ॥

अस्यार्थः—ठोडीसे लेकर पिछले बालोंतक ३२ अंगुल मूर्द्धा है और दोनों कानोंके बीचमें फिर अठारह अंगुल प्रमाणसे मूर्द्धा है ॥ ५२ ॥

पुंसामंगे मानं स्पष्टं शिष्टैः पुरा विनिर्दिष्टम् ॥
इह पुनरुपयोगाद्वै दिङ्मात्रमिदं मयाप्युक्तम् ॥ ५३ ॥

अन्वयः—(शिष्टैः पुंसां अंगे मानं पुरा स्पष्टं विनिर्दिष्टं—पुनः इह उपयोगात् वै दिङ्मात्रं इदं मया उक्तं) अस्यार्थः—श्रेष्ठ पुरुषोंके अंगः-मान तो सब स्पष्ट पहिलेही कहदिया और फेर इस स्थानमें कार्य-वशसे निश्चय करके दिशाके दिखाने मात्र यह मैंने वही कहा है ॥ ५३ ॥

विंशतिवर्षा नारी स पंचविंशतिसमो नरो योग्यः ॥
जीवति तुर्यांशो वा मानोन्मानप्रमाणानाम् ॥ ५४ ॥

अन्वयः—(विंशतिवर्षा नारी सपंचविंशतिसमः नरः योग्यः स्यात्—मानोन्मानप्रमाणानां तुर्यांशः वा जीवति) अस्यार्थः—बीस वर्षकी स्त्रीको पचीस वर्षके समान पुरुष योग्य होताहै—और मान उन्मान प्रमाण इनका चौथा भाग तौभी जीवेगा ॥ ५४ ॥

अथ क्षेत्रकथनम् ।

वर्षाणां शतमायुस्तस्यैवं दशदशाविभागेन ॥
क्षेत्राणि दश नराणां तदाश्रितं लक्षणं ज्ञेयम् ॥ ५५ ॥

अन्वयः–(वर्षाणां शतम् आयुःप्रमाणं तस्य एवं विभागे दश दशाः नराणां दशक्षेत्राणि तदाश्रितं लक्षणं ज्ञेयम्) अस्यार्थः–सौ वर्षकी आयुका प्रमाण है तिसमें दश भाग करके मनुष्योंके दश दशा जानना तिसके दशक्षेत्र हैं तिसीके आसरेसे लक्षण जानने चाहियें ॥ ९९ ॥

आद्यं पादौ सगुल्फौ सजानु जंघाद्वयं द्वितीयं स्यात्॥
ऊरू गुह्यं मुष्कद्वितयं क्षेत्रं तृतीयमिदम् ॥ ९६ ॥

अन्वयः–(सगुल्फौ पादौ आद्यं सजानु जंघाद्वयं द्वितीयं स्यात्–ऊरू गुह्यं मुष्कद्वितयं इदं तृतीयं क्षेत्रम्) अस्यार्थः–टकने सहित पाँव पहला क्षेत्र है–और जानुसहित दोनों जंघा दूसरा क्षेत्र है–और ऊरू गुह्य मुष्क यह तीसरा क्षेत्र है ॥ ९६ ॥

नाभिः कटिश्चतुर्थं पंचममपि जायते पुनर्जठरम् ॥
षष्ठं स्तनान्वितमुरः सप्तममंसौ सजत्रुयुगौ ॥ ९७ ॥

अन्वयः–(नाभिः कटिश्चतुर्थं क्षेत्रं–पुनः जठरं क्षेत्रम् अपि पंचमं जायते–स्तनान्वितं उरः षष्ठं क्षेत्रम्–सजत्रुयुगौ अंसौ सप्तमं क्षेत्रम्) अस्यार्थः–नाभिसे कटिका चौथा क्षेत्र है–फिर उदर पाँचवाँ क्षेत्र है–कुचोंसे छाती तक छटा क्षेत्र है–दोनों हँसली सहित कंधे सातवाँ क्षेत्र है ॥ ९७ ॥

ओष्ठौ ग्रीवाष्टममिह नवमं स्याद्भ्रूयुगं नयनयुगलम् ॥
सललाटमुत्तमांगं दशमं लक्षणविदः प्राहुः ॥ ९८ ॥

अन्वयार्थौ–(ओष्ठौ ग्रीवा अष्टमं क्षेत्रं) होठ और गर्दनका आठवाँ क्षेत्र है (भ्रूयुगं नयनयुगलम् इह नवमं क्षेत्रं स्यात्) दोनों भौंह और दोनों नेत्र इनका नवमां क्षेत्र है और (लक्षणविदः सललाटं उत्तमाङ्ग

दशमं क्षेत्रं प्राहुः) लक्षणके जाननेवाले ललाट सहित शिरको दशवां क्षेत्र कहते हैं ॥ ५८ ॥

क्षेत्रवशाज्जायन्ते मनुजानां जगति दश दशाः क्रमशः ॥
क्षेत्रेष्वशुभेष्वशुभा दशा शुभेषु च शुभाः प्रायः ॥ ५९ ॥

अन्वयार्थौः-(मनुजानां क्षेत्रवशात् जगति दश दशाः क्रमशः जायन्ते) मनुष्योंके क्षेत्रके वशसे जगत्में १० दशा क्रमसे होती है और (क्षेत्रेषु अशुभेषु अशुभाः दशाः भवंति) जोक्षेत्र अशुभहै वह दशाभी अशुभ होतीहै और(क्षेत्रेषु शुभेषु च पुनः शुभाः प्रायः दशा भवंति) जो क्षेत्र शुभहै वह बहुधा दशाभी शुभ होतीहै ॥ ५९ ॥

बाल्यं वृद्धिरथ बलं धीत्वक्शुक्रविक्रमाः पुंसाम् ॥
दशकेन निवर्त्तन्ते चेतः कर्मेन्द्रियाणि तथा ॥ ६० ॥

अन्वयः-(बाल्यं वृद्धिः अथ बलं धीत्वक् शुक्रविक्रमाः तथा चेतः कर्मेन्द्रियाणि पुंसां दशकेन निवर्त्तन्ते) अस्यार्थः-बाल्यावस्था १ और वृद्धि बढवारी २ और बल ३ बुद्धि ४ त्वचा ५ वीर्य ६ पराक्रम ७ चित्त ८ कर्म ९ इंद्रिय १० पुरुषोंकी १० दशाही करके वरते हैं ॥ ६० ॥

अथ प्रकृतिकथनम्।

क्षितिजलशिखिपवनांबरसुरनररक्षःपिशाचतिर्यग्भिः ॥
तुल्या प्रकृतिः पुंसां क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ॥ ६१ ॥

अन्वयः-(पुंसां क्षितिजलशिखिपवनानां सुरनररक्षःपिशाचतिर्यग्भिः तुल्या प्रकृतिः क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः-(अस्यार्थः-पुरुषोंके पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ देवता ६

मनुष्य ७ राक्षस ८ प्रेत ९ चतुष्पद १० इनकेसे स्वभाव क्रमकरके जो होय तिनके लक्षण हम कहते हैं ॥ ६१ ॥

सुरभिःप्रसूनगंधः सुखवान्भोगी स्थिरः क्षितिप्रकृतिः॥
प्रियवाग्घनाम्बुपायी नीरप्रकृतिर्नरो रसभुक् ॥ ६२ ॥

अन्वयार्थौः–(सुरभिः प्रसूनगंधःसुखवान् भोगी स्थिरःक्षितिप्रकृतिः भवति) चंदन और फूलोंकीसी गंधवाला--सुखवाला--भोगनेवाला--स्थिरतावाला--जिसमें ये लक्षण पाये जाँय जिसकी पृथ्वीकीसीप्रकृति होतीहै और (प्रियवाक् घनाम्बुपायी रसभुक् नीरप्रकृतिः नरो भवति) मीठी बोली--बहुत जलके पीनेवाला--रसोंके खानेवाला ऐसे मनुष्यकी जलकीसी प्रकृति होतीहै ॥ ६२ ॥

चपलःखण्डस्तीक्ष्णः क्षुद्वान् घनभोजनः शिखिप्रकृतिः
चटुलःक्षामः क्षिप्रःसकोपनः स्यान्मरुत्प्रकृतिः ॥ ६३ ॥

अन्वयार्थौः–(चपलः खंडः तीक्ष्णः क्षुद्वान् घनभोजनः शिखिप्रकृतिर्भवति) चंचल--मीठा तेज--बहुत भूखा--बहुत भोजन करनेवाला इनकी अग्निकीसी प्रकृति होतीहै और (चटुलः क्षामः क्षिप्रः सकोपनः मरुत्प्रकृतिर्भवति) चलायमानदुर्बल--शीघ्र क्रोधरहित ये पवन प्रकृतिके होतेहैं ॥ ६३ ॥

विद्वान्सुस्वरकुशलो विवृताक्षः शिक्षितोंबरप्रकृतिः ॥
त्यागरतिः सस्नेहः सुरस्वभावेन पृथुकोपः ॥ ६४ ॥

अन्वयार्थौः–(विद्वान् सुस्वरः कुशलः विवृताक्षः शिक्षितः अंबरप्रकृतिर्भवति) पंडित होय--अच्छी वाणी--कुशल--खुली आँखे--पढाहुवा जिसने शिक्षा पाई--ये आकाश प्रकृतिवाले होतेहैं और(सुरस्वभावेन त्यागरतिः सस्नेहः पृथुकोपः भवति (देवताकोसी प्रकृ-

तिवाला-दानमें प्रीत-प्रीतिसहित-बहुत क्रोध करनेवाला होता है ॥ ६४ ॥

भूषणगीतप्रवणो नरः स्वभावेन संविभागी स्यात् ॥
दुर्जनचेष्टः पापो रक्षः प्रकृतिः खरक्रोधः ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौः-(नरः स्वभावेन भूषणगीतप्रवणः संविभागी स्यात्) मनुष्यकीसी प्रकृतिवाला-भूषण पहरनेवाला-गानेमें कुशल-विभाग करनेवाला होताहै और (रक्षः प्रकृतिः नरः दुर्जनचेष्टः पापः खरक्रोधः स्यात्) राक्षस प्रकृतिवाला मनुष्य-खोटी चेष्टा-वाला-पाप करनेवाला-बडाक्रोध करनेवाला होताहै ॥ ६५ ॥

भवति पिशाचप्रकृतिः स्थूलो मलिनश्चलप्रलापी च ॥
क्षुद्रानुगतस्तिर्यक्प्रकृतिर्बहुभुग्भवेन्मनुजः ॥ ६६ ॥

अन्वयार्थौः-(पिशाचप्रकृतिः स्थूलः मलिनः चलः च पुनः प्रलापी भवति) प्रेतकीसी प्रकृतिवाला-मोटा-मलीन-चलायमान-और बकवादी होताहै और (तिर्यक्प्रकृतिः क्षुद्रानुगतः बहुभुक् मनुजः भवेत्) चौपायोंकीसी प्रकृतिवाला-नीचोंकी संगति वाला-बहुत खानेवाला--पुरुष होताहै ॥ ६६ ॥

इति दशविधा नराणां निर्दिष्टाः प्रकृतयो यथा दृष्टाः ॥
किञ्चिन्मिश्रकलक्षणमधुनावक्ष्याम्यतो लोके ॥ ६७ ॥

अन्वयार्थौः--(नराणां इति दशविधा प्रकृतयः यथा दृष्टा निर्दिष्टाः) मनुष्योंकी यह १० प्रकारकीप्रकृति जैसी देखनेमें आई तैसी कही और (अतः परं लोके किंचित् मिश्रकलक्षणं अधुना वक्ष्यामि) इससे आगे लोकमें कुछ मिश्रक लक्षण अब कहूंगा ॥ ६७ ॥

अथ मिश्रकलक्षणम्।

विभवसमृद्धिपरत्वं व्यंजनलाभः प्रभुत्वमव्याजम्॥
वयसि भवन्ति प्रथमे प्रायः स्वल्पायुषां पुंसाम्॥६८॥

अन्वयार्थौः-(स्वल्पायुषां पुंसां प्रथमेवयसि प्रायः एतानि भवन्ति) थोड़ी आयुवाले पुरुषोंकी पहिली अवस्थामें बहुधा इतने कार्य होतेहैं (विभवसमृद्धिपरत्वं व्यंजनलाभः अव्याजं प्रभुत्वम्) ऐश्वर्यता--ठाट बाटमें तत्पर--अनेक प्रकारके भोजनोंका लाभ--छल रहित--मालिकपन होताहै॥६८॥

अंगानि धीपटुत्वं शक्तिर्दशनाः शनैर्विशीर्यंते॥
निखिलेन्द्रियाणि येषां चिरायुषस्ते नरा ज्ञेयाः॥६९॥

अन्वयः--(येषां अंगानि सुंदराणि धीपटुत्वं शक्तिः दशनाः शनैर्विशीर्यन्ते निखिलेन्द्रियाणि पूर्णानि ते मनुजाः चिरायुषो ज्ञेयाः) अस्यार्थः--जिनके अंग तौ सुंदर और बुद्धिकी चतुरता-पराक्रम--दाँत धीरें धीरें उखड जायँ संपूर्ण इंद्री पूरी होंय वे मनुष्य बडी आयुवाले होतेहैं॥६९॥

शुभलक्षणमंगेभ्यः सौन्दर्येणाधिकं मुखं यस्य॥
स्वज्ञातिप्राधान्यं प्राप्नोति स धान्यधनवत्त्वम्॥७०॥

अन्वयः-(यस्य अंगेभ्यः शुभलक्षणं सौंदर्येण अधिकं मुखं स्वज्ञातिप्राधान्यं सः पुरुषः धनधान्यवत्त्वं प्राप्नोति) अस्यार्थः- जिसके अंग शुभलक्षणयुक्त होंय-और सुंदरताके योग्य अधिक मुख होय अपनी जातिमें प्रधान होय सो पुरुष धनधान्यवान् होता है उसीको धनधान्य मिलता है॥७०॥

अतिकृष्णेष्वतिगौरेष्वतिपीनेष्वतिकृशेषु मनुजेषु॥
अतिदीर्घेष्वतिलघुषु प्रायेण न विद्यते सत्यम्॥७१॥

अन्वयः--(अतिकृष्णेषु अतिगौरेषु अतिपीनेषु अतिकृशेषु अतिदीर्घेषु अतिलघुषु--मनुजेषु प्रायेण सत्यं न विद्यते) अस्यार्थः- बहुत काले बहुत गोरे बहुत मोटे बहुत दुबले बहुत लंबे बहुत छोटे ऐसे मनुष्य बहुधा सच्चे नहीं होते हैं ॥ ७१ ॥

चपलः स्थूलो रूक्षः पुरुषो घनमांसलः शिरोविचितः ॥
स पुमान्वैतरणाख्यस्समुद्रमपि शोषयत्यखिलम् ७२

अन्वयः--(यः पुरुषः चपलः स्थूलः रूक्षः घनमांसलः शिरोविचितः स पुमान् वैतरणाख्यः अखिलं समुद्रमपि शोषयति)अस्यार्थः- जो पुरुष चंचल, मोटा, रूखा, बहुत मांसवाला, दृढशिरका ऐसा मनुष्य वैतरण है नाम जिसका सब समुद्रको सोखनेवाला होता है ॥ ७२ ॥

यस्य शरीरं पुष्टिं गृह्णात्यनेन येन केनापि ॥
सनरो दुंदुबकाख्यः कलयति कल्याणवैराग्यम् ॥७३॥

अन्वयः--(यस्य शरीरं पुष्टिं अनेन येन केनापि गृह्णाति स नरः दुंदुबकाख्यः कल्याणवैराग्यं कलयति) अस्यार्थः--जिसका शरीर मोटा और यह जिसको पकड़े सो पुरुष दुंदुबक नाम है कल्याण और वैराग्यको करता है ॥ ७३ ॥

सत्त्वं रजस्तमश्चेत्यमी नराणां त्रयो भवंति गुणाः ।
क्वचिदेकः कुत्र द्वौ त्रयः समं क्वापि दृश्यन्ते ॥ ७४ ॥

अन्वयार्थौ:--(सत्त्वं रजः तमः इति अमी नराणां त्रयो गुणाः भवंति) सत्त्वगुण--रजोगुण--तमोगुण--ये पुरुषोंके तीन गुण होते हैं और (क्वचित् एकः कुत्र द्वौ त्रयः समं क्वापि दृश्यन्ते) कहीं एक कहीं दो और कहीं तीनों बराबर दीख पडते हैं ॥ ७४ ॥

यः सत्त्वगुणोपेतःस दयालुः सत्यवाक् स्थिरः सरलः ॥
देवगुरुभक्तियुक्तो व्यसनेभ्युदये च कृतधैर्य्यः ॥ ७५ ॥

अन्वयः--(यः सत्त्वगुणोपेतः स दयालुः सत्यवाक् स्थिरः सरलः देवगुरुभक्तियुक्तः व्यसने अभ्युदये च कृतधैर्यो भवति) अस्यार्थः- जो सतोगुणवाला पुरुष है सो दयावान् और सत्य बोलनेवाला स्थिरता युक्त, सीधा, देवता और गुरुकी भक्तिवाला, दुःख और आनंदमें धीरज धरनेवाला होता है ॥ ७५ ॥

काव्यकलासु प्रवणः कुलनारीकृतरतिस्सदा शूरः ॥
प्रायेणैवं सततं रजोधिकः कथ्यते स पुमान् ॥ ७६ ॥

अन्वयः--(काव्यकलासु प्रवणः कुलनारीकृतरतिः सदा शूरः रजोधिकः स पुमान् सततं कथ्यते प्रायेण एवं भवति) अस्यार्थः- काव्य बनानेमें चतुर और कुलकी स्त्रीसे रति और प्रीति करनेवाला सदा शूरवीर--रजोगुण जिसमें अधिक--सो पुरुष निरन्तर बहुधा ऐसा होता है ॥ ७६ ॥

मूर्खस्तमोन्वितः स्यान्निद्रां कुर्वंश्च सालसः क्रोधी ॥
एतैर्मिश्रैर्बहुशो भेदाश्चान्यैर्नृणां मिश्राः ॥ ७७ ॥

अन्वयार्थौः--(तमोन्वितः पुरुषः मूर्खः निद्रां कुर्वन् सालसः क्रोधी स्यात्) तमोगुणयुक्त पुरुष मूर्ख और निद्राकरनेवाला और आलसी और क्रोधी होताहै और (नृणां एतैर्मिश्रैः बहुशः अन्येपि मिश्राः भेदाः भवन्ति) पुरुषोंके यही मिले हुए बहुधा और अनेक भेद होते हैं ॥ ७७ ॥

प्रायो रजोगुणः स्यात्प्राप्तोत्कर्षस्तमोगुणः कोपः ॥
पुंसां विशेषः पुराख्यास्यामो ह्यग्रतः सत्त्वम् ॥ ७८ ॥

अन्वयार्थौ:-(तमोगुणः प्राप्तोत्कर्षः रजोगुणः प्रायः कोपः स्यात्) तमोगुणकोहै अधिकता जिसमें ऐसा रजोगुण बहुधा कोपको प्राप्त होताहै और (पुंसां अग्रतः विशेषः सत्त्वं पुरा ख्यास्यामः) पुरुषोंके आगे अधिक सतोगुण पहिले कहेंगे ॥ ७८ ॥

देहस्थितेषु सततमशुभेषु शुभेषु लक्षणेषु नृणाम् ॥
ज्ञात्वानवरतभावं तत्फलमपि निर्दिशेत्प्राज्ञः ॥ ७९ ॥

अन्वयः-(नृणां देहस्थितेषु अशुभेषु वा शुभेषु लक्षणेषु सततं अनवरतभावं ज्ञात्वा प्राज्ञः तत्फलं अपि निर्दिशेत्) अस्यार्थः-मनुष्योंके देहमें स्थित जो है अशुभ वा शुभ लक्षण इनमेंसे निरंतर भाव जान करके पंडित उसका फल कहते हैं ॥ ७९ ॥

बुद्धियुतो यो दीर्घो ह्रस्वो यो जायते नरो मूर्खः ॥
पिङ्गः शुचिः सुशीलः कालाक्षो यस्तदाश्चर्यम् ॥ ८० ॥

अन्वयः-(यः दीर्घः बुद्धियुतो भवति) जो लंबाहै सो बुद्धियुक्त होताहै और (यः ह्रस्वः नरः स मूर्खो जायते) जो छोटा पुरुषहै सो मूर्ख होता है और (यः पिंगः कालाक्षः शुचिः सुशीलः तत् आश्चर्यं) जोकुछ पिलाई वा काली आँखेंवाला पवित्र और शीलवान् होता है यह बडे आश्चर्यकी बातहै ॥ ८० ॥

यद्दन्तुरोपि मूर्खो रोमयुते जायते यदल्पायुः ॥
यन्निष्ठुरः स दीर्घस्तदद्भुतं जृम्भते भुवने ॥ ८१ ॥

अन्वयः-(यत् दन्तुरः अपि मूर्खः) जिसके बडे दांत हैं वह मूर्ख होय और (रोमयुतः यत् अल्पायुः जायते) रोम युक्तहै उसकी थोडी आयु होय और (यत् दीर्घः सः निष्ठुरः) जो लंबाहै सो निर्दय होय और (भुवने तत् अद्भुतं जृंभते) जगत्में यह बडे अच-

रजकी बातहै—अर्थात् बडे दांतवाला तौ विद्यावान् होना चाहिये और रोमवाला बडी आयुवाला होना चाहिये और जो लंबाहै वह दयावान् होना चाहिये और इससे विपरीत होय तौ आश्चर्य करना चाहिये ॥ ८१ ॥

नच दुर्भगः सुनेत्रः सुग्रीवो भारवाहको न स्यात् ॥
रूक्षोनास्ति सुभोगी परुषत्वङ् नास्ति सुखसहितः ८२

अन्वयः—(सुनेत्रः दुर्भगो न स्यात्) सुंदर नेत्रवाला कुरूप नहीं होता और (सुग्रीवः भारवाहकः न स्यात्) सुंदर गर्दनवाला बोझ ढोनेवाला नहीं होता और (रूक्षः सुभोगी नास्ति) जो रूखा है सो सुंदर भोगवाला नहीं होता और (परुषत्वक् सुखसहितो नास्ति) कठोर त्वचावाला सुख पानेवाला नहीं होता ॥ ८२ ॥

पृथुपाणिः पृथुपादः पृथुकर्णः पृथुशिराः पृथुस्कंधः ॥
पृथुवक्षः पृथुजठरः पृथुभालः पूजितः पुरुषः ॥ ८३ ॥

अस्यार्थः—(बडे हाथ—बडे पांव—बडे कान—बडा मस्तक—बडे कंधे—बडी छाती—बड़ा पेट—बड़े ललाट वाले ऐसे पुरुष पूजित अर्थात् पूजने योग्य होते हैं ॥ ८३ ॥

रक्ताक्षं भजति श्रीः प्रलम्बबाहुं भजत्यधीशत्वम् ॥
पीनाङ्गं भजति कृषिर्मांसोपचितं च भजति सौभाग्यम्

अन्वयः—(रक्ताक्षं श्रीः भजति) लाल नेत्रवाला धनवान् होताहै और (अधीशत्वं प्रलंबबाहुं भजति) मालिकपना लंबी बाहुवालेको भजताहै और (कृषिः पीनाङ्गं भजति) खेती मोटे शरीरवालेको भजतीहै और (सौभाग्यं मांसोपचितं भजति) अच्छा भाग्य मांसल पुरुषको भजैहै अर्थात् होताहै ॥ ८४ ॥

सुश्लिष्टसंधिबन्धो यः कश्चिन्मांसलो मृदुः स्निग्धः ॥
अतिसुंदरः प्रकृत्या स सुखाढ्यो जायते प्रायः ॥८५॥

अन्वयः—(यः कश्चित् सुश्लिष्टसंधिबंधाः मांसलः मृदुः स्निग्धः प्रकृत्या अतिसुंदरः प्रायः स सुखाढ्यो जायते) अस्यार्थः—जिसकिसी पुरुषके अच्छे मिले हुए जोड़ मांससे भरे कोमल चिकने बहुत अच्छे स्वभाववालेके बहुधा सुखी होतेहैं ॥ ८५ ॥

स्निग्धतिलो मशकं वा चिह्नं वा भवति किमपि चान्यत्।
पुंसां दक्षिणभागे तच्छुभमित्याह भोजनृपः ॥ ८६ ॥

अन्वयार्थौ:—(स्निग्धः तिलः मशकं वा किमपि अन्यत् चिह्नं पुंसां दक्षिणभागे भवति) अच्छा तिल मस्सा वा कोई और चिह्न पुरुषके दाहिने भागमें होय तौ (तत् शुभं इति भोजनृपः आह) वह शुभ है यह राजा भोजने कहा है ॥ ८६ ॥

नखशंखकेशरोमजिह्वालोचनास्यरदनेषु ॥
नास्ति स्नेहो येषामकारणं सत्त्वमिह तेषाम् ॥८७॥

अन्वयार्थौ:—(येषां नखशंखकेशरोमजिह्वालोचनास्यरदनेषु स्नेहः नास्ति) जिसके नख शंख अर्थात् कनपटी बाल रोंगटे-जीभ-नेत्र-मुख-दाँत-इनमें सचिक्कणता नहीं होय तौ (इह तेषां अकारणं सत्त्वं) इस लोकमें तिनके विना कारणको पराक्रम होताहै ॥ ८७ ॥

इह भवति सप्तरक्तः षडुन्नतः पंचसूक्ष्मदीर्घौ यः ॥
त्रिविपुललघुगंभीरो द्वात्रिंशल्लक्षणः स पुमान् ॥ ८८ ॥

अन्वयः—(इह सप्तरक्तः षट् उन्नतः पंचसूक्ष्मः यः दीर्घः त्रिवि-

पुललघुगंभीरः स पुमान् द्वात्रिंशल्लक्षणो भवति) अस्यार्थः–इसलोकमें ७ तौ लाल–६ ऊंचे–५ पतले–५ लंबे–३ चौडे–३ छोटे ३–गहरे सो पुरुष ३२ लक्षणोंका होताहै ॥ ८८ ॥

नखचरणपाणिरसनादशनच्छदतालुलोचनांतेषु ॥
स्याद्यो रक्तःसप्तसु सप्तांगां स लभते लक्ष्मीम् ॥ ८९ ॥

अन्वयः–(यः नखचरणपाणिरसनादशनच्छदतालुलोचनान्तेषु सप्तसु रक्तः स्यात्–स च सप्ताङ्गां लक्ष्मीं लभते) अस्यार्थः–जो नख–चरण–हाथ–जीभ–दाँतोंके–होठ–तालु–नेत्रोंके अंत इन सात अंगों में ललाई होय तौ लक्ष्मीको प्राप्त होता है ॥ ८९ ॥

षट्कं कक्षा वक्षःकृकाटिकानासिकानखास्यमिति ॥
यस्येदमुन्नतं स्यादुन्नतयस्तस्य जायन्ते ॥ ९० ॥

अन्वयः–(यस्य इदं षट्कं कक्षा वक्षः कृकाटिका नासिका नखः आस्यम् इति उन्नतं भवति तस्य उन्नतयः जायन्ते) अस्यार्थः–जिस पुरुषकी बगल–छाती–गर्दनकी घेंटी–नाक–नख–मुख ये ६ अंग ऊंचे होंय तिसका उच्चपद अर्थात् बढवारीको प्राप्त होता है ॥९०॥

दंतत्वक्केशांगुलिपर्वनखं चेति पंच सूक्ष्माणि ॥
धनलक्षणैरुपेता भवन्ति ते प्रायशः पुरुषाः॥ ९१ ॥

अन्वयः–(येषां पुरुषाणां दंतत्वक्केशांगुलिपर्वनखाः एतानि पंचसूक्ष्माणि ते पुरुषाःप्रायशः धनलक्षणैः उपेता भवन्ति)अस्यार्थः–जिन पुरुषोंके दाँत–त्वचा–बाल अंगुलियोंके पोरुवे और नख ये पाँच पतले होंय तौ वे पुरुष बहुधा धनलक्षणयुक्त होते हैं अर्थात् धनवान् होते हैं॥ ९१ ॥

नयनकुचौ रसनाहनुभुजमिति यस्य पंचकं दीर्घम् ॥
दीर्घायुर्वित्तकरः पराक्रमी जायते स नरः ॥ ९२ ॥

अन्वयः-(यस्य इति पंचकं दीर्घं नयने कुचौ रसना हनु भुजं स नरः पराक्रमी वित्तकरः दीर्घायुर्जायते) अस्यार्थः-जिसके ये पाँच अंग बडे होंय नेत्र चूँची जीभ कपोलोंके हाड और भुजा सो मनुष्य बलवान् धनवान् बड़ी आयुवाला होता है ॥ ९२ ॥

भालमुरोवदनमिति त्रितयं भूमीश्वरस्य विपुलं स्यात्॥
ग्रीवाजंघामेहनमिति त्रिकं लघु महीशस्य ॥ ९३ ॥

अन्वयार्थौ:-(भूमीश्वरस्य एतत्रितयं भालं उरःवदनं इति विपुलं स्यात्) राजाके ये तीन ललाट १ छाती २ मुख ३ चौडे होते हैं और (महीशस्य एतत्त्रयं ग्रीवा जंघा मेहनं इति लघु स्यात्) राजाको ये तीन गर्दन जाँघ इंद्री आदि छोटी होती हैं ॥ ९३ ॥

यस्य स्वरोथ नाभिः सत्त्वमिदं च त्रयं गभीरं स्यात्॥
सप्तांबुधिकांच्याहि भूमेः स करग्रहं कुरुते ॥ ९४ ॥

अन्वयार्थौ:-(यस्य स्वरः नाभिः सत्त्वं इदं त्रयं गभीरं स्यात्) जिसका शब्द टूंडी पराक्रम ये तीन गहरे होंय तौ (स सप्ताम्बुधिकांच्याभूमेः करग्रहं कुरुते) सो ७ समुद्र हैं कांची क्षुद्रघंटिका जिसके अर्थात् कटिबांधिनी पृथ्वीको ब्याहता है अर्थात् पृथ्वीका मालिक होता है ॥ ९४ ॥

स्मरशास्त्रविनिर्दिष्टाः शशो वृषो हय इति त्रयो भेदाः ॥
जायन्ते मनुजानां क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः ॥ ९५ ॥

अन्वयार्थौ:-(स्मरशास्त्रविनिर्दिष्टाः मनुजानां शशः वृषः हयः इति त्रयो भेदाः जायन्ते) कामशास्त्रके कहे हुए मनुष्योंके खर-

गोश बैल घोडा ये तीन भेद होते हैं और (क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः) उनके क्रमसे लक्षण हम कहते हैं ॥ ९५ ॥

लिङ्गंषडंगुलानि स्यादष्टौ वा शशः स पुमान् ॥
नवदश चैकादश वा तदपि पुनर्यस्य स वृषाख्यः॥९६॥

अन्वयार्थौः–(यस्य लिंगं षट् वा अष्टौ अंगुलानि सस्फुटं शशः पुमान् स्यात्) जिसका लिंग ६ वा ८ अंगुलका प्रकट होय वह खरगोशकी संज्ञाका पुरुष होताहैऔर(यस्य नव दश वा एकादश अंगुलानि तदपि लिंगं स पुरुषः वृषाख्यः स्यात्) जिसका ९--१०--११ अंगुलका लिंग होय सो पुरुष बैलकीसी संज्ञाका होताहै ॥ ९६ ॥

द्वादश वा लिंगं स्यात्त्रयोदशादीनि चांगुलानि भवेत् ॥
जातोद्भवस्य मानं हयाख्यया निगदितः सोपि ॥९७॥

अन्वयार्थौः–(यस्य जातोद्भवस्य लिंगं द्वादश वा त्रयोदशादीनि अंगुलानि मानं स्यात्) जिस पुरुषका आदि समयसेही लेकरके लिंग १२–१३ अंगुलके प्रमाणका होय सो (सः अपि हयाख्यया निगदितः कथितः) उसको घोड़ेकी संज्ञाका कहा है ॥ ९७ ॥

रतिषु शशवृषहयानां सह भृत्यादिभिरकृत्रिमा प्रीतिः।
मेहनं वराङ्गनार्योः परस्परेण प्रमाणैक्यात् ॥ ९८ ॥

अन्वयार्थौः–(शशवृषहयानां रतिषु मेहनं वराङ्गनार्योः प्रमाणैक्यात्) खरगोश बैल घोड़ा पुरुषोंकी रति में इंद्री और योनिके एक समान प्रमाण होनेसे (भृत्यादिभिः सह परस्परेण कृत्रिमा प्रीतिर्भवति) सेवक आदिके साथ करी हुई प्रीति जैसेको तैसी रति अच्छी होती है ॥ ९८ ॥

अन्नं क्षुधि पानं तृषि पथि श्रमे वाहनं भवेद्रक्षा ॥
इति भवति यस्य समये धन्यं प्रवदंति तं संतः ॥९९॥

अन्वयार्थौ:-(यस्य समये क्षुधि अन्नं तृषि पानं पथि श्रमे वाहनं भवेत्) जिसको समयके विषे भूखमें तौ अन्न और प्यासमें जल और थकावटमें सवारी होय तौ (इति रक्षा भवेत्) ये बडी रक्षा होतीहै और (संतः तं पुरुषं धन्यं प्रवदंति) पंडित उस पुरुषको धन्य कहते हैं ॥ ९९ ॥

इति श्रीमहत्तम श्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकाख्य-परनाम्नि नरलक्षणशास्त्रे शरीराधिकारो द्वितीयः ॥ २ ॥

अंगप्रत्यंगयुतं सकलं शारीरमिदमिति प्रोक्तम् ॥
आवर्तप्रभृतीनामनुक्रमाल्लक्षणं वयं ब्रूमः ॥ १ ॥

अन्वयार्थौ:-(अंग प्रत्यंगयुतं सकलम् इदं शारीरम् इति प्रोक्तं) छोटे सब अंगप्रत्यंग सहित यह यही शारीरलक्षण कहाहै सो (अनुक्रमात् आवर्त्तप्रभृतीनां लक्षणं वयं ब्रूमः) अब क्रमसे चक्र वा भौंरी आदिके लक्षण हम कहते हैं ॥ १ ॥

रोमत्वग्वालभवः स्यादावर्तः शुभस्त्रेधा ॥
शस्तोदक्षिणवलितः स्निग्धो व्यक्तः परो नःशुभः ॥२॥

अन्वयार्थौ:-(रोमत्वग्वालभवः आवर्तः त्रेधा स्यात्) रोंगटे-त्वचा-बाल इनसे उत्पन्न हुई जो भौंरी तीन प्रकारकी होतीहै और (दक्षिणवलितःस्निग्धः व्यक्तः शुभः शस्तः परो न शुभः) जो दाहिनी ओरकी अच्छी प्रकट होय तौ शुभहै और जो बांई ओर होयतो अशुभहै ॥ २ ॥

करतलपदश्रुतियुग्मे नाभौ वा त्वग्भवो नृणाम् ॥
स स्यादपरौ द्वावपि लक्षणविद्भिर्ज्ञेयौ यथास्थानम् ॥ ३ ॥

अन्वयार्थौ--(नृणां करतलपदश्रुतियुग्मे वा नाभौ त्वग्भवः सः आवर्तः स्यात्)मनुष्योंके दोनों हाथ, दोनों पांव, दोनों कान और टूंडी–त्वचा में उत्पन्न भौंरी होतीहै और (अपरौ द्वौ अपि लक्षणविद्भिः यथास्थानं ज्ञेयौ) जो दो हैं उनकेभी लक्षण जाननेवालोंको यथा स्थान जैसी जगहहो वैसे जानने चाहिये ॥ ३ ॥

सव्यापसव्यभागे शिरसि स्याद्यस्य दक्षिणावर्तः ॥
श्वेतातपत्रलक्ष्मा लक्ष्मीः करवर्तिनी तस्य ॥ ४ ॥

अन्वयार्थौ--(यस्य शिरसि सव्यापसव्यभागे दक्षिणावर्तः स्यात्) जिसके मस्तकमें दक्षिण वामे दाहिने विभागमें जो चक्र वा भौंरी होय (तस्य श्वेतातपत्रलक्ष्मा लक्ष्मीः करवर्तिनी भवति) तिसके उज्वल छत्रकी शोभायुक्त लक्ष्मी हाथमें आती है ॥ ४ ॥

रोमावर्तः स्निग्धो भ्रूयुगमध्ये प्रदक्षिणो व्यक्तः ॥
यस्योर्णाख्यः पूर्णः सोम्बुधिकांचेर्भुवो भर्ता ॥ ५ ॥

अन्वयाथाः--(यस्य भ्रूयुगमध्ये व्यक्तः प्रदाक्षिणः स्निग्धः रोमावर्तः पूर्णः ऊर्णाख्यः स्यात्) जिस पुरुषकी दोनों भौंहके बीचमें प्रकट दाहिनी ओर झुकी हुई अच्छी भौंरी वा चक्र पूरा ऊर्णाख्य नामका होय (सः अम्बुधिकाञ्चीभुवः भर्ता भवति) सो पुरुष समुद्र है कांची कटिबंधिनी जिसकी ऐसी पृथ्वीका स्वामी अर्थात् संपूर्ण पृथ्वीका पालनेवाला होता है ॥ ५ ॥

भुजयुग्मे यस्य स्यादावर्तं द्वितीयमंगदप्रतिमम् ॥
नियतं सोखिलभूर्मिं पुरुषो निजवाहनां वहति ॥ ६ ॥

अन्वयार्थौ:-(यस्य भुजयुग्मे द्वितीयं अंगदप्रतिमं आवर्तं स्यात्) जिसकी दोनों भुजाओंके बीचमें दूसरे बाजूकासा चक्रचिह्न वा भौंरी होय तौ (सः पुरुषः नियतं अखिलभूमिं निजवाहनां वहति) सो पुरुष निश्चय करिके संपूर्ण पृथ्वीको अपनी भुजाओंसे धारण करै ॥ ६ ॥

यस्य करांभोजतले दक्षिणवलितो भवेदातिव्यक्तः ॥
परिचितशौचाचारो धर्मपरः स्यात्स वित्ताढ्यः ॥ ७ ॥

अन्वयार्थौ:-(यस्य करम्भोजतले दक्षिणवलितः आतिव्यक्तः भवेत्) जिसके करकमल अर्थात् हथेलीमें दाहिनी ओर चिह्न वा साथिया बहुत प्रकट होय तौ (सः परिचितशौचाचारः धर्मपरः वित्ताढ्यः स्यात्) सो पुरुष जानाहै पवित्रताका आचार जिसने ऐसा धर्ममें तत्पर और धनवान् होय ॥ ७ ॥

भाग्यवतां पंचांगुलिशिरःसु सौख्याय दक्षिणावर्तः ॥
प्रायः पुंसां वामावर्तो दुःखाय पुनरेषः ॥ ८ ॥

अन्वयार्थौ:-(भाग्यवतां पुंसां पंचांगुलिशिरःसु दक्षिणावर्तः सौख्याय भवति) धनवान् पुरुषोंके शिरमें ५ अंगुल प्रमाण दाहिनी ओरको झुका हुवा चक्र वा चिह्न अर्थात् भौंरी सुखदायक होती है और (पुनः एषः वामावर्तः प्रायः दुःखाय भवति) जो वही बाँई ओरको झुकी हुई भौंरी होय तौ बहुधा दुःखदाई होतीहै ॥ ८ ॥

श्रुतियुगनाभ्यावर्ताः प्रदक्षिणाः श्रेयसे भवंति नृणाम् ॥
चूडावर्तोप्येकः श्रेष्ठतरो दक्षिणः शिरसि ॥ ९ ॥

अन्वयार्थौ:-(नृणां प्रदक्षिणाः श्रुतियुगनाभ्यावर्ताः श्रेयसे भवन्ति) मनुष्योंके दाहिनी ओर झुके हुए दोनों कान और नाभिके

चक्र शुभकारक होते हैं और (नृणां शिरसि एकः अपि चूडावर्तः दक्षिणः श्रेष्ठतरो भवति) मनुष्योंके शिरमें एकही चूडावर्त्त नाम चक्र दाहिनी ओरका बहुत श्रेष्ठ होताहै ॥ ९ ॥

शीर्षे वामे भागे वामावर्तो भवेत्स्फुटो यस्य ॥
स क्षुत्क्षामो भिक्षां रूक्षां निर्लक्षणो लभते ॥ १० ॥

अन्वयार्थौः–(यस्य शीर्षे वामे भागे वामावर्तः स्फुटः भवेत्) जिसके शिरमें बाँई ओरको चक्र अर्थात् भौंरी प्रकट होय तौ (क्षुत्क्षामः सः निर्लक्षणः रूक्षां भिक्षां लभते) भूखका मारा अभागा रूखी भीखको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

वामो दक्षिणपार्श्वे प्रदक्षिणो वामपार्श्वके यस्य ॥
न तु तस्य चरमकाले भोगो नास्त्यत्र सन्देहः ॥ ११ ॥

अन्वयः–(यस्य दक्षिणपार्श्वे वामः वामपार्श्वे प्रदक्षिणः भवति--तस्य चरमकाले भोगो नास्ति अत्र सन्देहो न तु) अस्यार्थः-- जिसकी दाहिनी ओर तौ बाँई होय--और बाँई ओर दाहिनी होय-- तिसको पिछली अवस्थामें भोग नहीं होय इसमें संदेह नहीं ॥ ११ ॥

अंतर्ललाटपट्टं व्यक्तावर्त्तो ललामवद्यस्य ॥
वामोऽथ दक्षिणो वा स्वल्पायुर्दुःखितश्च स्यात् ॥ १२ ॥

अन्वयार्थौः--(यस्य ललाटपट्टं अन्तः ललामवत् व्यक्तावर्तः वामः अथवा दक्षिणः भवति) जिसके लिलारके ऊपर प्रकट है भौंरी--जिसके रत्नके समान बामा अथवा दाहिना चक्र होय तौ (सः स्वल्पायुः दुःखितश्च स्यात्) उसकी थोडी आयु और दुःखी रहै ॥ १२ ॥

यस्यावर्तद्वितयं सुव्यक्तं भवति पादतलमध्ये ॥
नक्तंदिनमतिदीनो भूमिं स भ्रमति मतिहीनः ॥ १३ ॥

अन्वयार्थौ:-(यस्य पादतलमध्ये आवर्तद्वितयं सुव्यक्तं भवति) जिसके पांवके तलुवेमें दो आवर्त नाम चक्र प्रकट होय तौ (अतिदीनः मतिहीनः सः नक्तंदिनं भूमिं भ्रमति) सो अतिदीन अर्थात् बहुत गरीब-मतिहीन--मूर्खसा रातदिन पृथ्वीमें घूमता रहै ॥ १३ ॥

अथ गतिकथनम्।

सुखसंचरितपादा मयूरमार्जारसिंहगतितुल्या ॥
दीर्घक्रमासुली, भाग्यवतांस्याद्गतिः सुभगा ॥ १४ ॥

अन्वयः-(भाग्यवतां सुखसंचरितपादा मयूरमार्जारसिंहतुल्या दीर्घक्रमा सुलीला सुभगा गतिः भवति) अस्यार्थः-भाग्यवानोंका सुखसेहै पैरोंका चलना जिसमें मोर-बिल्ली-सिंह इनकीसी चालके समान लम्बाहै डगका रखना जिसमें अच्छी लीला युक्त सुंदर चाल होतीहै ॥ १४ ॥

गतिभिर्भवन्ति तुल्या ये च समा द्विरदनकुलहंसानाम्
वृषभस्यापिनरास्ते सततं धर्मार्थकामपराः ॥ १५ ॥

अन्वयार्थौ:-(ये गतिभिः द्विरदनकुलहंसानां वृषभस्यापि समाः भवन्ति) जो मनुष्य चालसे हाथी-नौला-हंस-बैलकीसी समान होते हैं (ते नराः सततं धर्मार्थकामपरा भवन्ति) वे मनुष्य निरंतर धर्म अर्थ काममें तत्पर होते हैं ॥ १५ ॥

गोमायुकरभरासभकृकलासशशकभेकमृगैः ॥
येषांगतिःसमाना ते गतसुखराजसन्मानाः ॥ १६ ॥

अन्वयः-(येषां गतिः गोमायुकरभरासभकृकलासशशकभेकमृगैः समानाः ते गतसुखराजसन्मानाः भवन्ति) अस्यार्थः-जिनकी चाल गीदड़-ऊंट-गधा-गिरगट-खरगोश-मेंडक-हिरण-

इनकी समान होय तो–वे गया है सुख और राजसन्मान जिनका ऐसे होते हैं ॥ १६ ॥

विषमा विकटा मंदा लघुक्रमा चंचला द्रुता स्तब्धा ॥
आभ्यंतराथ बाह्या लग्नपदा वा गतिर्न शुभा ॥ १७ ॥

अन्वयः–(यस्य विषमा विकटा मंदा लघुक्रमा चंचला द्रुता स्तब्धा आभ्यन्तरा अथ बाह्या वा लग्नपदा ईदृशी गतिः शुभा न) अस्यार्थः–जिसकी ऊंची नीची, भयकारी, धीरजकी छोटी डग–फुरतीकी–शीघ्र–रुकरुकके भीतर बाहर जिसमें पांव भिडते जायँ ऐसी चाल अशुभ अर्थात् बुरी होतीहै ॥ १७ ॥

धनिनां गमनं स्तिमितंसमाहितं शब्दहीनमस्तब्धम् ॥
ह्रस्वप्लुतानुविद्धं विलम्बितं स्याद्दरिद्राणाम् ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौः-(धनिनां गमनं स्तिमितं समाहितं शब्दहीनं अस्तब्धं स्यात्)धनवानोंकी चाल अच्छी एकसी–शब्द करिके हीन–रुकावटकी नहीं ऐसी होतीहै और (ह्रस्वप्लुतानुविद्धं विलंबितं दरिद्राणां स्यात्) छोटी छोटी डगयुक्त, धीरे धीरे ऐसी चाल दरिद्रियों की होतीहै ॥ १८ ॥

अथ छायाकथनम् ।

छादयतिनरस्याङ्गे लक्षणमत्यन्ततो नरश्छाया ॥
सा पार्थिवी तथाथ ज्वलनभवा वायवी व्योम्नी ॥ १९ ॥

अन्वयार्थौः–(छाया नरस्य अंगे लक्षणं छादयाति सा छाया पार्थिवी अत्यन्ततः नरः भवति) छाया अर्थात् तेज मनुष्यके अंगमें लक्षणको ढकदेय सो छायाका नाम पार्थिवी अर्थात् पृथ्वी सम्बन्धिनी है सो मनुष्य बहुत अच्छा होता है और (तथा ज्वलनभवा अथ

व्योम्नी वायवी भवति) जैसे अग्निसे आकाशसे और पवनसे उत्पन्न-
हुई होती है ॥ १९ ॥

भवति शुभाशुभफलदा निजतेजस्तन्वती बहिर्देहात् ॥
विमलस्फटिकघटान्तर्विलसतिसा दीपकलिकेव ॥ २० ॥

अन्वयार्थौ:-(छाया शुभाशुभफलदा भवति छाया शुभ और अशुभ
फलके देनेवाली होती है और (देहात् बहिर्निजतेजस्तन्वती भव-
ति) देहसे बाहिर वही छाया अपने तेजको फैलाती है और) सा
विमलस्फटिकघटान्तः दीपकलिका इव विलसति) कैसे कि निर्मल
स्फटिकके घड़ेमें दीपककी ज्योति जैसे प्रकाशवान् अर्थात् शोभित
त होती है ॥ २० ॥

स्निग्धद्विजनखलोमत्वक्केशा पार्थिवी स्थिरा रेखा ॥
नयनहृदयाभिरामा दत्ते धनधर्मसुखभोगान् ॥ २१ ॥

अन्वयः-(स्निग्धद्विजनखलोमत्वक्केशा रेखा स्थिरा नयन-
हृदयाभिरामा एतादृशी पार्थिवी छाया धनधर्मसुखभोगान् दत्ते)
अस्यार्थः-अच्छे हैं दाँत-नख-रोम-त्वचा-बाल और स्थिर रेखा
जिसमें होती हैं और नेत्र-चित्तको सुंदर लगे ऐसी पार्थिवी छाया
धनधर्म और सुख भोग इनके देनेवाली होती है ॥ २१ ॥

आप्याभिनवाम्भोदप्रच्छन्नजलसन्निभा छाया ॥
सर्वार्थसिद्धिजननी जनयति सौभाग्यमिह पुंसाम् २२ ॥

अन्वयार्थौ-(अभिनवाम्भोदप्रच्छन्नजलनिभा छाया आप्या)
नवीन जो मेघ जिससे गिरा जो जल उसकी तुल्य जो छाया है
तिसका नाम आप्या है (सा छाया सर्वार्थसिद्धिजननी)सो छाया सर्व

अर्थके सिद्धीके उत्पन्न करनेवाली है (इहं पुंसां सौभाग्यं जनयति) वही छाया पुरुषोंके भाग्यको उत्पन्न करती है ॥ २२ ॥

ज्वलनप्रभा च बालार्कप्रवालकनकाग्निपद्मरागनिभा ॥
पौरुषपराक्रमैर्वा जयमर्थं तनुभृतां तनुते ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौः-(या बालार्कप्रवालकनकाग्निपद्मरागनिभा भवति) जो उदयहुआ सूर्य-मूंगा--सोना--अग्नि-रत्न इनकी तुल्य होय (सा छाया ज्वलनप्रभा भवति) सो छाया ज्वलनप्रभा नाम है (सा ज्वलनप्रभा तनुभृतां पौरुषपराक्रमैर्जयं अर्थं तनुते) वही ज्वलनप्रभा छाया मनुष्योंके पौरुष और पराक्रम करके जय और अर्थको फैलाती है ॥ २३ ॥

रूक्षा मलिना दीना चला खला मारुती भवेच्छाया ॥
वधबंधबंधनपरा वित्तविनाशं नृणां कुरुते ॥ २४ ॥

अन्वयार्थौः-(सा छाया रूक्षा मलिना दीना चला खला सा छाया मारुती भवति) जो छाया-- मैली हीन--चलायमान--बुरी इनकी तुल्य जो होय सो छाया मारुती नाम है (सा छाया वधबंधबंधनपरा नृणां वित्तविनाशं कुरुते) सो छाया मारण और बंधनकी करनेवाली और मनुष्योंके धनके नाश करनेवाली है ॥ २४ ॥

स्वच्छा स्फटिकमणिनिभा प्रोद्दामा देहिनामिह व्योम्नी
प्रायः श्रेयोनिधिसुखधनसुतसौभाग्यदा पुंसाम् ॥ २५ ॥

अन्वयार्थौ-(पुंसां या छाया स्वच्छा स्फटिकमणिनिभा प्रोद्दामा सा छाया व्योम्नि) पुरुषोंकी जो छाया निर्मल--स्फटिकमणिकी तुल्य अत्यन्त सुंदर ऐसी होय सो व्योम्नी नाम छाया है (सा छाया इह देहिनां प्रायः श्रेयोनिधिसुखधनसुतसौभाग्यदा भवति)

सो छाया मनुष्योंको बहुधा कल्याण लक्ष्मी सुख धन पुत्र सौभाग्य इनके देनेवाली है ॥ २५ ॥

अर्काच्युतेन्द्रयमशशिप्रतीकाशा लक्षणैस्तु फलैः ॥
अन्या पंच पुनस्ताः प्रवदंत्यपरे समसंपदं नैतत् ॥२६॥

अन्वयः-(अर्काच्युतेन्द्रयमशशिप्रतीकाशा-अन्या ताः पंच छायाः लक्षणैस्तु फलैः पुनः अपरे समसंपदः इति प्रवदन्ति एतत् न) अस्यार्थः-सूर्य-विष्णु-इंद्र-यम-चंद्रमा-इनकी तुल्य ये और पांच छाया हैं वे लक्षणों और फलों करिके दूसरे मतवाले इनको समान संपत्तिवाले कहतेहैं-परंतु यह बात नहीं किंतु इनके पृथक् पृथक् फल हैं ॥ २६ ॥

अथ स्वरः ।

स्निग्धस्वरोऽनुमोदी निर्ह्रादी खंडितः कलो मन्द्रः ॥
तारः स्वरस्य विपुलो पुंसां संपत्करः सततम् ॥ २७ ॥

अन्वयः-(पुंसां स्निग्धस्वरः अनुमोदी-निर्ह्रादी-खंडितः कलः मंद्रः तारः स्वरः विपुलः सततं संपत्करो भवति) अस्यार्थः--पुरुषों की अच्छी जो बोली है सोई प्रसन्न करतीहै--सारसकीसी-कुछ कही कुछ न कही-मीठी अप्रकट-मृदंगकीसी-बहुत ऊंची-बड़ी ये सब निरंतर संपत्तिकी करनेवाली हैं ॥ २७ ॥

दुंदुभिवृषभाम्बुद मृदंगशिखिशंबररथांगैः स्यात् ॥
यस्य स्वरः समानः स भूपतिर्भवति भोगाढ्यः ॥ २८ ॥

अन्वयः-(यस्य स्वरः दुंदुभिवृषभाम्बुदमृदंगशिखिशंबररथाङ्गैः समानः स्यात्-स भूपतिः भोगाढ्यो भवति) अस्यार्थः- जिसकी बोली-नगारा-बैल--मेघ--मृदंग--मोर-हिरण-चकवा--इनकी तुल्य होय सो राजा और भोगी होता है ॥ २८ ॥

भिन्नः क्षीणः क्षामो विक्रुष्टोगद्गदस्वरो दीनः ॥
रूक्षो जर्जरितो पिच निःस्वानां निःस्वनः प्रायः ॥२९॥

अन्वयः–निःस्वानां स्वरः भिन्नः क्षीणः क्षामः विक्रुष्टः गद्गद दीनः रूक्षः जर्जरितः प्रायः निःस्वनः भवति)अस्यार्थः–दरिद्रियोंकी बोली–फूटी टूटी कुछ कही कुछ न कही–बहुत धीरेकी–दुबले मनुष्य कीसी–खैंची हुई बडे जोरसे–रुकरुकके–गरीबीसे–रूखीसी–बूढों कीसी ऐसी बोली बहुधा दरिद्रियोंकी होतीहै ॥ २९ ॥

वृककाकोलूकप्लवगोष्ट्रक्रोष्टुरासभवराहैः ॥
तुल्यःस्वरो न शस्तो विशेषतो हि स्वरो दुष्टः ॥३०॥

अन्वयः–(यस्य स्वरः वृककाकोलूकप्लवगोष्ट्रक्रोष्टुरासभवराहैः तुल्यो भवति स न शस्तः विशेषतः स्वरः दुष्टो भवति) अस्यार्थः–जिसका स्वर, भेडिया, कौवा,उलूक, बंदर,ऊंट, गीदड, गधा,सूअर इनकीसी तुल्य जो होय तो अच्छा नहीं है–और इनसे अधिक स्वर वाला दुष्ट होताहै ॥ ३० ॥

अथ गंधः।

गंधो भुवि नराणां प्रजायते नासिकेन्द्रियग्राह्यः ॥
श्वासःस्वेदादिभवो ज्ञेयः स शुभाशुभोद्विविधः ॥ ३१॥

अन्वयः–(भुवि नराणां नासिकेन्द्रियग्राह्यः गंधःप्रजायते–स्वेदादिभवः गंधः श्वासः स शुभाशुभो द्विविधो ज्ञेयः) अस्यार्थः–पृथ्वीमें मनुष्योंकी गंध नासिका इंद्रियकरिके लीनी जाय ऐसी जो गंध होय सो–पसीना आदिसे और श्वाससे जो उत्पन्न गन्ध सोई गंध शुभ और अशुभ दोप्रकारकी जानिये ॥ ३१ ॥

कर्पूरागुरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगन्धाः ॥
द्विपमदगंधा भूमौ पुरुषाः स्युर्भोगिनः प्रायः ॥ ३२ ॥

अन्वयः—(कर्पूरागुरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगंधाः वा द्विपमदगंधाः भूमौ प्रायः भोगिनः स्युः) अस्यार्थः—कर्पूर, अगर, चंदन, कस्तूरी, चमेली, तमाल अर्थात् आबनूसके पत्ते कीसी, वा हाथीकेसे मदकीसी, गंध जिनमनुष्योंकी पृथ्वीमें गंधयुक्त होय वे मनुष्य बहुधा भोगी होते हैं ॥ ३२ ॥

मत्स्याण्डपूतिशोणितनिम्बवसाकाकनीडबकगन्धाः॥
दुर्गन्धाश्च नरास्ते दुर्भगतानिःस्वताभाजः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—(मत्स्यांडपूतिशोणितनिम्बवसाकाकनीडबकगंधाः ते नराः दुर्गन्धाः प्रायः दुर्भगता निःस्वताभाजो भवंति) अस्यार्थः—जिनकी गंध मच्छीके अंडे—सडे—रुधिर—नीम—चरबी—कौवेके अंडे—बगुले—इनके तुल्य होय वे मनुष्य बुरे गंधवाले हैं—बहुधा कुरूप और दरिद्रताके भोगनेवाले होते हैं ॥ ३३ ॥

अथ वर्णः ।

गौरः श्यामः कृष्णो वर्णः संभवति देहिनां त्रेधा ॥
आद्यौ द्वावपि शस्तौ शुभो न कृष्णो न संकीर्णः ३४॥

अन्वयार्थौ:—(देहिनां वर्णः त्रेधा संभवति) मनुष्योंके शरीरका रंग तीन प्रकारका होताहै जैसे—(गौरः श्यामः कृष्णः द्वौ अपि आद्यौ शस्तौ) गोरा, सांवरा, काला, जो आदिके दोनो हैं सो अच्छे हैं और (कृष्णः न शुभः वा संकीर्णः शुभो न) काला अच्छा नहींहै—और कुछ काला कुछ गोरा येभी शुभ नहीं है ॥ ३४ ॥

पङ्कजाकिञ्जल्कनिभो गौरश्यामः प्रियंगुकुसुमसमः ॥
कृष्णस्तुकज्जलाभः स्निग्धः शुद्धोपि नो शस्तः ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौः–(पंकजकिंजल्कनिभः गौरः) कमलके फूलके जीरेके तुल्य तो गोरा और (प्रियंगुकुसुमसमः श्यामः) धायकेसे फूलके तुल्य सांवरा और (कज्जलाभः समः कृष्णः) काजलके तुल्यहै सो कालाहै और (स्निग्धः शुद्धः अपि कृष्णः नो शस्तः) चिकना चमकना जो काला है सो अच्छा नहीं है ॥ ३५ ॥

अथ सत्वम् ।

व्यसने वाभ्युदये वा गतशंकाशोकमुकुलितोत्साहम् ॥
उन्मीलनधीरत्वं गंभीरमिह कीर्त्यते सत्वम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः–(व्यसने वाभ्युदये वा गतशंकाशोकमुकुलितोत्साहं उन्मीलनधीरत्वं–इह सत्वं गंभीरं कीर्त्यते) अस्यार्थः–दुःखमें वा सुखमें वा गई है शंका–शोक रहित–उत्सवमें प्रसन्नता और धीरज होय सो इस लोकमें ऐसे सत्वको गंभीर कहते हैं ॥ ३६ ॥

एकमपि सत्वमेतैः सर्वेपि संति लक्षणैस्तुल्यम् ॥
यस्मिन्कपिमनुजानां न कदाचन दुर्लभालक्ष्मी ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थौः–(एकं अपि सत्वं एतैः लक्षणैः तुल्यं सर्वेपि संति) एकही सत्व इन लक्षणोंके तुल्य सब हैं जैसे (यस्मिन् कपिमनुजानां कदाचन लक्ष्मीः दुर्लभा न) जिस सत्वमें बंदर और मनुष्योंको कभी लक्ष्मी दुर्लभ नहीं है ॥ ३७ ॥

त्वांच भोगान्मांसे सुखमस्थिषु घनमी क्षणेषु सौभाग्यं

यानं गतौ स्वरे स्याद़ाज्ञा सत्वे पुनः सर्वम् ॥ ३८ ॥

अन्वयः-(त्वचि भोगान्, मांसे सुखं, अस्थिषु धनं, ईक्षणेषु सौभाग्यं, गतौ यानं, स्वरे आज्ञा, पुनः सत्वं सर्वं स्यात्) अस्यार्थः-त्वचामें जो सत्व है सो भोगोंको-मांसमें सुखोंको-हाडोंमें कठिनताको नेत्रोंमें सौभाग्यको-चलनेमें सवारीको-शब्दमें आज्ञाको-फिरभी जो कुछ है सो सब सत्वमेंहीहै ॥ ३८ ॥

सौभाग्यमिव स्त्रीणां पुरुषाणां भूषणं भवति सत्वम् ॥
तेन विहीना भुवने भजन्ति परिभवपदं प्रायः ॥ ३९ ॥

अन्वयः-(स्त्रीणां सौभाग्यं इव-पुरुषाणां सत्वं भूषणं भवति भुवने तेन विहीना प्रायः परिभवपदं भजंति) अस्यार्थः-स्त्रियोंका सौभाग्य जैसे भूषणहै-ऐसेही पुरुषोंका सत्व भूषणहै-जगत्में जो सत्त्व करिके हीन हैं वे बहुधा निरादर पदको पाते हैं ॥ ३९ ॥

वर्णः शुभो गतेः स्याद्वर्णादपिशुभतरः स्वरः पुंसाम्॥
अतिशुभतमं स्वरादपि सत्त्वं सत्त्वाधिका धन्याः॥४०॥

अन्वयः-(पुंसां गतेः वर्णः शुभः वर्णादपि स्वर शुभतरः स्यात्-स्वरात् अपि अतिशुभतमं सत्त्वं-तथा सत्त्वाधिकाः पुरुषाः धन्याः) अस्यार्थः-पुरुषोंकी गतिसे तो वर्ण शुभ है, वर्णोंसे स्वर अत्यंत उत्तम शुभ है, अच्छा है, स्वरसेभी उत्तम सत्त्वहै-और जिनमें सत्त्व अधिक है वही पुरुष धन्य है ॥ ४० ॥

वक्रानुगतं रूपं रूपानुगतं नृणां भवति वित्तम् ॥
वित्तानुगतं सत्त्वं सत्त्वानुगता गुणाः प्रायः ॥ ४१ ॥

अन्वयः-(नृणां वक्रानुगतं रूपं-रूपानुगतं वित्तं-वित्तानुगतं

सत्त्वं-प्रायः सत्त्वानुगताः गुणाः भवंति) अस्यार्थः-मनुष्योंके मुखके तुल्य तो रूप है और रूपके तुल्य वित्त है और वित्तके तुल्य सत्त्व है और बहुधा सत्त्वके ही तुल्य गुणभी होते हैं ॥ ४१ ॥

इह सत्त्वमेव मुख्यं निखिलेष्वपि लक्षणेषु मनुजानाम् ॥
सद्भावो भवति पुनश्चिंताशाम्यं समुपयाति ॥ ४२ ॥

अन्वयार्थौः-(इह मनुजानां निखिलेषु लक्षणेषु अपि सत्त्वं एव मुख्यं)इस लोकमें मनुष्योंके सब लक्षणोंमें यह सत्त्व लक्षण मुख्य है और (पुनः सद्भावो भवति) इसमें सद्भाव अर्थात् अच्छा विचार होता है और(चिंताशाम्यं समुपयाति)चिंता शांत होजाती है ॥४२॥

नापितु येषां नमनं मनोविकारं कथं च नाभ्येति ॥
आपद्यपि संपद्यपि ते सत्त्वविभूषिताः पुरुषाः ॥ ४३ ॥

अन्वयार्थौः-(येषां नमनं नतु-आपद्यपि संपद्यपि मनोविकारं कथं न अभ्येति) जिनका झुकना नहींहै आपत्तिमें और संपत्तिमें तिनके मनको कभी विकार नहीं होता और (ते पुरुषाः सत्त्वविभूषिताः भवंति)वे पुरुष सत्त्वविभूषित होते हैं अर्थात् सत्त्वही जिनके भूषण है ॥ ४३ ॥

शुभलक्षणमप्येवं बाह्यं न विलोक्यते स्फुटं यस्य ॥
अपि दृश्यते पुनः श्रीस्तस्य तदध्रुवं सत्यम् ॥ ४४ ॥

अन्वयार्थौः-(यस्य एवं शुभलक्षणं बाह्यं अपि स्फुटं न विलोक्यते)जिसके ये शुभलक्षण बाहिरी प्रकट नहीं दीखें(तस्य पुनः श्रीः अध्रुवं अपि दृश्यते-इति सत्यं) तिसके फिर लक्ष्मी चलायमान दीखती है अर्थात् उसके स्थिर नहीं रहे ये बात सत्यहै ॥ ४४ ॥

स्थूलैस्तनुभिः परुषैर्मृदुभिः स्वल्पैरथायतैरंगैः ॥
यसत्ववान्स पूज्यस्तत्सकलंगुणाधिकं सत्वम् ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थौः-(स्थूलैः तनुभिः परुषैः मृदुभिः स्वल्पैः अथ आयतैः अंगैः) मोटा पतला, खरदरा, नरम, छोटा, लंबा, शरीर होय तो इन करके कुछनहीं (यः सत्ववान् स पूज्यः) जो सत्ववान् है सोई पूज्य है (तत्सकलं गुणाधिकं सत्वं भवति) वही सबगुणोंमें अधिक सत्वही है ॥ ४५ ॥

शुभलक्षणमंगं यदि सुपूजितं स्यान्नरस्य सत्ववतः ॥
तद्वयसंपर्कादिह सौभाग्ये मंजरीभेदः ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौः-(सत्ववतः नरस्य यदि अंगं शुभलक्षणं सुपूजितं स्यात्) सत्ववाले मनुष्यका जो अंग शुभ लक्षणयुक्त है सोई पूजितहै और (तदुभयसंपर्कात् इह सौभाग्ये मंजरीभेदः) उन दोनोंके मिलापसे अर्थात् सत्व-अंगके इस लोकमें और भाग्यमें कुछ मंजरीका अर्थात् बालिकासा भेद है ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहत्तम श्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलका
परनाम्नि आवर्ताद्यधिकारस्तृतीयः ॥ ३ ॥

संस्थानवर्णगंधो वार्ताः सत्वं स्वरो गतिश्छाया ॥
तन्नरवन्नारीणामिति लक्षणमष्टधा भवति ॥ १ ॥

अन्वयः-(संस्थानवर्णगंधः आवर्तः सत्वं स्वरः गतिः छाया नारीणां इति नरवत् तत् लक्षणं अष्टधा भवति) अस्यार्थः-आकार, रंग, सुगंध, चक्र, सत्व, बोली, चाल, कांति,जैसे मनुष्योंके लक्षण हैं तैसेही स्त्रियोंके भी लक्षण यह आठ प्रकारके होतेहैं ॥ १ ॥

इह देहसंनिवेशः संस्थानं तस्यलक्षणमिदानीम् ॥

आपादतलशिरोन्तं जातस्य शुभाशुभं फलं वक्ष्ये ॥२॥

अन्वयः–(इह देहसंनिवेशः संस्थानं इदानीं प्रजातस्य आपादतलशिरोन्तं शुभाशुभं फलं वक्ष्ये तस्य लक्षणं ज्ञेयम्) अस्यार्थः–इस लोकमें शरीरका जो आकार है उसीका नाम संस्थान है–अब पुरुषकेसे पाँवसे लेकर शिरतक स्त्रियोंके शुभ वा अशुभ फल कहताहूं–तिसके लक्षण जानने चाहिये ॥ २ ॥

प्रथमं पादस्य तलं रेखाश्चक्रादयस्ततोंगुष्ठः ॥
अंगुल्यस्तदनु नखाः पृष्ठं गुलफद्वयं पार्ष्णिः ॥ ३ ॥

अन्वयः–(प्रथमं पादस्य तले रेखाः ततः चक्रादयः अंगुष्ठः तदनु नखाः अंगुल्यः पादपृष्ठं गुलफद्वयं पार्ष्णिः) अस्यार्थः--पहिले तो पाँवके तलुवेकी रेखा तिसके पीछे चक्र आदि और अंगूठा तिसके पीछे नख फिर अंगुली तिस पीछे पाँवकी पीठ और दो टकना और पार्ष्णि नाम पाँवका फावा अर्थात् पंजा ॥ ३ ॥

जंघाद्वयरोमाणि जानूरूचूचुकगंडयुगलमथो ॥
कटिरथ नितंबबिम्बं स्फिचौ भगंजघनमथ बस्तिः॥४

अस्यार्थः--जंघाद्वयं, पिंडली दोनों। रोमाणि, बाल, जानु, घुटनेके ऊपर। ऊरू, जांघा। चूचुक, चूंचीकी नोंका। गंडयुगलं, कपोलों की दोनों हड्डियाँ। अथो कटिः, और कमर। अथ नितंबबिम्बं, कूलेके मोटेपन। स्फिचौ, कमरके पिंड। भगं, भग। जघनं, कूलेका आगा अथ बस्तिः, ये पेडू आदि अंगहैं ॥ ४ ॥

नाभिः कुक्षिद्वितयं ततश्च पार्श्वद्वयं तथा जठरम् ॥
मध्यं त्रिवलीरोमावलिसहितं हृदयमथवक्षः ॥५॥

शब्दार्थः—नाभिः, टूंडी। कुक्षिद्वितयं, बगलें दोनों। ततः पार्श्वद्वयं, तिसकी पांसू दोनों। तथा जठरं,और पेट। मध्यं, त्रिवली, बीचकी सलवटें। रोमावलीसहितं, बालोंकी पंगतिसहित। हृदयं, छातीके ऊपर। अथ वक्षः, बगल आदिअंग हैं॥ ५॥

उरसिजजत्रुयुगलं तदनु स्कन्धयोर्युग्मम्॥
अंसद्वयमथ कक्ष्याद्वितयं भुजयोस्तथा द्वंद्वम्॥ ६॥

शब्दार्थः—उरसिजं, चूंची। जत्रुयुगलं, कंधोंकी हँसली। तदनु स्कंधयोर्युग्मं, तिस पीछे दोनों कंधे। अंसद्वयं, कंधोंके दोनों भाग। अथ कक्ष्याद्वितयं, ये दोनों काखें। तथा भुजयो द्वंद्वं और दोनों भुजा जानिये॥ ६॥

मणिबंधपाणियुगुलं तस्य च पृष्ठं तलं ततो रेखा॥
अंगुष्ठांगुलयोनखलक्षणमथवानुपूर्विकया पृष्ठिः॥७॥

शब्दार्थः—मणिबंधः, पहुँचा। पाणियुगुलं, दोनों हाथ। तस्य पृष्ठं, तिस हथेलीकी पीठ। तलं, हथेली। ततो रेखा, तिसके पीछे रेखा। अंगुष्ठः, अंगूठा। अंगुलयः, अंगुली। नखआदि अंगके लक्षण क्रमपूर्वक कहेंगे॥ ७॥

कृकाटिकाथ कंठश्चिबुकं कपोलयुगलं च॥
वक्रमधरोत्तरोष्ठौ दंता जिह्वा ततश्च तालुत॥ ८॥

शब्दार्थः—कृकाटिका, गलेकी घेंटी। कंठः, गला। चिबुकं, ठोडी। कपोलयुगलं, दोनों गाल। वक्रं, मुख। अधरोत्तरोष्ठौ, ऊपर नीचेके होंठ। दंताः, दाँत। जिह्वा, जीभ। ततश्च तालु, तिसका तालु आदि अंग जानिये॥ ८॥

घंटीहासितं नासा क्षुतमक्षिद्वितयमथ च पक्ष्माणि॥

भ्रूकर्णयुगललाटं सीमंतं शीर्षमथकेशाः ॥ ९ ॥

शब्दार्थः–घंटी, तलुवेके ऊपरका भाग । हसितं, हँसना, नासा, नाक । क्षुतं, छींक । अक्षिद्वितयं--आंखें दोनों । पक्ष्माणि, नेत्रोंकी वह्नी तथा बाफणी । भ्रू, भौंह । कर्णयुगं, दोनों कान । ललाटं, लिलार । सीमंतं, बालोंकी मांग । शीर्ष, सीस । अथ केशाः, बाल आदि ये अंग हैं ॥ ९ ॥

अथ पादतलम् ।

पादतलमुष्णमरुणं समांसलं मृदु समं स्निग्धम् ॥
सुप्रतिष्ठितं यस्याः स्त्रीणां भोगप्रतिष्ठायै ॥ १० ॥

अन्वयः–(यस्याः पादतलं उष्णं अरुणं समांसलं मृदु समं स्निग्धं सुप्रतिष्ठितं पादतलं स्त्रीणां भोगप्रतिष्ठायै भवति) अस्यार्थः–जिस स्त्रीका पैरका तलुवा, गरम, लाल, मांसका भरा, नरम, बराबर, चिकना, एकसा बैठा जाय, ऐसा पैरका तलुवा स्त्रियोंका भोग और प्रतिष्ठा अर्थात् बडाईके योग्य होता है ॥ १० ॥

रूक्षं खरं विवर्णं चरणतलं भवति भोगनाशाय ॥
असितं दौर्भाग्याय श्वेतं दुःखाय योषाणाम् ॥ ११ ॥

अन्वयार्थौः--(रूक्षं खरं विवर्णं चरणतलं भोगनाशाय भवति) रूखा–खरदरा--बुरे रंगका ऐसा पांवका तलुवा होय तो भोगके नाश करनेवाला होता है और (योषाणां पादतलं असितं दौर्भाग्याय भवति) स्त्रियोंके पांवका तलुवा जो काला होय तो अभाग्यके करने वाला होताहै और (श्वेतं दुःखाय भवति) जो सफेद होय तो दुखदाई होताहै ॥ ११ ॥

शूर्पाकृतिभिः श्वेतैः कुटिलैः स्युर्दुर्भगाश्चरणतलैः ॥

शुष्कैर्निःस्वा विषमैः शोकजुषो दुःखिता मृदुभिः॥१२॥

अन्वयार्थौः–(शूर्पाकृतिभिः श्वेतैः कुटिलैः चरणतलैः नार्यो दुर्भगाः स्युः) जो सूपके आकार और सफेद टेढा ऐसा पाँवका तलुवा होय तो स्त्री कुरूप और अभागिनी होती है--और (शुष्कैः- निःस्वाः भवंति) जो सूखा होय तो दरिद्रिनी होय और (विषमैः- शोकजुषो भवंति) जो टेढा और ऊंचा नीचा होय तौ शोकके सेवन करनेवाली होय और (अमृदुभिः दुखिताः, भवंति) जो कड़ा होय तो दुःखी होतीहै ॥ १२ ॥

चक्रस्वस्तिकशंखध्वजांकुशच्छत्रमीनमकराद्याः ॥
जायन्ते पादतले यस्याः सा राजपत्नी स्यात् ॥ १३ ॥

अन्वयः–(यस्याः पादतले चक्र, स्वस्तिक,शंख, ध्वजा, अंकुश, छत्र, मीनमकराद्याः जायन्ते सा राजपत्नी स्यात्) अस्यार्थः--जिस स्त्रीके पाँवके तलुवेमें चक्र, सांथिया, शंख, ध्वजा, अंकुश, छत्र, मछली, मगरको आदि ले करिके ये शुभ रेखा होंय सो शुभस्त्री राजा की रानी होती है ॥ १३ ॥

चक्रादिचिह्नमध्ये स्यादेकं द्वे बहूनि वा यासाम् ॥
ऐश्वर्यसौख्यमपि वा तासां तदनुमानेन ॥ १४ ॥

अन्वयः–(यासां चक्रादिचिह्नमध्ये एकं स्यात् द्वे वा बहूनि संति तदनुमानेन तासां ऐश्वर्य सौख्यं अपि स्यात्) अस्यार्थः--जिन स्त्रियोंके चक्रादि चिह्नोंमेंसे एक होय वा दो वा बहुत होंय--तिनके अनुमान करिके तिन्हीं स्त्रियोंको ऐश्वर्य और सौख्य होता है॥१४॥

ऊर्ध्वा रेखांघ्रितले यावन्मध्यांगुलिगता यस्याः ॥
सा लभते पतिमाढ्यं प्रिया पुनर्भवति तस्यापि ॥ १५ ॥

अन्वयः–(यस्याःअंघ्रितले ऊर्द्धा रेखा यावत् मध्यांगुलिगता भवति सा आढ्यं पतिं लभते–पुनः तस्यापि प्रिया भवति)अस्यार्थः–जिस स्त्रीके पाँवके तलुवेमें जो ऊर्ध्व रेखा जितनी बीचकी अंगुली-तक गई होय सो स्त्री धनवान् पतिको पाती है और सोई तिसकी प्यारी होती है ॥ १५ ॥

श्वशृगालमहिषमूषककाकोलूकाहिकोककरभाद्याः ॥
चरणतले जायन्ते यस्याःसा दुःखमाप्नोति ॥ १६ ॥

अन्वयः–(यस्याः चरणतले श्वशृगालमहिषमूषककाकोलूकाहिकोककरभाद्याः जायन्ते सा दुःखं आप्नोति)अस्यार्थः–जिस स्त्रीके पाँवके तलुवेमें कुत्ता, गीदड़, भैंसा, चूहा, कौवा, उल्लू, सर्प भेडिया, ऊंट, आदिके चिह्न होंय सो स्त्री दुःख पाती है ॥ १६ ॥

अथांगुष्ठः।

मांसोपचितोंगुष्ठः समुन्नतो वर्तुलः शुभो यःस्यात् ॥
ह्रस्वश्चिपिटो वक्रःकुलक्षयाय ध्रुवं स्त्रीणाम् ॥ १७ ॥

अन्वयः–(यस्याः यः पादांगुष्ठःमांसोपाचितःसमुन्नतःवर्तुलः स शुभः तथा ह्रस्वः चिपिटः वक्रः स्त्रीणां ध्रुवं कुलक्षयाय भवति)अस्यार्थः–जिस स्त्रीका जो पाँवका अँगूठा मांससे भरा ऊंचा गोल ऐसा होय सो शुभ है और छोटा चपटा टेढा होय तो स्त्रियोंका ऐसा अँगूठा कुलके नाश करनेवाला होताहै ॥ १७ ॥

वैधव्यं विपुलेन द्वेष्यत्वं स्वल्पवर्त्तुले स्त्रीणाम् ॥
रमणाद्दतायमाना पुनरंगुष्ठेनातिदीर्घेण ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौः–(स्त्रीणां विपुलेन अँगुष्ठेन वैधव्यं स्यात्) स्त्रियोंके चौड़े अँगूठेसे विधवापन होताहै और (स्वल्पवर्तुलेन अंगुष्ठेन द्वेष्यत्वं स्यात्) थोडे गोल अँगूठेसे वैरभाव होताहै और (अति-

दीर्घेण अंगुष्ठेन रमणादृतायमाना भवति) बहुत लंबे अँगूठेसे स्त्री पतिसे आदर पानेवाली होतीहै ॥ १८ ॥

अथांगुल्यः।

मृदवोंगुलयः शोणाः पादाम्बुजस्य च कोमलदलानि ॥
सरला घनाः सुवृत्ताः समुन्नता भोगलाभाय ॥ १९ ॥

अन्वयः-(पादांबुजस्य अंगुलयः मृदवः शोणाःअंबुजस्य कोमलदलानि इव सरलाः घनाः सुवृत्ताः समुन्नताः भोगलाभाय भवंति) अस्यार्थः-पांवकी अंगुलीमें नरम,लाल,कमलकी पत्तियोंकीसीनरम वे सूधी आसपास गोल उँचाई लिये ऐसी अंगुलियें भोगके लाभके अर्थ होतीहैं ॥ १९ ॥

वितरंति प्रौढभुग्ना दौर्भाग्यत्वं हि किंकरीत्वं च ॥
पृथवःस्थूला: दुःखं विरला रूक्षाः पुननैःस्वम् ॥ २० ॥

अन्वयार्थौः-(प्रौढभुग्नाः अंगुल्यः दौर्भाग्यत्वं वितरंति) बहुत टेढी अंगुली कुरूपको देती हैं और (पृथवः अंगुल्यः किंकरीत्वं वितरंति) फैलीहुई चौड़ी अंगुली दासीपनको देती हैं और (स्थूलाः अंगुल्यःदुःखं वितरंति (मोटी अंगुली दुःखको देती हैं और (विरलाः रूक्षाः अंगुल्यः पुनः नैःस्वं वितरंति) छितरी और रूखी अंगुली फिर दरिद्रपनको देती हैं ॥ २० ॥

पूर्वं वृत्ता यस्यास्तनवोंगुलयः परस्परारूढाः ॥
हत्वा बहूनपि पतीन् सा दासी जायते नियतम् ॥ २१ ॥

अन्वयार्थौः-(यस्याः अंगुल्यः पूर्वं वृत्ताः तनवः परस्परारूढाः भवंति) जिस स्त्रीकी अंगुली पहले गोल फिर पतली एकके ऊपर एक चढी हुई होय (सा बहून् अपि पतीन् हत्वा नियतं दासी जायते)सो स्त्री बहुत पतिनको मारके निश्चय करके दासी होतीहै॥२१॥

यस्याःपथि प्रयांत्या रेणुकणाःक्षितितलास्समुच्छलंति
सा च कदापि न शस्ता कुरुते कुटिला विनाशंच ॥ २२ ॥

अन्वयार्थौः-(पथि प्रयांत्या यस्याः क्षितितलात् रेणुकणाःसमुच्छलंति) जिसके मार्ग चलनेसे धरतीसे धूलके कणका उछलें (सा कदापि न शस्ता) सो ऐसी स्त्री कभी अच्छी नहीं और (च पुनः सा कुटिला विनाशं कुरुते) सो खोटी स्त्री नाश करती है ॥ २२ ॥

यांत्या नियतं यस्या न स्पृशतिकनिष्ठिकांगुली भूमिम्
सा हत्वा पतिमाद्यं रहो रमते द्वितीयेन ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौः-(यांत्या यस्याःकनिष्ठिकांगुली नियतं भूमिं न स्पृशति) जिस स्त्रीकी चलती हुई अंगुली निश्चय पृथ्वीको नहीं छुवै (सा आद्यं पतिं हत्वा रहः द्वितीयेन रमते) सो स्त्री पहले पतिको मारिके एकांतमें दूसरे पतिके साथ भोग विलास करती है ॥ २३ ॥

यस्या न स्पृशति भूतलमनामिका सा पतिद्वयं हन्ति ।
अतिहीनायां तस्यां नित्यां कलहप्रिया सा च ॥ २४ ॥

अन्वयार्थौः-(यस्याः अनामिका भूतलं न स्पृशति) जिस स्त्रीकी अनामिका अंगुली चलतेमें धरतीसे न लगे (सा पतिद्वयं हन्ति) सो दो पतिको मारती है (तस्यां अतिहीनायां सत्यां सा नित्यं कलहप्रिया भवति) तिसके अत्यंत छोटे होनेसे सो स्त्री नित्यही कलहकी प्यारी होती है ॥ २४ ॥

हीना मध्या यस्याः सा योषित्पौरुषं वदति सततम् ॥
अस्पृष्टायांभुवि तस्यां मारयति पुनः पतित्रितयम् २५

अन्वयार्थौः-(यस्यःमध्या हीना भवति सा योषित् सततं पौरुषं वदति) जिस स्त्रीके पांवकी बीचकी अंगुली छोटी होय सो स्त्री नि-

रंतर पराक्रमको करती है (पुनः भुवि तस्यां अस्पृष्टायां सा योषित् पतित्रितयं मारयति) और जो धरतीको बीचकी अंगुली न छुए सो स्त्री तीन पतिको मारती है ॥ २५ ॥

अंगुष्ठादधिका स्याद्यस्याः पादप्रदेशिनी नियतम् ॥
सा भवति दुश्चरित्रा कन्यैव च कोत्र सन्देहः॥ २६॥

अन्वयार्थौः-(यस्याः पादप्रदेशिनी नियतं अंगुष्ठात् अधिका स्यात्) जिस स्त्रीके पांवके अँगूठेके पासकी अँगुली अंगूठेसे निश्चय बडी होय (सा कन्या एव दुश्चरित्रा भवति अत्र कः संदेहः) सो कन्याहीपनमें व्यभिचारिणी होती है-इसमें क्या संदेह है ॥ २६ ॥

अथ नखलक्षणम् ।

आताम्ररुचयः स्निग्धाः समुन्नताः शुभा नखराः ॥
वृत्ता मसृणाः स्त्रीणां न पुनः शस्ता विपर्यस्ताः॥२७॥

अन्वयार्थौः-(आताम्ररुचयः स्निग्धाः समुन्नताः वृत्ताः मसृणाः स्त्रीणां नखराः शुभाः) कुछ लाल है रंग जिनके अच्छे चमकदार ऊंचे गोल चिकने ऐसे स्त्रियोंके नख अच्छे हैं और (पुनः विपर्यस्ताः न शस्ताः) इससे विपरीत जो होयँ तो अच्छे नहीं हैं ॥ २७ ॥

अथ पृष्ठलक्षणम् ।

कमठोन्नतेन मृदुना चेच्छिरारहितेन पीनेन ॥
राज्ञीत्वं पृष्ठेन न स्त्रीणां स्यातपादपीठेन ॥ २८ ॥

अन्वयः-(कमठोन्नतेन मृदुना चेत् शिरारहितेन पीनेन एतादृशेन पृष्ठेन स्त्रीणां मध्ये राज्ञीत्वं स्यात्-पादपीठेन पृष्ठेन न) अस्यार्थः-कछुवेकीसी ऊंची मुलायम और नसें नहीं निकली होयँ

और मोटी ऐसी पीठसे त्रियोंके बीचमें स्त्री रानी होतीहै और-चौकीकीसी भाँतिसे पीठ होय तो रानीपन नहीं होय ॥ २८ ॥

रोमान्वितेन दासी निर्मांसेनाधमा भवति नारी ॥
मध्यनतेन दरिद्रा दौर्भाग्यवती शिरालेन ॥ २९ ॥

अन्वयार्थौः–(रोमान्वितेन पृष्ठेन दासी भवति) जिसकी पीठ-पर रोम बहुत होंय वह दासी होय और (निर्मांसेन पृष्ठेन नारी अधमा भवति) जो मांसरहित पीठ होयँ तो वह स्त्री नीच होती है और (मध्यनतेन पृष्ठेन दरिद्रा भवति) जो बीचमें नीची पीठ होय तो दरिद्रिनी होय और (शिरालेन पृष्ठेन नारी दौर्भाग्यवती भवति) जिसमें नसें निकली हुई चमकती होयँ ऐसी पीठवाली स्त्री अभागिनी होतीहै ॥ २९ ॥

अथ गुल्फलक्षणम् ।

गूढौ सुखाय गुल्फौ वर्तुलौ शिराराहितावशिथिलौ ॥
विषमौविकटौ ख्यातौ गुल्फौ दौर्भाग्याय नियतम् ३०

अन्वयार्थौः–(गूढौ वर्तुलौ शिराराहितौ अशिथिलौ एतादृशौ गुल्फौ सुखाय भवतः) मांसमें दबेहुए गोलाई लिये नसें न प्रकट होयँ जिसमें और ढीले नहीं कड़े होंय तो ऐसी टकनेवाली स्त्री सुखी रहतीहै और (विषमौ विकटौ ख्यातौ एतादृशौ गुल्फौ नियतं दौर्भाग्याय भवतः) जो ऊंचे नीचे कडे प्रकट होंय तो ऐसी टकनेवाली स्त्री निश्चय अभागिनी रहती है ॥ ३० ॥

अथ पार्ष्णिलक्षणम् ।

सौख्यवती समपार्ष्णिः पृथुपार्ष्णिर्दुर्भगा नारी ॥
उन्नतपार्ष्णिः कुलटा दुःखवती दीर्घपार्ष्णिः स्यात् ३१

अन्वयार्थौ:-(समपार्ष्णिः नारी सौख्यवती स्यात्) बराबर पाँवके फाबेवाली स्त्री सुखी रहै और (पृथुपार्ष्णिः नारी दुर्भगा स्यात्) जो चौड़े छितरे पाँवके फाबेवाली स्त्री कुरूपिनी होतीहै और (उन्नतपार्ष्णिः नारी कुलटा स्यात्) ऊंचे पाँवके फाबेवाली स्त्री व्यभिचारिणी अर्थात् घरघर फिरनेवाली होतीहै और(दीर्घपार्ष्णिः नारी दुःखवती स्यात्) लंबे पाँवके फाबेवाली स्त्री दुःखी रहताहै ॥ ३१ ॥

इति प्रथमदशी पूर्णा ।

अथ जंघालक्षणम् ।

स्निग्धे रोमविहीने यस्याः क्रमवर्तुले समे विशिरे ॥
पादाम्बुजमाले इव जंघे सा भवति नृपपत्नी ॥ ३२ ॥

अन्वयः--(यस्याः जंघे स्निग्धे रोमविहीने क्रमवर्तुले समे विशिरे इव पादांबुजमाले सा नृपपत्नी भवति) अस्यार्थः--जिस स्त्रीकी पिंडली अच्छी चिकनी रोमरहित क्रमसे गोल बराबर नसें न चमकतीहों और चरणकमलकीसी माला होय सो राजाकी रानी होतीहै ॥ ३२ ॥

शुष्के पृथू विशाले शिरान्विते स्थूलपिंडके यस्याः ॥
जंघे मांसापचिते श्लथजानू पांशुला सा स्यात् ॥ ३३ ॥

अन्वयः-- यस्याः जंघे पृथू विशाले शिरान्विते शुष्के मांसापचिते श्लथजानू स्थूलपिण्डके भवतः सा पांशुला स्यात्) अस्यार्थः--(जिस स्त्रीकी पिंडली चौड़ी बड़ी नसें चमकती हुई सूखी थोड़े मांसकी ढीले हैं घुटनेके ऊपरके भाग जिनमें और मोटे पिंड होयँ सो स्त्री व्यभिचारिणी होतीहै ॥ ३३ ॥

जंघे खररोमे वै वायसजंघोपमेऽथवा यस्याः ॥

मारयति पतिं यदिवा प्रायः सा स्वैरिणी भवति ॥३४॥

अन्वयार्थौः–(यस्याः जंघे खररोमे वा वायसजंघोपमे वै भवतः सा पतिं मारयति) जिस स्त्रीकी पिंडली खरदरे रोमवाली अथवा कौवेकी पिंडलीके तुल्य जो निश्चय करके होय सो स्त्री पतिको मारतीहै और (यदि वा प्रायः स्वैरिणी भवति) जो बहुधा करके व्यभिचारिणी होतीहै ॥ ३४ ॥

एकैकमेव भूपतिपत्नीनां रोमकूपेषु रोम स्यात् ॥
सामान्यानामथवा द्वित्र्यादयस्तथैव विधवानाम्॥३५

अन्वयार्थौः–(भूपतिपत्नीनां रोमकूपेषु एकैकमेव रोम स्यात्) राजाओंकी रानीके बालोंके छेदोंमें एकही एक रोम होताहै और (सामान्यानां अथवा विधवानां रोमकूपेषु तथैव रोमाद्वित्र्यादयो भवंति) जो सामान्य और स्त्रियोंके अथवा विधवाओंके उन्हीं बालोंके छेदोंमें दो तीन आदि करके रोम होतेहैं ॥ ३५ ॥

अथ जानुकथनम् ।

यस्या जानुयुगं स्यादनुल्बणं पिशितमग्नमतिवृत्तम् ॥
सा लक्ष्मीरिव नियतं सौभाग्यसमन्विता वनिता ३६॥

अन्वयार्थौः–(यस्याः जानुयुगं अनुल्बणं पिशितमग्नं अतिवृत्तं स्यात्) जिस स्त्रीके दोनों घुटनोंके ऊपरके भाग बडे और बुरे न होयँ और मांसमें गढ़े और बहुत गोल होंय (सा वनिता नियतं सौभाग्यसमन्विता लक्ष्मीः इव भवति) सो स्त्री निश्चय करके सौभाग्य युक्त लक्ष्मीकी भांति होती है ॥ ३६ ॥

निर्मांसैः स्वैरिण्यो विविधाभैः सदाध्वगा नार्यः ॥
विश्लिष्टैर्धनहीना जायन्ते जानुभिः प्रायः॥ ३७॥

अन्वयार्थौ:-(निर्मांसैः जानुभिः नार्यः स्वैरिण्यो भवन्ति) थोड़े मांसवाली जानुकरके स्त्री व्यभिचारिणी होती हैं और (विविधाभैः नार्यः सदाध्वगा भवन्ति) अनेक सूरतकी जानु करके स्त्री सदा मार्ग चलनेवाली होती हैं और (विश्लिष्टैः जानुभिः नार्यः प्रायः धनहीनाः जायन्ते) जों छितरीसी जानुवाली होयँ वे स्त्री बहुधा धनहीन होती हैं ॥ ३७ ॥

अथोरुकथनम्।

मदनगृहस्तंभौ यौ कदलीकाण्डोपमावूरू ॥
यस्याः करिकरवृत्तावरोमशौ भूपपत्नी स्यात् ॥ ३८ ॥

अन्वयः--(यस्याः यौ ऊरू मदनगृहस्तंभौ कदलीकांडोपमौ करिकरवृत्तौ अरोमशौ सा भूपपत्नी स्यात्) अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी जो दोनों जाँघें कामदेवके घरके खंभे--केलेके वृक्षके तुल्य और हाथीकी सूंडकी बराबर गोल और रोमरहित होयँ सो राजाकी स्त्री अर्थात् रानी होतीहै ॥ ३८ ॥

मांसोपचितैर्विशिरैः करभकरोपमैरोमभिर्मृदुभिः ॥
आसादयन्ति सततं मदनक्रीडासुखं नार्यः ॥ ३९ ॥

अन्वयः-(नार्यः मांसोपचितैः विशिरैः अरोमभिः घनैः मृदुभिः करभकरोपमैः ऊरुभिः सततं मदनक्रीडासुखं आसादयन्ति) अस्यार्थः-जिन स्त्रियोंकी दोनों जाँघें मांससे भरीहुई नसें चमकती न होयँ रोमरहित होंय मोटी कोमल हाथीकी सूंडके तुल्य होयँ तौ ऐसी जाँघोंसे स्त्री निरंतर कामदेवके सुखको भोगतीहै ३९

चलमांसैर्दौर्भाग्यं वैधव्यं लोमशैः खरैर्नैःस्वम् ॥
मध्यक्षुद्रैर्दुःखं तनुभिर्वधमूरुभिर्याति ॥ ४० ॥

अन्वयार्थौ:--(चलमांसैः ऊरुभिः नारी दौर्भाग्यं याति) मांससे ढीली दोनों जाँघें जो स्त्रीकी होयँ तौ अभागी होती है और (लोमशैः खरैः ऊरुभिः नारी नैःस्वं वा वैधव्यं याति) रोमोंसहित खरदरी जाँघोंसे स्त्री दरिद्रिनी और विधवा होती है और (मध्यक्षुद्रैः तनुभिः ऊरुभिः नारी दुःखं तथा वधं याति) बीचमें छोटी और पतली जाँघों करके स्त्री दुःख और मरणको पाती है ॥ ४० ॥

इति द्वितीयदशी पूर्णा।

अथ नितम्बबिम्बम्।

दक्षा चतुरन्वितविंशत्यंगुलविनता कटिः समा कठिना।
उन्नतनितम्बबिम्बा चतुरस्रा शोभना स्त्रीणाम् ॥ ४१ ॥

अन्वयः–(स्त्रीणां कटिः चतुरन्वितविंशत्यंगुलविनता समा कठिना उन्नतनितम्बबिम्बा चतुरस्रा शोभना दक्षा भवति) अस्यार्थः–स्त्रियोंकी कमर जो २४ अंगुलकी झुकीहुई और बराबर कड़ी ऊंचे हैं कूले जिसके और चौकोर ऐसी कमर शोभायमान अच्छी होती है ॥ ४१ ॥

विनता दीर्घा चिपिटा निर्मांसा संकटा कटिर्विकटा ॥
ह्रस्वा रोमयुता या सा वनिता दौर्भाग्यदुःखकरी॥४२।

अन्वयः–(स्त्रीणां या कटिः विनता दीर्घा चिपिटा निर्मांसा संकटा विकटा ह्रस्वा रोमयुता स्यात् सा वनिता दौर्भाग्या दुःखकरी भवति) अस्यार्थः–स्त्रियोंकी कमर जो बहुत झुकीहुई और लंबी चपटी मांसरहित सूखी भयंकर बुरी छोटी रोमयुक्त होय सो कमर स्त्रियोंकी अभाग्य और दुःखके करनेवाली होतीहैं ॥४२॥

सुदृशां नितम्बबिम्बः समुन्नतो मांसलः पृथुः पीनः ॥

स्मरभूपस्य सुवर्णक्रीडाचुलुक इव रतिनिमित्तम्॥४३॥

अन्वयः–(सुदृशां नितम्बबिम्बः समुन्नतः मांसलः पृथुः पीनः स्यात्–रतिनिमित्तं स्मरभूपस्य सुवर्णक्रीडाचुलुक इव) अस्यार्थः–स्त्रियोंके कूले बराबर ऊंचे मांससे भरे चौड़े मोटे होंय तौ रति करनेके निमित्त कामदेव राजाके खेलनेका मानों सुवर्णका बाजाहै ॥ ४३॥

विकटश्चिपिटो नतिमान्निर्मांसो रोमशः खरः शुष्कः ॥
कुरुते नितम्बफलको दरिद्रतां दुःखदौर्भाग्यम् ॥ ४४॥

अन्वयः–(विकटः चिपिटः नतिमान् निर्मांसः रोमशः खरः शुष्कः नितम्बफलकः दरिद्रतां वा दुःखदौर्भाग्यं कुरुते) अस्यार्थः–भयानक चपटे झुकेहुए नीचे थोड़े मांसके रोमवाले खरदरे सूखे ऐसे जो कूले होंय तौ दरिद्र वा दुःख वा अभाग्यको करतेहैं ॥ ४४ ॥

अथ स्फिक्कथनम् ।

वलिभिर्मुक्तौ पीनौ कपित्थफलवर्तुलौ स्फिजौ नार्याः॥
मृदुलौ घनमांसयुतौ रतिसौख्यं वितरतः सततम्॥४५॥

अन्वयः–(वलिभिर्मुक्तौ पीनौ कपित्थफलवर्तुलौ मृदुलौ घनमांसयुतौ नार्याः स्फिजौ सततं रतिसौख्यं वितरतः) अस्यार्थः–विनासलवटके कडेमांसके कैतकेसे फलके तुल्य गोल कोमल बहुत मांसयुक्त जो स्त्रीकी कमरके दोनों ओरके मांसके पिंड होंय तौ ऐसे निरंतर रतिके सुखको देते हैं ॥ ४५ ॥

परुषं रूक्षं चिपिटं स्फिग्युग्मं मांसरहितं न शुभम् ॥
तदपिच विलम्बमानं धत्ते वैधव्यमचिरेण ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौः—(परुषं रूक्षं चिपिटं मांसरहितं स्फिग्युग्मं शुभं न) खरदरे रूखे चिपटे मांसरहित जो कमरके दोनों ओरके पिंड होंय तौ शुभ नहीं हैं और (तदपि स्फिग्युग्मं विलम्बमानं भवति तर्हि अचिरेण वैधव्यं धत्ते) जो वेही दोनों ओरके मांसके पिंड लम्बे और लटकते ढीले होंय तौ शीघ्रही विधवापनको करते हैं ॥ ४६ ॥

प्राक् सव्येन निषीदति पदेन सा सुखं सदा लभते ॥
या पुनरपसव्येन स्फुटं सा कष्टमेणाक्षी ॥ ४७ ॥

अन्वयार्थौः—(या एणाक्षी प्राक् सव्येन पदेन निषीदति सा सदा सुखं लभते) जो स्त्री पहले बायें पगकरके चलै और बैठै सो सदा सुखको पाती है और (या अपसव्येन निषीदति सा स्फुटं कष्टं लभते) जो पहले दाहिने पगसे चलै और बैठै सो प्रकट दुःखको पाती है ॥ ४७ ॥

अथ भगलक्षणम् ।

अश्वत्थदलाकारः कुंभिस्कंधोपमो भगः पृथुलः ॥
पूर्णेन्दुबिम्बतुल्यः कच्छपपृष्ठः शुभः सुदृशाम् ॥४८॥

अन्वयः—(अश्वत्थदलाकारः कुंभिस्कंधोपमः पृथुलः पूर्णेन्दुबिम्बतुल्यः कच्छपपृष्ठः एतादृशः सुदृशां भगः शुभः) अस्यार्थः—पीपलके पत्तेके आकार—और हाथीके कंधेके तुल्य चौडी मांसल चंद्रमाके बिम्बके तुल्य—कछुवेकी पीठकीसी ऐसी स्त्रियोंकी योनि होय तौ शुभ है अच्छी है ॥ ४८ ॥

स्निग्धो मृदुकुशरोमा मांसोपचितो भगोभवेद्यस्याः ॥
सा पुत्रवती नियतं लभते रतिसौख्यसौभाग्यम् ॥४९॥

अन्वयार्थौः—(यस्याः भगः स्निग्धः मृदुकुशरोमा मांसोपचितः

वेत्) जिस स्त्रीकी योनि अच्छी चिकनी नरम और थोड़े हैं रोम जिसपर-मांससे भरीहुई होय (सा पुत्रवति नियतं वा रतिसौख्य-सौभाग्यं लभते) सो पुत्रवती निश्चय होय और रतिके सुख और सौभाग्यको पाती है ॥ ४९ ॥

नियतं भगोऽङ्गनायाः प्रसूयते दक्षिणोन्नतः पुत्रान् ॥
वामोन्नतस्तु कन्या जगति समुद्रस्य वचनमिदम् ॥ ५० ॥

अन्वयार्थौ:-(यस्याः अंगनायाः भगः नियतं दक्षिणोन्नतः स्यात् सा पुत्रान् प्रसूयते) जिस स्त्रीकी योनि निश्चय दाहिनी ओरको ऊंची होय सो पुत्रोंको उत्पन्न करै है और (वामोन्नतः भगः कन्याः प्रसूयते) जो बाँई ओरकी योनि ऊंची होय तो कन्याओंको उत्पन्न करै है (जगति इदं समुद्रस्य वचनम्) लोकमें यह समुद्रका वचन है ॥ ५० ॥

यस्याःस्याच्चतुरस्रा कच्छपपृष्ठा स्थिरा श्रोणी ॥
सा वै प्रबलान्पुरुषान्रोहिणी भूरिव रमणी सूते ॥ ५१ ॥

अन्वयार्थौ:-(यस्याः श्रोणी चतुरस्रा कच्छपपृष्ठा स्थिरा स्यात्) जिस स्त्रीकी योनि चौकोर और कछुवेकी पीठके तुल्य उठी हुई कडी होय (सा रमणी रोहिणी भूरिव वै प्रबलान् पुरुषान् सूते) सो स्त्री रोहिणी और पृथ्वीकी भाँति प्रबल पुरुषोंको उत्पन्न करै है॥ ५१ ॥

बहुलोर्द्ध्वकृष्णरोमा सुश्लिष्टः संहितो भगः शस्तः ॥
गूढमणिश्चिंतामणिरिव भुवि विततं धनं तनुते ॥ ५२ ॥

अन्वयार्थौ:-(बहुलोर्द्ध्वकृष्णरोमा सुश्लिष्टः संहितः गूढमणिः भगः शस्तः) बहुत हैं ऊंचे काले रोम जिसपे और मिली हुई अच्छी बनावटकी और छिपी है मणि कहिये टोंटनि जिसकी ऐसी योनि अच्छी होती है (सः भगः भुवि चिंतामणिरिव विततं धनं त-

नुते) वही योनि पृथ्वीमें चिंतामणिकी भाँति बहुत धनको पैदा करती है ॥ ५२ ॥

विस्तीर्णोम्बुजवर्णो मृदुतनुरोमाल्पनासिकस्तुङ्गः ॥
द्विरदस्कन्धसमःस्यात्स्त्रीणां षडमी भगाः सुभगाः५३

अन्वयः–(विस्तीर्णः अम्बुजवर्णः मृदुतनुरोमा अल्पनासिकः तुङ्गः द्विरदस्कन्धसमः स्त्रीणां अमी षट् भगाः सुभगाः) अस्यार्थः– चौड़ी, और कमलके रंग, नरम, थोड़े रोमवाली और छोटी है नासिका जिसकी, ऊंची, हाथी के कंधेकी समान, स्त्रियोंकी ऐसी यह छः योनि अच्छी होती हैं ॥ ५३ ॥

रुचिरोत्युष्णः सुघनो गोजिह्वाकर्कशोथवा मृदुलः ॥
अत्यंतसुसंवृत्तःसुगंधीच सप्तभगा वर्द्धयंति रतिम्५४

अन्वयः–(रुचिरः अत्युष्णः सुघनः गोजिह्वाकर्कशः मृदुलः अत्यंतसुसंवृत्तः सुगंधी एते सप्त भगाः रतिं वर्द्धयन्ति) अस्यार्थः– अच्छी–बहुत गरम–कड़ी–गायकी जीभकीसी खरदरी–नरम–बहुत गोल–अच्छी गंधवाली–ये सात प्रकारकी योनि सुख भोगको बढ़ाती हैं ॥ ५४ ॥

विस्पष्टः स्थूलमणिः संकीर्णः खर्पराकृतिः स्त्रीणाम् ॥
खरकुटिलः खररोमा मांसविहीनो भगो न शुभः ॥५५

अन्वयः–(विस्पष्टः स्थूलमणिः संकीर्णः खर्पराकृतिः खर-कुटिलः खररोमा मांसविहीनः स्त्रीणां ईदृशो भगः न शुभः) अस्यार्थः–दीखै है मोटी मणि जिसमें–सँकड़ी–खपरेके आकार-या -खरदरी टेढ़ी–खरदरे मोटे बाल–मांसरहित सूखीसी–ऐसी स्त्रियों ॥४की योनि शुभ नहीं है ॥ ५५ ॥

सोप

चुल्लीकोटरतुल्यास्तिलपुष्पनिभः कुरंगखुररूपः ॥
विश्वप्रेष्यां निःस्वां प्रकुर्वते त्रयो भगाः स्त्रियं नूनम्॥५६

अन्वयः—(चुल्लीकोटरतुल्यः तिलपुष्पनिभः कुरंगखुररूपः एते त्रयो भगाः स्त्रियं नूनं विश्वप्रेष्यां निःस्वां प्रकुर्वते)अस्यार्थः—चूल्हेसी—वृक्षकी खोंडरके तुल्य—औरतिलके फूलके तुल्य—और हिरणकी खुरीके आकार ऐसी तीन प्रकारकी योनि स्त्रीको निश्चय पूरी टहलनी चलनेवाली और दरिद्रिनी करती हैं ॥५६॥

विसृतमुखो नारीणामुलूखलाभो भगः सुदुर्गन्धः ॥
कुंजररोमा सततं कुरुते दुःशैल्यदौर्भाग्यम् ॥ ५७ ॥

अन्वयः—(विसृतमुखः उलूखलाभः सुदुर्गन्धः कुञ्जररोमा एतादृशः नारीणां भगः सततं दुःशैल्यदौर्भाग्यं कुरुते) अस्यार्थः—खुले हुए मुखकी—ओखलीसी—बुरी गंधवाली—हाथीकेसे रोम होंय तौ ऐसी स्त्रियोंको योनि निरंतर दुःख और अभाग्यको करै है ॥५७॥

श्रोणीबिम्बेनालं सत्कीचक्रनवदलसमश्रिया नारी ॥
सुखिता प्रायः प्रथमं पश्चात्सा दुःखिता भवति ॥ ५८ ॥

अन्वयः—(सत्कीचकनवदलसमश्रिया श्रोणीबिम्बेन नारी प्रायः प्रथमं अलं सुखिता भवेत् सा पश्चाद्दुःखिता भवति) अस्यार्थः—बाँसके नवीन पत्तेकीसी है शोभा जिसकी ऐसी योनि करके स्त्री बहुधा पहले तौ सुख पाती है—और पीछे दुःखको प्राप्त होती है ॥ ५८ ॥

शंखावर्त्तसमाना श्रोणी प्रायः प्रजायते यस्याः ॥
धारयति सा न गर्भं निषेव्यमाणा च दुःखकरी५९॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः श्रोणी शंखावर्त्तसमाना प्रायः प्रजायते सा गर्भं न धारयति) जिस स्त्रीकी योनि शंखके आकार होय सो गर्भको

नहीं धारण करै है और (सा निषेव्यमाणा सती दुःखकरी भवेत्) वह सेवन करनेमेंभी दुःखके करनेवाली होती है ॥ ५९ ॥

वेतसपर्णसमानं संकीर्णं श्रोणिबिम्बमिव यस्याः ॥
असती सा न कदाचन कल्याणपरंपरा नियतम् ॥६०

अन्वयार्थौः-(यस्याः संकीर्णं श्रोणिबिम्बं वेतसपर्णसमानं इव भवेत्) जिस स्त्रीकी सँकडी योनि वेतके पत्तेकी समान होय (सा असती) सो स्त्री अच्छी नही होगी और (कदाचन नियतं कल्याणपरंपरा न) कभीभी निश्चय करके भलाईकी करनेवाली नहीं है ॥ ६० ॥

तनुरेताः खररोमा संक्षिप्तो दीर्घनासिको विकटः ॥
विवृतास्यो नारीणां जगति भगा दुर्भगाःषडमी॥६१॥

अन्वयार्थौः-(नारीणां जगति अमी षड्भगाः दुर्भगाः भवन्ति) स्त्रियोंकी लोकमें ये छः प्रकारकी योनि बुरी होती हैं (तनुरेताः खररोमा संक्षिप्तः दीर्घनासिकः विकटः विवृतास्यः न शस्तः) थोड़े वीर्यवाली-खरदरे रोमवाली-बहुत छोटी-बडी नाकवाली-और भयंकर-खुले मुखवाली, ये अच्छी नहीं हैं ॥ ६१ ॥

वलिसहितोद्भवसहितो प्रलम्बमानोथ शीतलः शिथिलः
नीचमुखोप्यथ पृथुलः सप्तामी रतिषु दुःखकृताः ६२॥

अन्वयः-(वलिसहितः उद्भवसहितः प्रलम्बमानः शीतलः शिथिलः नीचमुखः पृथुलः रतिषु अमी सप्त भगाः दुःखकृताः भवंति) अस्यार्थः-सलवटेंवाली-कुछ दिनोंके गर्भवाली-लंबी-ठंढी-पिलपिली-लटकी हुई ढीली-चौड़ी मोटी-भोगमें ये ७ प्रकारकी योनि दुःखके करनेवाली हैं ॥ ६२ ॥

जघने भगस्य भालं विस्तीर्णं मांसलं समुत्तुंगम् ॥
तनुकृष्णमृदुलरोम प्रदक्षिणावर्त्तमिह शस्तम् ॥ ६३ ॥

अन्वयः--(इह जघने भगस्य भालं एतादृशं शस्तं–विस्तीर्ण–मांसलं–समुत्तुंगं–तनुकृष्णमृदुल रोम–प्रदक्षिणावर्त्तं) अस्यार्थः--इस लोकमें पेडूके ऊपरी भागकी जो भगहै उसका जो भाल ऐसा होय तौ अच्छाहै–लंबा चौडा–मांसका भरा गुदगुदा=ऊंचा थोड़े काले नरम रोमोंसहित–दाहिनी ओरको झुकाहुवा–ऐसा भगका भाल अच्छा है ॥६३॥

विषमं वामावर्तं निर्मांसं संकटं खरं विनतम् ॥
भवति तदेव स्त्रीणां वैधव्यविधायकं प्रायः ॥ ६४ ॥

अन्वयः--(स्त्रीणां तदेव भगस्य भालं विषमं वामावर्त्तं निर्मांसं संकटं खरं विनतं भवेत् प्रायः तत् वैधव्यविधायकं भवति)अस्यार्थः–स्त्रीयोंका सोई भगका भाल--ऊंचा नीचा–बाईओरको झुका हुवा–मांसरहित–सुकड़ा हुवा–खरदरा–झुकाहुवा होय तौ बहुधा करिके विधवापनको करनेवाला होताहै ॥ ६४ ॥

अथ बस्तिकथनम् ।

विपुला बस्तिः शस्ता युवतीनामीषदुन्नता मृद्वी ॥
अभ्युन्नता शराभा लेखा किन्तु रोमशा न शुभा ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौ--(युवतीनां बस्तिः विपुला ईषत् उन्नता मृद्वी शस्ता) स्त्रियोंका पेडू बड़ा चौड़ा थोड़ा ऊंचा नरम होय तौ अच्छाहै और (किन्तु अभ्युन्नता शराभा रोमशा लेखा न शुभा) जो बहुत ऊंचा तीरके तुल्य बहुत रोमोंकी धारी होय तौ शुभ नहींहै ॥ ६५ ॥

इति तृतीयदशी पूर्णा ॥

अथ नाभिशुभाशुभलक्षणम् ।

नाभिः शुभा गभीरा सुदृशां वृत्ता प्रदक्षिणावर्ता ॥
स्मरनृपमुद्रेवोपरि रतिमणिकोशस्य रमणस्य ॥ ६६॥

अन्वयार्थौः--(सुदृशां वृत्ता नाभिः गभीरा प्रदक्षिणावर्ता शुभा) स्त्रियोंकी गोल टूंडी गहरी दाहिनी ओर झुकीहुई शुभहै और) रति मणिकोशस्य रमणस्य उपरि स्मरनृपमुद्रा इव) रतिके मणिके खजाने के ऊपर पतिकी कामदेव राजाकी ये मानो मुहर अर्थात् छाप है ॥ ६६ ॥

यस्या विस्तीर्णा स्यान्नवपंकजकर्णिकाकृतिर्नाभिः ॥
सा स्फुटसौभाग्यधनं लभते सुखसंपदां सपदि ॥ ६७॥

अन्वयार्थौः--(यस्याः नाभिः विस्तीर्णा स्फुटनवपंकजकर्णि-काकृतिः स्यात्) जिस स्त्रीकी नाभि बहुत लंबी चौड़ी है मुख जिसका प्रकट नये कमलकासा है भीतरी अंकड़ेदार ऐसा आकार जिसका होय (सा स्त्री सपदि सौभाग्यधनं सुखसंपदां लभते) सो स्त्री शीघ्रही संपूर्ण सौभाग्य धन और सुख लक्ष्मीको पावै है ॥ ६७॥

नाभिर्गभीरविवरा तरुणजनमनोहरा भवति यस्याः ।
सा जायते मृगाक्षी नियतं पुरुषप्रिया प्रायः ॥ ६८ ॥

अन्वयार्थौः--(यस्याः नाभिः गभीरविवरा तरुणजनमनोहरा भवति) जिस स्त्रीकी टूंडी गहरी अच्छी और तरुणजनोंके मनको हरनेवाली होय (सा मृगाक्षी प्रायः नियतं पुरुषप्रिया जायते) सो स्त्री बहुधा निश्चय करके पतिकी प्यारी होतीहै ॥ ६८ ॥

वामावर्ता यस्या व्यक्ताग्रंथिः समुत्ताना ॥
सा दुर्भगा पुरंध्रीविगर्हिता स्यात्परप्रेष्या ॥ ६९ ॥

अन्वयार्थौः--(यस्याः वामावर्ता व्यक्ता ग्रंथिः समुत्ताना स्यात्)

जिस स्त्रीकी टूंडीकी गांठि अर्थात् टुंड वांई ओरको झुकीहुई प्रकट ऊंची गाँठि होय तौ (सा पुरंध्री विगर्हिता परप्रेष्या तथा दुर्भगा भवति) सो स्त्री निंदा करनेयोग्य बुरी और टहलनी दूसरोंकी, बुरी सूरतकी होतीहै ॥ ६९ ॥

इति नाभिकटिचतुर्थदशी पूर्णा ।

अथ कुक्षिः ।

घनतनया जायन्ते सुकुमारैः कुक्षिभिः पृथुभिः ॥
मंडूककुक्षिरबला धन्या नृपतिं सुतं सूते ॥ ७० ॥

अन्वयार्थौः—(सुकुमारैः पृथुभिः कुक्षिभिः घनतनया जायन्ते) अच्छी गुलगुली नरम—लंबी चौड़ी कोखेंकरके बहुत पुत्र होते हैं और (मंडूककुक्षिः अबला धन्या तथा नृपतिं सुतं सूते) मैंडक कीसी कोखसे स्त्री धन्य है और राजपुत्रको उत्पन्न करती है ॥ ७० ॥

वंध्या भवंति वनिताः कुक्षिभिरत्युन्नतैर्युतैर्वलिभिः ॥
रोमावर्तयुतैस्ताः प्रव्रजिताः पांशुलास्तदा दास्यः ॥ ७१ ॥

अन्वयार्थौः—(वलिभिर्युतैः अत्युन्नतैः कुक्षिभिः वनिताः वंध्या भवंति) सलवटोंकरयुक्त और बहुत ऊंची कोखेंकरके स्त्री बाँझ होती है और (रोमावर्त्तयुतैः कुक्षिभिः तदा ताः वनिताः प्रव्रजिताः पांशुलाः दास्यो भवन्ति) रोमोंकी भौंरी अर्थात् चक्रकारिके युक्त कोखें होंय तो वेही स्त्री बैरागिनि—व्यभिचारिणी और दासी होती हैं ॥ ७१ ॥

अथ पार्श्वलक्षणम् ।

मग्नास्थिभिः समांसैः पार्श्वैर्मृदुभिः समैर्मृजावद्भिः ॥ या
स्यादेभिः सहिता प्रीतिसुभगा जगति जायते नियतम्

अन्वयार्थौः—(मग्नास्थिभिः समांसैः मृदुभिः समैः मृजावद्भिः) गडे हुए हैं हाड मांसमें जिसके—मुलायम और बराबर उजले (स्त्री

एतादृशैः पार्श्वैः सहिता स्यात् सा जगति नियतं प्रीतिसुभगा जायते) जो स्त्री ऐसे पाँसूओं सहित होय सो लोकमें निश्चयकरके प्रीतियुक्त सौभाग्यवती होती है ॥ ७२ ॥

यस्याः सशिरे पार्श्वे समुन्नते रोमसंयुते परुषे ॥
सा निरपत्या रमणी भवति प्रायेण दुःशीला ॥७३॥

अन्वयार्थौः- यस्याः पार्श्वे सशिरे समुन्नते रोमसंयुते परुषे भवतः) जिस स्त्रीकी पांसू नसौंसहित और ऊंची रोमसहित खरदरी होंय (सा रमणी निरपत्या प्रायेण दुःशीला भवति) सो स्त्री संतानरहित बहुधा खोटे स्वभाववाली होती है ॥ ७३ ॥

अथोदरलक्षणम् ।

उदरेण मार्दववता तनुत्वचापीननाभिसहितेन ॥
रोमरहितेन नारी नराधिपतिवल्लभा भवति ॥ ७४ ॥

अन्वयः-(मार्दववता तनुत्वचा पीननाभिसहितेन रोमरहितेन उदरेण नारी नराधिपतिवल्लभा भवति) अस्यार्थः- जिसके पेटमें मुलायमी और पतली खाल अच्छी टूंडीसहित विना रोमोंके ऐसे उदरकरके स्त्री राजाकी रानी अर्थात् प्यारी होतीहै ॥ ७४ ॥

तुच्छं दुर्जनमानसमिव जठरं भवति भूपपत्नीनाम् ॥
जनहर्षोत्कर्षकरं सज्जनचेष्टितमिव मनोज्ञम् ॥ ७५ ॥

अन्वयार्थौः-(भूपपत्नीनां जठरं दुर्जनमानसं इव तुच्छं भवति) राजाकी रानीका पेट खोटे मनुष्योंके चित्तकी भाँति हलका होता है और (जनहर्षोत्कर्षकरं सज्जनचेष्टितं इव मनोज्ञं भवति) मनुष्योंके हर्षकरनेवाला और अच्छे पुरुषोंकी चेष्टाकी भाँति सुंदर होता है ॥ ७५ ॥

कुम्भाकारं जठरं निर्मांसं वा शिरायुतं यस्याः ॥

अतिदुःखिता क्षुधार्ता सा नारी जायते प्रायः ॥ ७६ ॥

अन्वयार्थौ:-(यस्याः जठरं कुंभाकारं निर्मांसं वा शिरायुतं भवति) जिस स्त्रीका उदर घड़ेके आकार विनामांस वा नसोंकरयुक्त होय (सा नारी प्रायः क्षुधार्ता अतिदुःखिता भवति) सो स्त्री बहुधा भूखी और अतिदुःखी होती है ॥ ७६ ॥

कूष्मांडफलाकारैरुदरैः पणवोपमैर्मृदंगाभैः ॥
यवतुल्यैर्दुःशीलाः क्लेशायासं स्त्रियो यांति ॥ ७७ ॥

अन्वयः-(स्त्रियः कूष्मांडफलाकारैः पणवोपमैः मृदंगाभैः यवतुल्यैः उदरैः दुःशीलाः भवंति तथा क्लेशायासं यान्ति) अस्यार्थः-स्त्री जे हैं ते कुहँडाके फलके आकार-तबला और मृदंगके तुल्य और जौके समान उदर करके खोटे आचरणकी होती हैं और क्लेश वा परिश्रमको पाती हैं ॥ ७७ ॥

भवति प्रलम्बमुदरं यस्याः सा श्वशुरमाहन्ति ॥
यस्याः पुनर्विशालं चिरापत्या दुर्भगा सापि ॥ ७८ ॥

अन्वयार्थौ:-(यस्याः उदरं प्रलम्बं भवति सा श्वशुरं आहंति) जिस स्त्रीका उदर लम्बा होय सो श्वशुरको मारती है और (यस्याः उदरं विशालं भवति सा चिरापत्या दुर्भगा च भवति)जिस स्त्रीका उदर लंबा चौड़ा होय सो बहुत देरमें संतानवाली होती है और (सा दुर्भगा अपि भवति) सोई खोटी बुरी होती है ॥ ७८ ॥

अथ वलीरोमराजिकथनम्।

असमपयोधरभाराक्रान्तेव सुबंधुरं मध्यम् ॥
मुष्टिग्राह्यं यस्याः सा सौभाग्यश्रियं श्रयते ॥ ७९ ॥

अन्वयः-(यस्याः मध्यं मुष्टिग्राह्यं सुबंधुरं भवति-असमपयोधरभाराक्रांता इव सा सौभाग्यश्रियं श्रयते) अस्यार्थः-जिस

स्त्रीका मध्यस्थल मुट्ठीमें आजाय ऐसा छोटा सुंदर होय सो स्त्री भारीकुचौंके बोझसे मानों दबी हुई सो स्त्री सौभाग्यकी शोभा लक्ष्मीको पाती है ॥ ७९ ॥

सुभगानां वै वलयं वलित्रयेणान्वितं समग्रेण ॥
नाभीलावण्याब्धेरुत्कलिका भूमिकां वहते ॥ ८० ॥

अन्वयार्थौः-(वै इति निश्चयेन सुभगानां वलयं समग्रेण वलित्रयेण अन्वितं भवति) निश्चय करके सौभाग्यवती स्त्रियोंका मध्यस्थल संपूर्ण तीन सलवटोंकर युक्त होय तौ (नाभीलावण्याब्धेः उत्कलिकां भूमिकां वहते) नाभीकी शोभाके समुद्रकीसी है लहरि जिसमें ऐसी पृथ्वीको धारण करता है ॥ ८० ॥

रोमलता तनुऋज्वी हृदयांतादुत्थिता शुभा श्यामा ॥
विशतीव नाभिकुहरे मुखेन्दुभीता यथा तिमिररेखा ८१

अन्वयार्थौ-(हृदयांतात् उत्थिता तनुऋज्वी रोमलता श्यामा शुभा) छातीके अंतसे उत्पन्न हुई जो पतलीसीधी रोमोंकी वेलि काली शुभ है (का इव मुखेन्दुभीता यथा तिमिररेखा नाभिकुहरे विशति इव) मुखचंद्रमासे डरी जैसे अंधेरेकी रेखा मानों टूंडीके बुलेमें घुसी जाती है ॥ ८१ ॥

कुटिला स्थूला कपिला व्युच्छिन्ना रोमवल्लरी यस्याः ॥
विधवात्वं दौर्भाग्यं लभते प्रायेण सा रमणी ॥ ८२ ॥

अन्वयार्थौः-(यस्याः रोमवल्लरी कुटिला कपिला विच्छिन्ना भवति) जिस स्त्रीकी रोमोंकी वेलि टेढी कुछ कवरी कई रंगकी बीचमें टूटी होय तौ (सा रमणी प्रायेण विधवात्वं च दौर्भाग्यं लभते) सो स्त्री बहुधा करके विधवापन और अभाग्यको पातीहै ॥ ८२ ॥

अथ हृदयम्।

निर्लोमं व्रणरहितं हृदयं यस्याः समं मनोहारि॥
ऐश्वर्यमवैधव्यं पतिप्रियत्वं भवति तस्याः॥ ८३॥

अन्वयार्थौः-(यस्याः हृदयं निर्लोमं व्रणरहितं समं मनोहारि स्यात्)जिसस्त्रीका हृदय विना रोमोंके किसीप्रकारका दाग अर्थात् फोड़ा फुन्सी नहीं होय जिसमें बराबर मनके हरनेवाला होय (तस्याः ऐश्वर्यं अवैधव्यं पतिप्रियत्वं भवति) तिस स्त्रीका सब प्रकारके आनंदका ठाठ और सौभाग्यपन तथा पतिकी प्यारी होतीहै॥ ८३॥

उद्भिन्नरोमकीर्णं विस्तीर्णं हृदयमिह भवेद्यस्याः॥
सा प्रथमं भर्तारं हत्वा वेश्यात्वमुपयाति॥ ८४॥

अन्वयार्थौः-(इह यस्याः हृदयं उद्भिन्नरोमकीर्णं विस्तीर्णं भवेत्) इस लोकमें जिस स्त्रीका हृदय फटा टूटा बहुत रोमयुक्त और बहुत लंबा चौड़ा होय (सा प्रथमं भर्तारं हत्वा वेश्यात्वम् उपयाति) सो स्त्री पहले पतिको मारिके फिर वेश्यापनको पाती है अर्थात् वेश्या होय चली जातीहै॥ ८४॥

पिशितविवर्जितमुन्नतविनतं हृदयं व्रणान्वितं विषमम्।
कर्मकरीत्वं तनुते वनितानां तत्क्षणादेव॥ ८५॥

अन्वयार्थौः-(यस्याः हृदयं पिशितविवर्जितं उन्नतं विनतं व्रणान्वितं विषमं भवेत्) जिस स्त्रीका हृदय मांसरहित ऊँचा झुका हुवा और फोडा फुन्सी आदि चिह्न युक्त ऊँचा नीचा होय तौ(वनितानां मध्ये तत् हृदयं कर्मकरीत्वं तत्क्षणादेव तनुते) स्त्रियोंके बीचमें वह हृदय दासीपनको शीघ्रही करै है॥ ८५॥

अथोरःस्थलम् ।

पीवरमुन्नतमायतमुरःस्थलं न मृदुलं न कठिनं विशरम्
अष्टादशांगुलमितं रोमविहीनं शुभं स्त्रीणाम् ॥ ८६ ॥

अन्वयः—(स्त्रीणां उरःस्थलं पीवरं उन्नतं आयतं न मृदुलं न कठिनं विशरं अष्टादशांगुलमितं रोमविहीनं शुभं भवति) अस्यार्थः—स्त्रियोंकी छातीकी जगह मांससे भरी हुई ऊंची लंबी चौडी न नरम न कडी और नसें न दीखती हों अठारह अंगुलके प्रमाण विना रोमोंके शुभ होती है ॥ ८६ ॥

विषमेण भवति हिंस्रा निर्मांसेनोरसा भवति विधवा ।
अति पृथुना प्रियकलहा दुःशीला रोमशेनापि ॥ ८७ ॥

अन्वयार्थौः—(विषमेण उरसा नारी हिंस्रा भवति) ऊंची नीची छाती करिके स्त्री हिंसा करनेवाली होती है और (निर्मांसेन उरसा नारी विधवा भवति) विना मांसकी छातीसे स्त्री विधवा होती है और (अतिपृथुना उरसा नारी प्रियकलहा भवति) बहुत चौडी छातीसे स्त्री कलहकी प्यारी होती है और (रोमशेन उरसा नारी अपि दुःशीला भवति) रोमोंवाली छातीसे स्त्री खोटे स्वभाव वाली होती है ॥ ८७ ॥

अथ स्तनौ ।

शस्तौ वृत्तौ सुदृढौ पीनौ कठिनौ घनौ स्तनौ सुदृशाम् ।
स्नानाय स्मरनृपतेः काञ्चन कलशाविव प्रगुणौ ८८॥

अन्वयार्थौः—(सुदृशां स्तनौ वृत्तौ सुदृढौ पीनौ कठिनौ घनौ शस्तौ भवतः) स्त्रियोंके कुच गोल अच्छे कडे मांसके भरे बहुत अच्छे होतेहैं (कौ इव स्मरनृपतेः स्नानाय प्रगुणौ काञ्चनकलशौ इव) कैसे कि मानों कामदेव राजाके स्नानके अर्थ सुंदर सोनेके यह कलशे हैं ॥ ८८ ॥

सुखसौभाग्यनिधानं समुन्नतं स्तनयुगं समं कान्तम्॥
धत्ते सुवर्णवनिता कुम्भं रुचिरं स्मरेभस्य ॥ ८९ ॥

अन्वयः-(या नारी समुन्नतं स्तनयुगं समं कान्तं सुखसौभाग्यनिधानं-सुवर्णवनिता रुचिरं स्मरेभस्य कुंभं धत्ते) अस्यार्थः-जिस स्त्रीके ऊंचे दोनों कुच बराबर सुंदर सुखसौभाग्यके निधान कहिये स्थान और-सुंदर रंगकी स्त्री मानों कामदेव हाथीके गंडस्थल कुंभको धारण करती है ॥ ८९ ॥

पुत्रः प्रथमे गर्भे पयोधरे दक्षिणोन्नते स्त्रीणाम् ॥
वामोन्नतेन पुत्री निरपत्यं चैव विषमेण ॥ ९० ॥

अन्वयार्थौः-(स्त्रीणां दक्षिणोन्नते पयोधरे प्रथमे गर्भे पुत्रो भवति) स्त्रियोंके दाहिनीओरको झुकेहुए कुचोंसे पहिले गर्भसे पुत्र होताहै और (वामोन्नतेन पयोधरेण प्रथमं पुत्री भवति) बांई ओरके झुके हुए कुचोंसे पहिले गर्भसे पुत्री होती है और(विषमेण पयोधरेण एव निरपत्यं भवति) ऊंचे नीचे कुचोंसे वह विना संतानके होती है ॥ ९० ॥

शुष्के विहीनमध्ये स्थूलाग्रे स्तनयुगेऽङ्गना नैःस्वम् ॥
लभते विरले तस्मिन्वैधव्यं पुत्रनाशं च ॥ ९१ ॥

अन्वयार्थौः-(अंगना शुष्के विहीनमध्ये स्थूलाग्रे स्तनयुगे सति नैःस्वं लभते) स्त्रीके सूखे बीचमें ऊंचे नीचे मोटे हैं आगेके भाग जिसके ऐसे दोनों कुचोंके होनेसे दरिद्रताको पावै है और (तस्मिन् स्तनयुगे विरले सति वैधव्यं च पुनः पुत्रनाशं लभते) वेही जो दोनों कुच बहुत दूर होनेसे विधवापन और पुत्रके नाशको पावै है ॥९१॥

कुरुते वक्षोजद्वयमरघटघटीनिभं पुरंध्रीणाम् ॥
सततं पूर्वसुखं तत्पश्चादत्यर्थदुःखकरम् ॥ ९२ ॥

अन्वयार्थौः—(पुरंध्रीणां वक्षोजद्वयं अरघटघटीनिभं चेत् भवति) स्त्रीयोंके जो दोनों कुच रहैंटके घडियेकी तुल्य होय तौ (सततं पूर्वसुखं कुरुते) निरंतर पहले सुखको करते हैं और पश्चात् (अतिदुःखकरं भवति) पीछे वहुत दुःखके करनेवाले होते हैं ॥ ९२ ॥

अतिनिबिडं कुचयुगलं यत्स्त्रियः पथि च यांत्याहि ॥
सौख्यं सारसवदना सौभाग्यं हन्ति शस्तकरम् ॥९३॥

अन्वयः—(पथि यान्त्याः स्त्रियः यत् कुचयुगलं अतिनिविडं स्यात् तत् सारसवदना सौख्यं शस्तकरं च पुनः सौभाग्यं हंति) अस्यार्थः—मार्गमें चलतीहुई स्त्रीके दोनों कुच जो मिल जायँ तौ कमलवदना जो स्त्री है उसका जो कल्याणकारी सुख और सौभाग्य तिसको फिर नाश करैहै ॥ ९३ ॥

सुदृशां चूचुकयुग्मं शस्तं श्यामं सुवृत्तमतिपीनम् ॥
स्मरनृपतेर्मुद्रेयं रतिसुखनिधिकोशभवनस्य ॥९४॥

अन्वयः—(सुदृशां चूचुकयुग्मं श्यामं सुवृत्तं अतिपीनं शस्तं स्मरनृपतेः रतिसुखनिधिकोशभवनस्य इयं मुद्रा) अस्यार्थः—स्त्रियोंके दोनों कुचोंकी टेटनी साँवरी—गोल और बहुत मोटी मांससे भरी हुई अच्छी होती हैं और कामदेव राजाके क्याहैं मानों रतिसुख निधिकोशके घरको ये मुहर अर्थात् छाप हैं ॥ ९४ ॥

दीर्घं चूचुकयुग्मं यस्याः सा प्रियरतिर्भवति ॥
धूर्ता चान्तर्मनसा पुनस्तेनैव द्वेष्टि सा मनुजम् ॥९५॥

अन्वयार्थौः—(यस्याः चूचुकयुग्मं दीर्घं भवति सा प्रियरतिर्भवति) जिस स्त्रीके कुचोंकी दोनों नोकें वहुत लंबी होय सो स्त्री रतिमें सुख वा प्यार करनेवाली होती है और (पुनः अन्तर्मनसा धूर्ता

सा तेनैव मनुजं द्वेष्टि) फिर वही भीतरे मनसे धूर्त और छलसे उसी मनुष्यसे वैर करती है ॥ ९५ ॥

बहिरवनतेन चूचुकयुगलेनातीव सूक्ष्मविषमेण ॥
संप्राप्य च महद्दुःखं दुःशीला जायते योषित् ॥९६॥

अन्वयः–(बहिरवनतेन अतीव सूक्ष्मविषमेण चूचुकयुगलेन योषित् महद्दुःखं संप्राप्य च पुनः दुःशीला जायते)अस्यार्थः–बाहिरकी ओर झुकेहुए और बहुत छोटे पतले ऊंचे नीचे कुचोंकी दोनों नोंकोंसे स्त्री बड़े दुःखको पाके फिर व्यभिचारिणी होती है ॥ ९६ ॥

इति स्तनषष्ठदर्शीसंपूर्णा ।

अथ जत्रुकथनम् ।

जत्रुभ्यां पीनाभ्यां धनधान्यसुतान्विता भवेद्वनिता ॥
उन्नतिसंहतिमद्भ्यां पुनरेषा भूरिभोगाढ्या ॥ ९७ ॥

अन्वयः–(एषा वनिता पीनाभ्यां जत्रुभ्यां उन्नतिसंहतिमद्भ्यां धनधान्यसुतान्विता पुनः भूरिभोगाढ्या भवति)अस्यार्थः–जो स्त्री ऊंचे मांसके भरे अच्छे बनावटके कंधोंके जोड़ोंसे धनधान्यवती और बहुत भोग करिके युक्त अर्थात् भोगवती होती है ॥ ९७ ॥

श्लथकीकससंधिमता निम्नेन द्रविणलेशपरिहीना ॥
जत्रुयुगलेन योषिद्विषमेण पुनर्भवति विषमा ॥९८॥

अन्वयार्थौः–(श्लथकीकससंधिमता निम्नेन जत्रुयुगलेन योषित् द्रविणलेशपरिहीना भवति) ढीले हाडोंकी संधिवाले नीचे ऐसे कंधोंके जोड़ोंसे स्त्री थोड़ेसे धनकरिकेभी हीन होती है और (पुनः विषमेण जत्रुयुगलेन योषित् विषमा भवति)फिर ऊंचे नीचे कंधोंके जोडों करिके स्त्री नटखट खोटी विषके तुल्य होतीहै ॥ ९८ ॥

यस्या वंध्या वनिता स्कंधयुगं किंचिदुन्नतं मूले ॥
नातिकृशदीनदीर्घं सुखसौभाग्यप्रदं सुदृशाम्॥९९॥

अन्वयार्थौः--(यस्याः स्कंधयुगं मूले किंचित् उन्नतं सा वनिता वंध्या भवति) जिस स्त्रीके दोनों कंधे जड़में कुछ ऊंचे होंय सो स्त्री बाँझ होती है और (सुदृशां नातिकृशपीनदीर्घं स्कंधयुगं सुखसौभाग्यप्रदं भवति) स्त्रियोंके न तौ बहुत पतले न मोटे न लंबे दोनों कंधे ऐसे होंय तौ सुख सौभाग्यके देनेवाले होतेहैं ॥ ९९ ॥

ऊर्द्ध्वस्कंधा कुलटा स्थूलस्कंधापि भारवाहनपरा ॥
चक्रस्कंधा वंध्या दुःखवती रोमशस्कंधा ॥१००॥

अन्वयार्थौः--(ऊर्द्ध्वस्कंधा वनिता कुलटा भवेत्) ऊंचे कंधेवाली स्त्री खोटी होती है और (स्थूलस्कंधा वनिता भारवाहनपरा अपि भवेत्) मोटे कंधेवाली स्त्री बोझ ढोनेवाली होती है और (चक्रस्कंधा वनिता वंध्या भवेत्) चक्रवाले कंधेसे स्त्री बाँझ होती है और (रोमशस्कंधा वनिता दुःखवती भवेत्) बहुत रोमवाले कंधोंसे स्त्री दुःखपानेवाली होती है ॥ १०० ॥

अथांसकथनम् ।

निर्गूढसंधिबंधौ सुसंहतौ पिशितसंयुतौ शस्तौ ॥
अंसौ स्यातां यस्याः सा नारी भूरिसौभाग्या॥१०१॥

अन्वयार्थौः--(यस्याः अंसौ निर्गूढसंधिबंधौ सुसंहतौ पिशितसंयुतौ शस्तौ भवतः)जिस स्त्रीके कंधे छिपे हैं जोड़ोंके बंध जिसके और खूबजोडोंसे बँधेहुए मांससे भरेहुए अच्छे होते हैं और (सा नारी भूरिसौभाग्या भवति) सोई स्त्री बडी सौभाग्यवती अर्थात् पतिकी प्यारी होतीहै ॥ १०१ ॥

सुदृशां नीचौ स्कंधौ दौर्भाग्यसमन्वितौ च भवतो वै ॥
अत्युच्चैर्वैधव्यं निर्मांसैर्दुःखदारिद्र्यम् ॥ १०२ ॥

अन्वयार्थौः-(सुदृशां नीचौ स्कंधौ वै इति निश्चयेन दौर्भाग्यसमन्वितौ भवतः) स्त्रियोंके नीचे कंधे होंय तो निश्चयकरिके दुर्भाग्ययुक्त होते हैं और (अत्युच्चैः स्कंधैः वैधव्यं स्यात्) बहुत ऊंचे होंय तो विधवापन होय और (निर्मांसैः स्कंधैः दुःखदारिद्र्यं भवति) मांस रहित कंधोंसे स्त्री दुःखी और दरिद्रिनी होती है ॥ १०२ ॥

अथ कक्षाकथनम् ।

कक्षायुगं सुगंधि स्निग्धं च समुन्नतं पिशितपूर्णम् ॥
तनुमृदुलरोमसहितं प्रशस्यते प्रायशः सुदृशाम् ॥ १०३ ॥

अन्वयः-(सुदृशां कक्षायुगं सुगंधि स्निग्धं समुन्नतं पिशितपूर्णं तनुमृदुलरोमसहितं प्रायशः प्रशस्यते) अस्यार्थः-स्त्रियोंकी कांखें दोनों सुगंधित और अच्छी चिकनी ऊंची मांससे भरीहुई पतले और मुलायम रोमों करिकें युक्त बहुधा बडाईके योग्य होतीहैं ॥ १०३ ॥

अतिनिम्ने निर्मांसे प्रस्वेदमलान्विते शिराकीर्णे ॥
सोलूखलबहुरोमे कक्षे दौर्भाग्यमावहतः ॥ १०४ ॥

अन्वयः-(अतिनिम्ने निर्मांसे प्रस्वेदमलान्विते शिराकीर्णे सोलूखलबहुरोमे कक्षे दौर्भाग्यम् आवहतः) अस्यार्थः-बहुत नीचे विना मांसके पसीने और मलकरके युक्त नसें जिसमें चमकती हों सो ओखलीकी भाँति बहुत रोमवाली ऐसी कांखें अभाग्यको करती हैं १०४

इति सप्तदशी पूर्णा ।

अथ बाहुलक्षणम् ।

शस्तौ बाहू सुदृशां शिरीषतरुपुष्पकोमलौ दीर्घौ ॥

मानुषकुरंगहेतोः पाशाविव पुष्पचापस्य ॥ १०५ ॥

अन्वयार्थौः–(सुदृशां बाहू शिरीषतरुपुष्पकोमलौ दीर्घौ शस्तौ भवतः) स्त्रियोंकी दोनों भुजा सिरसके फूलकी समान कोमल और बडे लंबे होंय तौ श्रेष्ठ होतीहैं (कौ इव–मानुषकुरंगहेतोः पुष्पचापस्य पाशौ इव) मानों क्या हैं कि मनुष्य हरिणके हेतु कामदेवकी यह फाँसी हैं ॥ १०५ ॥

निर्लोम बाहुयुगलं गूढास्थिग्रंथि करिकराकारम् ॥
विश्लिष्टशिरासंधि स्त्रीणां सौभाग्यमधिशेते ॥१०६॥

अन्वयः–(स्त्रीणां बाहुयुगलं निर्लोमगूढास्थिग्रंथि करिकराकारं विश्लिष्टशिरासंधि सौभाग्यं अधिशेते) अस्यार्थः–स्त्रियोंकी दोनों भुजा विना रोमोंके और छिपी हैं हाडकी गाँठि जिसकी हाथीकी सूंडके आकार नसोंके जोड जिसमें न दीखें ऐसी भुजाओंसे सौभाग्य होता है ॥ १०६ ॥

वैधव्यं वनितानां बाहुभ्यां स्थूलरोमशाभ्यां स्यात् ॥
दौर्भाग्यं ह्रस्वाभ्यां शिरायुताभ्यां परिक्लेशः ॥१०७॥

अन्वयार्थौः–(स्थूलरोमशाभ्यां बाहुभ्यां वनितानां वैधव्यं स्यात्) मोटे रोमों करिके युक्त भुजा स्त्रियोंकी होंय तौ विधवा होय और (ह्रस्वाभ्यां बाहुभ्यां वनितानां दौर्भाग्यं स्यात्) छोटीभुजाओंसे स्त्रियाँ खोटे भाग्यकी होतीहैं और (शिरायुताभ्यां बाहुभ्यां परिक्लेशः स्यात्) नसों करिके युक्त भुजाओंसे स्त्रियोंको दुःख होता है ॥ १०७ ॥

अम्भोजगर्भसुभगंमृदुनवसहकारकिसलयाकारम् ॥
तनुविप्रकृष्टसर्वांगुलिकं पाणिद्वयं शस्तम् ॥१०८॥

अन्वयः–(अंभोजगर्भसुभगं मृदुनवसहकारकिसलयाकरं तनुविप्रकृष्टसर्वांगुलिकं एतादृशं पाणिद्वयं शस्तम्) अस्यार्थः–कमलके पुष्पके गर्भके समान सुंदर मुलायम नये आमकी कौंपलोंके तुल्य पतली जुदी जुदी सब अंगुली जिसमें ऐसे दोनों हाथ श्रेष्ठ अर्थात् अच्छे होते हैं ॥ १०८ ॥

रोमशिरापरिहीनं घनमांसं पाणितलयुगं स्निग्धम् ॥
बहुशुभमनुन्नतमनिम्नं रूक्षं खरं विवर्णं क्लेशदं भवति ॥

अन्वयार्थौ–(रोमशिरापरिहीनं घनमांसं स्निग्धं पाणितलयुगं बहुशुभं भवति) रोम और नसों करिके हीन बहुत मांसवाली चिकनी ऐसी दोनों हथेली बहुत शुभ होती हैं और (अनुन्नतम् अनिम्नं रूक्षं खरं विवर्णं पाणितलयुगं क्लेशदं भवति) ऊंची न हों नीची गहरी न हों रूखी खरदरी बुरेरंगकी होंय तौ ऐसी दोनों हथेली दुःखके देनेवाली होती हैं ॥ १०९ ॥

यस्याः पाणितलं स्याद्बहुरेखं सा निहंति भर्तारम् ॥
दौर्भाग्यं भाग्यहीनां रेखारहितं पुनस्तनुते ॥११०॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः पाणितलं बहुरेखं स्यात् सा भर्त्तारं निहंति) जिस स्त्रीकी हथेलीपे बहुत रेखा होंय सो स्त्री पतिको मारती है और (पुनः रेखारहितं पाणितलं दौर्भाग्यं भाग्यहीनां तनुते) फिर विना रेखाकी हथेलीसे खोटा भाग्य और भाग्यहीन करै है ॥ ११० ॥

नरलक्षणाधिकारे नारीणामप्यशेषमेवोक्तम् ॥
कररेखालक्ष्म पुनः किंचित्प्रस्तावतो वक्ष्ये ॥ १११ ॥

अन्वयः–(नरलक्षणाधिकारे नारीणाम् अपि अशेषं लक्षणम् उक्तं पुनः कररेखालक्ष्म किंचित् प्रस्तावतः वक्ष्ये)अस्यार्थः–जैसे पुरुषके

अधिकारमें लक्षण कहे तैसेही स्त्रियोंके संपूर्ण लक्षण उक्तसे कहे फिर हाथकी रेखाओंके चिह्न कुछ प्रसंगसे कहताहूं ॥ १११ ॥

रक्ता व्यक्ता स्निग्धा गंभीरा वर्तुलाः समा पूर्णाः ॥
रेखास्तिस्रः स्त्रीणां पाणितले सौख्यलाभाय ॥ ११२ ॥

अन्वयः-(रक्ताः व्यक्ताः स्निग्धाः गंभीराः वर्तुलाः समाः पूर्णाः स्त्रीणां पाणितले तिस्रो रेखाः सौख्यलाभाय भवंति) अस्यार्थः-लाल अच्छी प्रकट चिकनी गहरी गोल बराबर पूरी स्त्रियोंकी हथेलीमें तीन रेखा जो दीखती हों तौ सुखलाभके हेतु होती हैं ॥ ११२ ॥

मत्स्येन भवति सुभगा हस्तस्थस्वस्तिके-
न वित्ताढ्या। श्रीवत्सेन पुनः स्त्री नृपपत्नी
नृपतिमाता वा ॥ ११३ ॥

अन्वयार्थौ:-(स्त्री हस्ततलस्थेन मत्स्येन सुभगा भवति) स्त्रीकी हाथकी हथेलीमें जो मच्छीकी रेखा होय तौ सौभाग्यवती होती है और (हस्ततलस्थस्वस्तिकेन वित्ताढ्या भवति) जो हथेलीमें साथियेका चिह्न होय तौ धनवती होती है और (हस्ततलस्थेन श्रीवत्सेन नृपपत्नी वा नृपतिमाता भवति) जो हथेलीमें श्रीवत्स चिह्न होय तौ राजाकी रानी अथवा राजाकी माता होतीहै॥ ११३॥

पाणितले यस्याः स्यान्नंद्यावर्तः प्रदक्षिणो व्यक्तः ॥
भुवि चक्रवर्तिनः सा स्त्रीरत्नं भवति भोगार्हम् ॥ ११४ ॥

अन्वयः-(यस्याः पाणितले प्रदक्षिणः व्यक्तः नंद्यावर्त्तः स्यात् सा स्त्रीरत्नं भुवि चक्रवर्तिनः भोगार्हं भवति) अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी हथेलीमें दाहिनी ओर प्रकट नंद्यावर्त साथियेका चिह्न हो-

य तौ सो स्त्रीरत्न—स्त्रियोंमें श्रेष्ठ पृथ्वीमें चक्रवर्ती स्त्रियोंमें भोगनेके योग्य होती है ॥ ११४ ॥

या करतले कनिष्ठां निर्गत्यांगुष्ठमूलतो याति ॥
सा रेखा भर्तृघ्नी तद्युक्तां नोद्वहेत्कन्याम् ॥ ११५ ॥

अन्वयार्थौः–(करतले या रेखा अंगुष्ठमूलतः निर्गत्य कनिष्ठां याति) हथेलीमें जो रेखा अँगूठेकी मूलसे निकल कनिष्ठातक जाय तौ (सा रेखा भर्तृघ्नी भवेत्) सो रेखा पतिके मारनेवाली होती है और (तद्युक्तां कन्यां न उद्वहेत्) ऐसी रेखायुक्त कन्याको न विवाहै ॥ ११५ ॥

रेखाभिर्मानतुल्याभिर्जायते सा वणिग्जाया।
भवति कृषीवलपत्नी युगसीरोलूखलाकृतिभिः॥११६॥

अन्वयार्थौः–(मानतुल्याभिः रेखाभिः सा वणिग्जाया जायते) ठीक प्रमाणके तुल्य रेखाओंकरिके सो वैश्यकी स्त्री होती है और (युगसीरोलूखलाकृतिभिः रेखाभिः कृषीवलपत्नी भवति) जूवा, हल–ओखलीके आकारकी रेखाओंसे किसानकी स्त्री होती है॥११६

गजवाजिवृषभपद्माः प्रासादधनुर्भागैर्दुर्वर्जाः।
यस्याःपाणितले स्युः सा तीर्थकरस्य भुवि जननी११७

अन्वयार्थौः–(यस्याः पाणितले गजवाजिवृषभपद्माः प्रासादधनुर्भागैर्दुर्वर्जाः या रेखाः स्युः) जिस स्त्रीकी हथेलीमें हाथी घोड़ा बैल कमल महिल धनुष इन करिके रहित जो चिह्न होंय तौ (भुवि सा तीर्थकरस्य जननी भवति) पृथ्वीमें सो स्त्री तीर्थंकर अर्थात् धर्मके करनेवालेकी माता होती है ॥ ११७ ॥

शंखस्वस्तिकसागरनंद्यावर्तातपत्रातिमिकूर्मैः।
वामकरतलनिविष्टैः प्रजायते चक्रिणो माता ॥११८॥

अन्वयः--(वामकरतलनिविष्टैः शंखस्वस्तिकसागरनंद्यावर्तात-पत्रातिमिकूर्मैः चक्रिणः माता प्रजायते) अस्यार्थः--बायें हाथकी हथेलीमें जो स्थित शंख चक्र समुद्र नंद्यावर्त चिह्न आतपत्र कहिये छत्र मछली कछुवा ऐसे चिह्नों करिके चक्रवर्ती राजाकी माता होती है ॥ ११८ ॥

ध्वजतोरणभद्रासनचामरभृंगारशीर्षरेखाद्याः ॥
यस्या भवन्ति पाणौ सा जननी वासुदेवस्य ॥११९॥

अन्वयः--(यस्याः पाणौ ध्वजतोरणभद्रासनचामरभृंगार-शीर्षरेखाद्याः भवंति सा स्त्री वासुदेवस्य जननी भवति) अस्यार्थः-जिस स्त्रीके हाथमें ध्वजा तोरण राजाका आसन चमर जलकी झारी मस्तकपरभी रेखा आदि होंय तौ सो स्त्री वासुदेव अर्थात् कृष्णबलदेवकी माता होती है॥ ११९ ॥

श्रीवत्सवर्धमानांकुशगदादित्रिशूलतुल्याभिः ।
रेखाभिर्जयशब्दो वनितानां जायते सपदि ॥१२०॥

अन्वयः--(श्रीवत्सवर्धमान अंकुशगदा आदित्रिशूलतुल्याभिः रेखाभिः वनितानां जयशब्दः सपदि जायते) अस्यार्थः-श्रीवत्स वर्धमान अंकुश गदा आदि त्रिशूल इनकेसे आकार रेखा होंय तौ स्त्रियोंका जयजय बोलना शीघ्रही होता है ॥ १२० ॥

मंडूककंकजंबुकवृषकाकोलूकवृश्चिकाः सुदृशाम् ॥
रासभसैरिभकरभाः करस्थिता दुःखमाददते ॥१२१॥

अन्वयः--(सुदृशां करास्थिताः मंडूककंकजंबुकवृषकाकोलूक-वृश्चिकाःरासभसैरिभकरभाद्याः दुःखम् आददते) अस्यार्थः--स्त्रियोंके हाथमें स्थित मेंडक-कंकपक्षी-गीदुवा-बैल-कौवा--उल्लू-बिच्छू

गधा-भैंसा-ऊंट आदि जो ये चिह्न होंय तौ दुःखको देते हैं॥१२१॥

अथांगुष्ठः ।

स्त्रीणां सरलांगुष्ठः स्निग्धो वृत्तः शुभस्तथांगुलयः ॥
मृदुलत्वचः सुदीर्घाः क्रमशो वर्तुलाःसुपर्वाणः॥१२२॥

अन्वयार्थौः-(स्त्रीणाम् अंगुष्ठः सरलः स्निग्धः वृत्तः शुभो भवति) स्त्रियोंका अंगूठा सीधा सुंदर चिकना गोल ऐसा होय तौ शुभहै और (अंगुलयः मृदुलत्वचः सुदीर्घाः क्रमशः वर्तुलाः सुपर्वाणः शुभाः भवंति) अंगुलियां मुलायम पतली त्वचावाली अच्छी बराबर गोल अच्छे पोरूवोंकी ऐसी शुभ होतीहैं ॥ १२२ ॥

चिपिटाः स्फुटाश्च रूक्षाः पृष्ठे रोमान्विताः खराः वक्राः॥
अतिह्रस्वकृशा विरला विदधाति दारिद्यमंगुलयः१२३

अन्वयः-(चिपिटाःस्फुटाःरूक्षाःपृष्ठ रोमान्विताःखराःवक्राःअतिह्रस्वाः कृशाः विरलाः स्त्रीणां एतादृशा अंगुलयः दारिद्र्यं विदधाति) अस्यार्थः-चपटी प्रकट रूखीअंगुलियोंकी पीठपर रोमयुक्त खरदरी टेढी बहुत छोटी पतली जुदी जुदी स्त्रियोंकी ऐसी अंगुली होंय तौ दरिद्रके करनेवाली हैं ॥ १२३ ॥

अथ नखाः ।

स्निग्धा बंधूकरुचः सशिखास्तुंगाः शुभा नखराः ॥
सुदृशां बिभर्त्यंकुशलीलामनंगगन्धद्विपेन्द्रस्य॥१२४॥

अन्वयार्थौः-(सुदृशां नखराः स्निग्धाः बंधूकरुचः सशिखाः तुंगाः शुभाः भवंति) स्त्रियोंके नख चिकने चमकने इस्कपेचाके तुल्य उजले चोटीके जो ऊंचे होंय तौ शुभ होतेहैं और (अनंगगंधद्विपेन्द्रस्य अंकुशलीलां बिभर्ति)वे ही नख कामदेवके मतवाले हाथीके अंकुशकी शोभाको धारण करतेहैं ॥ १२४ ॥

रूक्षैर्वक्रैः पीनैः सितैर्विवर्णैः शिखाविरहितैः ॥
शुक्त्याकारैर्वनिता भवंति सौभाग्यधनहीनाः ॥१२५॥

अन्वयः-(रूक्षैः वक्रैः पीनैः सितैः विवर्णैःशिखाविरहितैः शुक्त्याकारैः नखैः वनिताः सौभाग्यधनहीनाः भवंति) अस्यार्थः-रूखे-टेढे-मोटे-सफेद-वेरंगके-उजली चोटीके-सीपीके आकार होयँ तौ ऐसे नखोंसे स्त्री सौभाग्य और धनहीन होतीहै ॥ १२५ ॥

पाणिचरणस्य यस्या जायन्ते बिन्दवो नखेषु सिताः॥
सा जगति सुसितनखा दुःखाय स्वैरिणी रमणा॥१२६॥

अन्वयः-(यस्याः पाणिचरणस्य नखेषु सिता बिंदवो जायंते जगति सुसितनखा सा रमणी स्वैरिणी तथा दुःखाय भवति) अस्यार्थः-जिस स्त्रीके हाथपाँवके नखोंमें सफेद छींटे होंय तौ संसारमें ऐसे नखवाली स्त्री व्यभिचारिणी और दुःखके अर्थ होतीहैं१२६

अथ पृष्ठिः ।

सरला शुभसंस्थाना निर्लोमा मध्यमाग्रवंशास्थिः ॥
पृष्ठिः पिशितोपचिता सुखसौभाग्यप्रदा स्त्रीणाम् १२७

अन्वयार्थौ:-(स्त्रीणां पृष्ठिः सरला शुभसंस्थाना निर्लोमा मध्यमाग्रवंशास्थिः शुभा भवति) स्त्रियोंकी पीठ सूधी अच्छे आकारकी विना रोमोंकी बीचमेंसे आगेतककी हड्डीकी शुभ होती है और (पिशितोपचिता पृष्ठिः सुखसौभाग्यप्रदा भवति) मांससे खूब भरी पीठसे सुख और सौभाग्यके देनेवाली होतीहै ॥ १२७॥

भुग्नवलितेन दासी भर्तृघ्नी भामिनी विशालेन ॥
सशिरेण सदुःखा स्याद्विधवा पृष्ठेन रोमभृता ॥१२८॥

अन्वयार्थौ-(भामिनी भुग्नवलितेन पृष्ठेन दासी स्यात्) स्त्री

टेढी सलवटोंवाली पीठसे दासी होतीहै और (विशालेन पृष्ठेन भर्तृघ्नी स्यात्) बड़ी और लंबी पीठसे पतिके मारनेवाली होती है और (सशिरेण पृष्ठेन सदुःखा स्यात्) जिसमें नसें चमकती हों ऐसी पीठसे दुःख सहित होती है और (रोमभृता पृष्ठेन विधवा स्यात्) रोमोंवाली पीठसे विधवा होती है ॥ १२८ ॥

अथ कृकाटिकालक्षणम् ।

ऋज्वी कृकाटिका स्यात्समांसपीना समुन्नता यस्याः॥
दीर्घायुर्विधवात्वं लभते सा सौख्यसौभाग्यम्॥१२९॥

अन्वयार्थौः–(यस्याः कृकाटिका ऋज्वी स्यात् सा दीर्घायुर्लभते) जिस स्त्रीका गलेका गट्टा अर्थात् गलेकी घेंटी सूधी होय सो स्त्री बड़ी आयु पावै और (समांसपीना कृकाटिका विधवात्वं लभते) जिसकी मांससे भरी मोटी गलेकी घेंटी होय सो विधवापनको पावै और (यस्याः कृकाटिका समुन्नता स्यात् सा स्त्री सौख्यसौभाग्यं लभते) जिस स्त्रीकी गलेकी घेंटी उँचाई लिये होय सो स्त्री सुख सौभाग्यको पाती है ॥ १२९ ॥

बहुपिशिता निःपिशिता शिराचिता रोमशा विशाला च
कुटिला विकटा कुरुते दौर्भाग्यंप्रायशःसुदृशाम्॥१३०॥

अन्वयः–(सुदृशां बहु पिशिता निःपिशिता शिराचिता रोमशा कुटिला विकटा कृकाटिका स्यात् सा प्रायशः दौर्भाग्यं कुरुते) अस्यार्थः–स्त्रियोंकी बहुत मांसवाली वा विनामांसकी नसें चमकती हों रोमवाली बड़ो लंबी बुरी भयंकर जो गलेकी घेंटी होय सो बहुधा अभाग्यको करती है ॥ १३० ॥

मांसोपचितःकंठो वृत्तश्चतुरंगुलःशुभो विशदः ॥
उच्चाविलासं कथयति वदनांभोजस्य वनितानाम्॥१३१

अन्वयार्थौः–(वनितानां कंठः मांसोपचितः वृत्तः चतुरंगुलः विशदः शुभः) स्त्रियोंका कंठ मांसका भरा गोल चार अंगुलका उज्ज्वल शुभ है और (वनितानां वदनाम्भोजस्य कंठः स उच्चाविलासं कथयति) स्त्रियोंके मुखकमलका कंठ है सो बड़े आनंद भोगको कहता है ॥ १३१ ॥

यस्याःसुसंहिता स्फुटरेखात्रितयांकिता भवेद्ग्रीवा ॥
सालंकारं कनकं मुक्तारत्नान्यंगनादधते ॥१३२॥

अन्वयः–(यस्याः ग्रीवा सुसंहिता स्फुटरेखा त्रितयांकिता भवेत्सा अंगना कनकालंकारमुक्तारत्नानि आदधते) अस्यार्थः–जिस स्त्रीकी नाड अच्छी बनी हुई प्रकट तीन रेखा अंकित चिह्नोंसे होय सो स्त्री सुवर्णका गहना मोती और रत्नोंको पहरतीहै॥१३२॥

व्यक्तास्थिर्निर्मांसा चिपिटा स्फुटा कुरूपसंस्थाना ॥
सोपदिशति ग्रीवा योषाणां दुःखदौर्भाग्यम् ॥१३३॥

अन्वयः–(योषाणां ग्रीवा व्यक्तास्थिः निर्मांसा चिपिटा स्फुटा कुरूपसंस्थाना स्यात् सा ग्रीवा दुःखदौर्भाग्यं उपदिशति) अस्यार्थः–स्त्रियोंकी नाड प्रकट हाडोंकी विनामांसकी चपटी फटी खरदरी बुरे स्वरूपकी होय सो नाड दुःख और अभाग्यका उपदेश करती है ॥ १३३ ॥

ग्रीवा स्थूला विधवां चक्रावर्तास्त्रियं वंध्याम् ॥
सशिरा ह्रस्वा निःस्वां कुरुते दीर्घा पुनः कुटिलाम्१३४

अन्वयार्थौः–(स्थूला ग्रीवा स्त्रियं विधवां कुरुते) मोटी नारी स्त्री

को विधवा करती है और (चक्रावर्ता ग्रीवा स्त्रियं वंध्यां कुरुते) चक्र-चिह्नवाली नाड स्त्रीको बाँझ करती है और (ह्रस्वा सशिरा ग्रीवा स्त्रियं निःस्वां कुरुते) छोटी और नसोंवाली नाड स्त्रीको दरिद्रिनी करती है और (दीर्घा ग्रीवा स्त्रियं कुटिलां कुरुते) बड़ी और लंबी नाड स्त्रीको खोटी करती है ॥ १३४ ॥

इति ग्रीवाष्टमदर्शीसंपूर्णा ।

अथ चिबुकम् ।

द्व्यंगुलमानं चिबुकं वृत्तं पीनं सुकोमलं शस्तम् ॥
स्थूलं द्विधा विभक्तं रोमशमत्यायतं शुभं न स्यात् १३५

अन्वयार्थौः—(द्व्यंगुलमानं वृत्तं पीनं सुकोमलं चिबुकं शस्तं) दो अंगुल प्रमाण गोल मांसल मुलायम ऐसी ठोड़ी अच्छीहै और (स्थूलं द्विधा विभक्तं रोमशं अत्यायतं चिबुकं न शुभं स्यात्)मोटी दुहरीसी रोमवाली बहुत लंबी ठोड़ी अच्छी नहीं होती है ॥१३५॥

अथ हनुकथनम् ।

निर्लोम शुभं सुघनं हनुयुगलं चिबुकपार्श्वसंलग्नम् ॥
अतिवक्रकृशं स्थूलं पुनरशुभं रोमशं दृश्यम् ॥१३६॥

अन्वयार्थौः—(निर्लोमसुघनं चिबुकं पार्श्वसंलग्नं हनुयुगलं शुभम्) विनारोमोंके अच्छे कड़े ठोड़ीके पास ही लगेहुए ऐसे दोनों हनु शुभ हैं और (पुनः अतिवक्रकृशं स्थूलं रोमशं दृश्यं अशुभं भवति) फिर बहुत टेढे सूखेसे मोटे रोमवाले दीखें तौ अशुभ होते हैं ॥१३६॥

अथ कपोललक्षणम् ।

शस्ते कपोलफलके पीने वृत्ते समुन्नते विमले ॥
शालिन इव त्रिस्रोतसः कुसुमायुधयादसां स्त्रीणाम् १३७

अन्वयार्थौः—(पीने वृत्ते समुन्नते विमले स्त्रीणां कपोलफलके शस्ते) मांससे भरे गोल बराबर ऊंचे उजले स्त्रियोंके कपोलफलक अच्छे होते हैं (के इव) क्याहैं मानों (कुसुमायुधः यादसां तिस्रोतसः पुलिने इव) कामदेव जलजीवोंके गंगाके पुलिन अर्थात् रेतके गुदगुदे टीले हैं ॥ १३७ ॥

यस्याः कपोलयुगलं विच्छायं रोमसंयुतं परुषम् ॥
रूक्षं स्वभावनिम्नमसितं सा दुःखिनी च स्यात्॥१३८॥

अन्वयः—(यस्याः कपोलयुगलं विच्छायं रोमसंयुतं परुषं रूक्षं स्वभावनिम्नम् असितं स्यात् सा च स्त्री दुःखिनी भवेत्) अस्यार्थः—जिस स्त्रीके दोनों कपोल विना रंग रोमयुक्त टेढे रूखे स्वभावकरिके नीचे काले होंय तौ सो स्त्री दुखिया होती है॥ १३८ ॥

अथ वदनम् ।

वर्तुलममलं स्निग्धं सुपूर्णशीतांशुमंडलविडंबि ॥
सौम्यं समं समांसं सुपरिमलं प्रशस्यते वदनम् ॥१३९

अन्वयः—(वर्तुलं अमलं स्निग्धं सुपूर्णशीतांशुमंडलविडंबि सौम्यं समं समांसं सुपरिमलं वदनं प्रशस्यते) अस्यार्थः—गोल निर्मल सचिक्कण पूरे चंद्रमाके बिम्बकी तुल्य सुंदर बराबर मांससे भरा सुगंधित जो ऐसा मुख होय तो प्रशंसाके योग्यहै १३९

जनकवदनानुरूपं यस्या मुखपंकजं सदाह्लादि ॥
सा कल्याणी प्रायेणेति समुद्रः पुरा वदति ॥१४०॥

अन्वयार्थौः—(यस्याः मुखपंकजं जनकवदनानुरूपं सदाह्लादि) जिस स्त्रीका मुखकमल पिताके मुखके तुल्य होय तौ सदा प्रसन्न करने वाला है (प्रायेण सा कल्याणी भवति इति समुद्रः पुरा वदति)

बहुधा सो स्त्री कल्याणके करनेवाली होतीहै समुद्रने यह बात पहलेसे कहीहै ॥ १४० ॥

तुरगोष्ट्रखरबिडालव्याघ्रच्छागाननाकारम् ॥
पृथुलं निम्नं स्फुटितं दुर्गन्धं शस्यते न मुखम् ॥१४१॥

अन्वयः-(तुरगोष्ट्रखरबिडालव्याघ्रछागाननाकारं पृथुलं निम्नं स्फुटितं दुर्गन्धं मुखं न शस्यते)-अस्यार्थः- घोडा ऊंट गधा बिलाव सिंह बकरी इनके तुल्य होय और चौडा नीचा फटासा दुर्गंधवाला ऐसा मुख निन्दित है अच्छा नहींहै ॥ १४१ ॥

अथौष्ठबिम्बम् ।

रेखाखंडितमध्यो मसृणः परिपक्वबिम्बफलतुल्यः ॥
अधरोष्ठःस्निग्धोसौ मनोहरोहरिणशावदृशाम् ॥१४२॥

अन्वयः-(रेखाखंडितमध्यः मसृणः परिपक्वबिम्बफलतुल्यः स्निग्धः हरिणशावदृशां अधरोष्ठः मनोहरः भवति) अस्यार्थः- रेखा करिके खंडितहै बीच जिसका चिकना कंदूरीके फलके तुल्य पकाहुवा अच्छे चिकने हिरणके बच्चोंकेसे हैं नेत्र जिनकेऐसी मृगांगनाओं के होठ मनके हरनेवाले होतेहैं अर्थात् अच्छे हैं॥१४२॥

शस्तः सुधानिधानं सततमधरोष्ठपल्लवो व्यक्तः ॥
हृदयोत्थसदनुरागच्छटाभिरिव रंजितःस्त्रीणाम् १४३

अन्वयः-(सुधानिधानं व्यक्तः हृदयोत्थसदनुरागच्छटाभिः रंजित इव स्त्रीणां अधरोष्ठपल्लवः सततं शस्तः) अस्यार्थः-अमृतका स्थान प्रकट हृदयसे जो उठाहै अच्छा अनुराग जिसकी कांतिसे रँगाहुवा ऐसा स्त्रियोंका होठ नवीन पत्तेके तुल्य निरंतर अच्छा होताहै ॥ १४३ ॥

विषमो लघुः प्रलम्बःप्रस्फुटितः खंडितः कृशो रूक्षः ॥
दन्तच्छदोऽङ्गनानां दत्ते दौर्भाग्यदुःखत्वे ॥ १४४ ॥

अन्वयः-(विषमः अलघुः प्रलम्बः प्रस्फुटितः खंडितः कृशः रूक्षः अंगनानांदन्तच्छदः दुःखदौर्भाग्यं दत्ते) अस्यार्थः-ऊंचा नीचा बडा लंबा फटा टूटा हुट कटा सूखा पतला रूखा स्त्रियोंका ऐसा होठ होय तौ दुःख और अभाग्यको देताहै ॥ १४४ ॥

श्यामेन भर्तृहीना स्थूलेन कलिप्रिया भवति नारी ॥
अधरोष्ठेन प्रायो दौर्गत्ययुता विवर्णेन ॥ १४५ ॥

अन्वयार्थौः-(श्यामेन अधरोष्ठेन नारी भर्तृहीना भवति) काले होठोंसे स्त्री पतिहीन होतीहै और (स्थूलेन अधरोष्ठेन नारी कलिप्रिया भवति) मोटे होटों करिके स्त्री कलह करनेवाली होती है और (विवर्णेन अधरोष्ठेन प्रायः दौर्गत्ययुता भवति) बुरे रंगके होठोंसे बहुधा दरिद्रिनी होती है ॥ १४५ ॥

सुदृशामिहोत्तरोष्ठः पर्यायनतः सकोमलो मसृणः ॥
स्निग्धो रोमविरहितः किंचिन्मध्योन्नतः शस्तः ॥ १४६ ॥

अन्वयः-(इह सुदृशां उत्तरोष्ठः पर्यायनतः सकोमलः मसृणः स्निग्धः रोमविरहितः किंचित् मध्योन्नतः शस्तः) अस्यार्थः-इस लोकमें स्त्रियों के ऊपरका होठ क्रम करिके मुलायम झुका हुवा चिकना विना रोमके कुछ बीचमें उँचाई लिये होय तौ अच्छाहै १४६

भवति पृथुरुत्तरोष्ठः समुन्नतो लोमशो लघुर्यस्याः ॥
स्थूलः सा रमणी स्याद्विधवा कलहप्रिया प्रायः १४७

अन्वयः-(यस्याः उत्तरोष्ठः पृथुः समुन्नतः लोमशः लघुः स्थूलः भवति सा रमणी प्रायः विधवा वा कलहः प्रिया स्यात्) अस्यार्थः-

जिस स्त्रीका ऊपरका होठ चौडा मोटा ऊंचा रोमवाला मूंछेंसीछोटा मोटा होय सो स्त्री बहुधा विधवा वा कलहकरनेवाली होतीहै॥ १४७॥

अथ दशनलक्षणम्।

स्निग्धैः समैः शिखरिभिः समुन्नतैर्विशदकुंदसमशुभ्रैः
दशनैर्घनैस्तरुण्यः सौभाग्यैश्वर्यभोगिन्यः ॥ १४८ ॥

अन्वयः--(स्निग्धैःसमैः शिखरिभिः समुन्नतैः विशदकुंदसमशुभ्रैः घनैः दशनैः तरुण्यः सौभाग्यैश्वर्यभोगिन्यो भवन्ति) अस्यार्थ चिकने चमकने बराबर नोंके निकली हों ऊंचे हो और उजले कुंदके फूलके तुल्य सफेत एकसे एक भिडे होय तौ ऐसे दाँतो से स्त्रियाँ सौभाग्य वा ऐश्वर्यकी भोगनेवाली होती हैं ॥ १४८ ॥

शुचिरुचयो द्वात्रिंशद्दशना गोक्षीरसन्निभाःसर्वे ॥
अधउपरिसमा यस्याःसा क्षितिपतिवल्लभा बाला १४९

अन्वयः-(यस्याः सर्वे दशनाः शुचिरुचयः गोक्षीरसन्निभाः अधउपरिसमाः द्वात्रिंशत् भवंति सा बाला क्षितिपतिवल्लभा भवति) अस्याथः-जिस स्त्रीके सब दाँत उजले रुचिकारी गौके दूधके तुल्य नीचे ऊपर बराबर बत्तीस होय सो स्त्री पृथ्वीपति नाम राजाकी प्यारी होती है ॥ १४९ ॥

अतिह्रस्वदीर्घसूक्ष्माः स्थूला द्विपंक्तयो दशनाः ॥
विषमाःशुक्त्याकाराःश्यामास्तन्वन्ति दौर्गत्यम् १५०

अन्वयः-(अतिह्रस्वदीर्घसूक्ष्माः स्थूलाः द्विपंक्तयः विषमाः शुक्त्याकाराः श्यामा ईदृशाः दशनाःदौर्गत्यं तन्वंति) अस्यार्थः- बहुत छोटे लम्बे पतले मोटे दुहेरी पंक्तिके ऊंचे नीचे सीपीके आकार काले होय तो ऐसे दाँतोंसे स्त्री दरिद्रिनी वा दुखिया होती है॥१५०॥

नियत रदैरधस्तादधिकैर्निजमातृभक्षणा रमणी ॥
अधउपरि पुनर्विरलैः कुटिला विकटैश्च पतिरहिता १५१

अन्वयार्थौः—(अधस्तात् रदैः अधिकैः नियतं रमणी निजमातृभक्षणी भवति) नीचेके दाँत बहुत होनेसे निश्चय स्त्री अपनी माताके मारनेवाली होती है और (पुनः अधउपरि विरलैः रदैः कुटिला भवति) जो नीचे ऊपर जुदे जुदे दाँत होंय तो खोटी होती है और (वा विकटैः रदैः पतिरहिता भवति) जो भयंकर दाँत होंय तौ विना पतिकी अर्थात् विधवा होती है ॥ १५१ ॥

सितपीटिकास्थिरदा सक्लेशा दंतुरा पुनः कुटिला ॥
चलितरदा पतिरहिता निरपत्या घनमतिर्युवतिः १५२

अन्वयार्थौः—(सितपीटिकास्थिरदा नारी सक्लेशाभवति) सफेद मसूडे नीचेका हाडके दाँतसे स्त्री क्लेशसहित रहती है और (पुनः दंतुरा नारी कुलटा भवति) फिर खूब बड़े दाँतवाली स्त्री खोटी होती है और (चलितरदा नारी पतिरहिता वा निरपत्या घनमतिर्युवतिः भवति)चलायमान हैं दाँत जिसके ऐसी विना एक पति और पुत्रके कठोर बुद्धिवाली स्त्री होती है ॥ १५२ ॥

अथ जिह्वालक्षणम् ।

जिह्वा स्निग्धा मृद्वी शोणा मसृणा तनुर्भवति यस्याः ॥
मिष्टान्नभोजना स्यात्सौभाग्ययुता सा सदा रमणी१५३

अन्वयार्थौः—(यस्याः जिह्वा स्निग्धा मृद्वी शोणा मसृणा तनुर्भवति) जिस स्त्रीकी जीभ अच्छी मुलायम लाल चिकनी पतली होय (सा रमणी सौभाग्ययुता सदा मिष्टान्नभोजना स्यात्) सो स्त्री सौभाग्य युक्त और सदा मीठे भोजनके पानेवाली होती है॥१५३॥

स्यादंते संकीर्णा कुशस्येवाग्रविस्तीर्णा वा ॥
श्वेतापि न प्रशस्ता कृष्णा प्रायेण रमणीनाम् ॥ १५४ ॥

अन्वयः-(जिह्वा अंते कुशस्येव संकीर्णा वा अग्रविस्तीर्णा, श्वेता कृष्णा जिह्वा प्रायेण रमणीनां अपि न प्रशस्ता) अस्यार्थः-- जीभ अंतमें सकडी और डाभकी भाँति आगेको चौडी सफेद और काली जीभ बहुधा स्त्रियोंकी अच्छी नहीं है ॥ १५४ ॥

खरया तोये मरणं प्राप्नोति विवाहमेति पाटलया ॥
वर्णच्छेदं कलहं श्यामलया जिह्वया युवती ॥ १५५ ॥

अन्वयार्थौः--(युवती खरया जिह्वया तोये मरणं प्राप्नोति) स्त्री खरदरी जीभकरिके पानीमें डूबके मरै और (पाटलया जिह्वया विवाहं एति) कुछ श्वेत कुछ लाल जीभ करिके विवाहको पातीहै और(श्यामलया जिह्वया वर्णच्छेदं तथा कलहं प्राप्नोति) काली जीभकरिके अपनी जातिसे दूसरी जाति होय और कलहको पाती है ॥

दारिद्र्यं मांसलया विशालया रसनया पुनः शोकः ॥
अतिलम्बयापि सततमभक्षभक्षणरतिः स्त्रीणाम् १५६॥

अन्वयार्थौः-(मांसलया रसनया दारिद्र्यं पुनः विशालया रसनया शोकं प्राप्नोति) मोटी जीभसे दरिद्रताको पावै और फिर बडी लंबी जीभसे शोचको पातीहै और (अतिलंबया आपि सततं स्त्रीणां अभक्षभक्षणरतिर्भवति) बहुतलंबी जीभसे निरंतर स्त्रियोंकी जो खाने योग्य वस्तु नहीं उसे खानेमें चाहना अर्थात् प्रीति होती है १५६॥

अथ तालुलक्षणम् ।

स्निग्धं कोकनदच्छवि प्रशस्यते तालु कोमलं विमलम्
श्यामं पीनं च पुनः सुदृशां दुःखावहं बहुशः ॥ १५७ ॥

अन्वयार्थौः–(सुदृशां स्निग्धं कोकनदच्छवि कोमलं विमलं तालु प्रशस्यते) स्त्रियोंका सुंदर चिकना लाल कमलकीसी कांति वाला मुलायम उज्ज्वल तालु प्रशंसाके योग्य अर्थात् अच्छा है और (पुनः श्यामं पीनं तालु बहुशः दुःखावहं) फिर वही काला मोटा तालु होय तौ बहुत दुःखके करनेवाला है ॥ १५७ ॥

तालुनि सिते दरिद्रा पतिहीना दुःखिता भवति कृष्णे ॥
प्रव्रज्या संयुक्ता रूक्षे समले पुनर्नारी ॥ १५८ ॥

अन्वयार्थौः–(तालुनि सिते सति नारी दरिद्रा) सफेद तालु होनेसे स्त्री दरिद्रिनी और (तालुनि कृष्णे सति प्रव्रज्यासंयुक्ता) काले तालुहोनेसे वैरागिनि और (पुनः रूक्षे समले नारी पतिहीना दुःखिता भवति) फिर रूखा मैला तालुसे स्त्री पतिरहित होकर दुःखी होती है ॥ १५८ ॥

अथ घंटीलक्षणम् ।

कंदस्थूला वृत्ता क्रमशस्तीक्ष्णलोहिता शुभा घंटी ॥
स्थूला सूक्ष्मा लम्बा कृष्णा श्वेता शुभा नैव ॥ १५९ ॥

अन्वयार्थौः–(कंदस्थूला वृत्ता क्रमशः तीक्ष्णलोहिता घंटीशुभा) जमीकंदकी भाँति मोटी गोल क्रमसे पैनी लाल रंगकी घेंटी शुभहै और (स्थूला सूक्ष्मा लम्बा कृष्णा श्वेता घंटी नैव शुभा) मोटी पतली लंबी काली सफेद घेंटी शुभ नहीं है ॥ १५९ ॥

अथ हास्यलक्षणम् ।

ईषद्विकासितगंडं हसितमलक्ष्यद्विजं कलं शस्तम् ॥
प्रान्ते मुहुः सकंपं संमीलितलोचनं निंद्यम् ॥ १६० ॥

अन्वयार्थौः–(ईषद्विकासितगंडं अलक्ष्यद्विजं कलं हसितं शस्तं) थोडे खुले हैं गंडस्थल जिस्में नहीं दीख पडें दाँत जिस्में ऐसा सु-

दर हँसना अच्छाहै और (प्रान्ते मुहुः सकंपं संमीलितलोचनं हसितं निंद्यं भवति) अंतमें वारंवार हाथ पाँव कँपें हिलें जिसमें और मुदगयेहैं नेत्र जिसमें ऐसा हँसना निन्दित अर्थात् बुरा होताहै १६०

अथ नासालक्षणम्।

निःस्वां द्विधाग्रभागा कर्मकरीं नासा स्त्रियं लघ्वी॥
भर्तृविहीनां चिपिटा दीर्घा बहुकोपनां कुरुते॥१६१॥

अन्वयार्थौः-(द्विधाग्रभागा नासा स्त्रियं निःस्वां) दोसी दीखें हैं नोंक आगेके भागमें जिसकी ऐसी नाक स्त्रीको दरिद्रिनी करै और (लघ्वी नासा स्त्रियं कर्मकरीं) छोटी और लंबी नाक स्त्रीको टीहलनी करै और (चिपिटा दीर्घा नासा स्त्रियं भर्तृविहीनां तथा बहुकोपनां कुरुते) चपटी लंबी नाक स्त्रीको पतिरहित और बहुत क्रोधको करै है॥ १६१॥

अथ क्षुतलक्षणम्।

दीर्घं दीर्घायुक्तं क्षुतं कृतपिंडितं ह्लादि॥
अनुनादयुतं शस्तं ततोन्यथा भवति विपरीतम् १६२॥

अन्वयार्थौः-(दीर्घं क्षुतं दीर्घायुक्तं कृतपिंडितं ह्लादि) बडी छींक भारी बडी न छोटी गोलाकार हुई ऐसी आनंदकारी है और (अनुनादयुतं क्षुतं शस्तं) शब्द सहित अथवा पिछला शब्दयुक्त छींक अच्छीहै और (ततः अन्यथा विपरीतं भवति) इनसे और लक्षणकी छींक बुरी होती है॥ १६२॥

अथाक्षियुगलक्षणम्।

गोक्षीरचारुलसिते रक्तांते कृष्णतारके तीक्ष्णे॥
प्रच्छन्नं कथयितुमिव कर्णविलग्ने शुभे नयने॥१६३॥

अन्वयः-(गोक्षीरचारुलसिते रक्तान्ते कृष्णतारके तीक्ष्णे शुभे

नयने प्रच्छन्नं कथयितुं इव कर्णविलग्ने भवतः) अस्यार्थः-गौके दूध-के समान श्वेत रंग शोभायमान लाल हैं अंत जिनके काले तारे जिन-में ऐसे शुभनेत्र गुप्त कहनेको यह कानके पास आयके लगेहैं १६३॥

नीलोत्पलदलतुल्यैर्विमलैः सूक्ष्मपक्ष्मभिः स्निग्धैः ॥
नमनैरिहार्ककमलैर्भवंति सौभाग्यभोगिन्यः ॥१६४॥

अन्वयः-(नीलोत्पलदलतुल्यैः विमलैः सूक्ष्मपक्ष्मभिः स्निग्धैः अर्ककमलैः इव नयनैः नार्यः सौभाग्यभोगिन्यो भवंति) अस्यार्थः-नील कमलकी पखूरीके तुल्य निर्मल पतलीहैं वाह्नि जिनकी अच्छे चिकने जैसे सूर्यसे कमल खिलेहुए ऐसे नेत्रों करिके स्त्री सौभाग्यके भोग करनेवाली होतीहै ॥ १६४ ॥

मृगनेत्रा शशनेत्रा वराहनेत्रा मयूरनेत्रा च ॥
पृथुनेत्राम्बुजनेत्रा निर्मलनेत्रा शुभा नारी ॥१६५॥

अन्वयः-(मृगनेत्रा शशनेत्रा वराहनेत्रा मयूरनेत्रा पृथुनेत्रा अम्बुज नेत्रा निर्मलनेत्रा नारी शुभा भवति)अस्यार्थः-हरिणकेसे नेत्रवाली-खरगोशकेसे नेत्रवाली- सूकरकेसे नेत्रवाली- मोरकेसे नेत्रवाली-बडे लम्बे चौडे नेत्रवाली- कमलकेसे नेत्रवाली- उजले नेत्रवाली-ऐसे नेत्रोंवाली स्त्री अच्छी होतीहै ॥ १६५ ॥

उद्भ्रान्तचित्ता केकरविषमाक्षी निन्दिताक्षी भवेद्युवतिः
मेषाक्षी बिडालाक्षी वृत्ताक्षीसमुन्नताक्षी न दीर्घायुः १६६

अन्वयार्थौः--(केकरविषमाक्षी निन्दिताक्षी उद्भ्रान्तचित्ता युव-तिर्भवति)काणी ऊंची नीची नेत्रवाली--उड़ेसे चित्तवाली स्त्री होती है और (मेषाक्षी बिडालाक्षी वृत्ताक्षी समुन्नताक्षी नारी दीर्घा-युः न)मेंढेकीसी नेत्रवाली बिलावकीसी नेत्रवाली गोल नेत्रवाली ऊंचे नीचे नेत्रवाली स्त्री बड़ी आयुवाली नहीं होती है ॥ १६६ ॥

यस्याः पिङ्गलनेत्रद्वितयं सा सुरतसुखकौशलं लभते ॥
दुःशीलत्वेन समं वैधव्यं वा ध्रुवं रमणी ॥ १६७ ॥

अन्वयार्थौः–(यस्याः पिंगलनेत्रद्वितयं भवति सा रमणी सुरतसुखकौशलं लभते) जिस स्त्रीके पीले रंगकेसे दोनों नेत्र होंय सो स्त्री भोगके सुखको पाती है अथवा (दुःशीलत्वेन समं ध्रुवं वैधव्यं लभते) वह खोटे स्वभावके साथ निश्चय करिके विधवापनको पाती है ॥ १६७ ॥

गोपिङ्गलनेत्रयुता पितरं श्वशुरंच मातुलं च पुत्रम् ॥
भ्रातरमप्यधिगच्छति कामग्रथिला च मोहपरा १६८

अन्वयः–(यः गोपिङ्गलनेत्रयुता भवति सा नारी कामग्रथिला च पुनः मोहपरा सति वै पितरं श्वशुरं मातुलं पुत्रं भ्रातरम् अपि अधिगच्छति) अस्यार्थः–जो गौकेसे रंग बराबर पीले नेत्रवाली होय सो स्त्री कामकी अधिकताके कारण और मोहके मदमें तत्पर होनेसे निश्चय पिता श्वशुर मामा और पुत्र भाईसे अधिक कामकी चाहना करतीहै अर्थात् इनसे भोग चाहती है ॥ १६८ ॥

कोकनदच्छदरक्तच्छायं नयनद्वयं भवति यस्याः ॥
सा परपुरुषाकांक्षिणी रमणी च नित्यं स्यात् ॥१६९॥

अन्वयः–(यस्याः कोकनदच्छदरक्तच्छायं नयनद्वयं स्यात् सा रमणी परपुरुषाकांक्षिणी नित्यं भवति) अस्यार्थः–जिस स्त्रीके लाल कमलकी पँखडीके रंगके तुल्य दोनों नेत्र होंय उस स्त्रीको दूसरे पुरुषकी चाहना नित्य होती है ॥ १६९ ॥

सजलनयना न शस्ता स्फारितनयना विहीनतरा ॥
नरनयना कोटरनयना चंचलनयना गभीरनयनापि ॥

अन्वयार्थौः–(सजलनयना नारी न शस्ता) जलसे भरे नेत्र-

वाली स्त्री अच्छी नहीं और (स्फारितनयना नारी विहीनतरा) फटेसे नेत्रवाली स्त्री बहुत खोटी होती है और (नरनयना कीटरनयना गंभीरनयना चंचलनयना अपि नारी अशुभा भवति) मनुष्यकेसे नेत्रवाली चलायमान नेत्रवाली ढिढाले नेत्रवाली गहरे गढेसे नेत्रवाली स्त्री अशुभ होती है ॥ १७० ॥

या सव्यकाणचक्षुः सा परपुरुषाभिचारिणी रमणी ॥
अपसव्यकाणचक्षुःसा जन्मन्येव निरपत्या ॥१७१॥

अन्वयार्थौः--(या नारी सव्यकाणचक्षुः स्यात् सा रमणी परपुरुषाभिचारिणी भवति) जो स्त्री बाई आँखसे काणी होय सो स्त्री दूसरे पुरुषके भोगनेकी चाहसे व्यभिचारणी होती है और (या नारी अपसव्यकाणचक्षुर्भवति सा रमणी जन्मन्येव निरपत्या स्यात्) जो स्त्री दाहिनी आँखसे काणी होय सो स्त्री जन्मसे विना संतानके होती है अर्थात् बाँझ होतीहै ॥ १७१ ॥

अथ पक्ष्मलक्षणम् ।

सुदृढैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मैः स्यात्पक्ष्मभिर्घनैः सुभगा ॥ सूक्ष्मैर्विरलैः कपिलैः स्थूलैर्निंद्या ध्रुवमजाभैः ॥ १७२ ॥

अन्वयार्थौः--(सुदृढैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मैःपक्ष्मभिः नारी सुभगा स्यात्) कड़ी चिकनी काली पतली बहुत पासलगीहुई वाफनियोंसे स्त्री अच्छी सुंदर सौभाग्यवती होती है और (सूक्ष्मैः विरलैः कपिलैः स्थूलैः अजाभैः ध्रुवं पक्ष्मभिः नारी निंद्या स्यात्) पतली जुदी जुदी पीली मोटी बकरीकीसी कांतिवाली निश्चय ऐसी वाफनियोंसे स्त्री निन्द्य अयोग्य अर्थात् अशुभ होतीहै ॥ १७२ ॥

रोदनमनिमेषलक्षणमासामपि पुरुषवत्परिज्ञेयम् ॥
ग्रंथप्रपंचभयतः पुनरिह दिङ्मात्रमपि नोक्तम् १७३

अन्वयार्थौः–(रोदनं अनिमेषलक्षणं आसां अपि पुरुषवत् परिज्ञेयं) रोना और पलकोंके न लगनेके लक्षण पुरुषकी भांति इनके भी जानने चाहिये और (पुनः इह ग्रंथप्रपंचभयतः दिङ्मात्रं अपि न उक्तं) फिर यहां ग्रंथके बढनेके भयसे दिशा मात्रकेभी लक्षण नहीं कहे ॥ १७३ ॥

अथ भ्रूलक्षणम् ।

शस्ता वृत्ता तन्वी भ्रूयुगली कज्जलच्छाया ॥
नयनांभोरुहवलयितरूपा नालं समाश्रयति ॥१७४॥

अन्वयार्थौ–(वृत्ता तन्वी कज्जलच्छाया भ्रूयुगली शस्ता) गोलरूप काली कांतिकी दोनों भौंहें ऐसी अच्छी हैं और (नयनांभोरुहवलयितरूपा भ्रूयुगली अलं न समाश्रयति) नेत्रोंके कमलोंको घेरनेवाली दोनों भौंहे अच्छी नहीं होती हैं ॥ १७४ ॥

लघुमृदुरोममयी भ्रूरधिज्यधनुरिव शुभा सुदृशाम् ॥
कीर्णा पिंगलवृत्ता पृथुला खररोमशा न शुभा॥१७५॥

अन्वयार्थौः–(सुदृशां लघुमृदुरोममयी अधिज्यधनुरिव भ्रूः शुभा स्यात्) स्त्रियोंकी छोटी नरम रोमवाली और चढी हुई कमानके रूप भौंहें शुभ हैं और (कीर्णा पिंगलवृत्ता पृथुला खररोमशा भ्रू न शुभा भवति) जुदे जुदे बिखरेसे बालवाली पीले रंग गोल चौड़ी खरदरे रोमवाली भौंहें नहीं शुभ हैं ॥ १७५ ॥

वित्तविहीनां ह्रस्वा मिलिता स्थूला सदैव दुःशीलाम् ॥
वंध्यां सुदीर्घरोमा रमणीं भ्रूवल्लरी कुरुते ॥१७६॥

अन्वयार्थौः–(ह्रस्वा भ्रूवल्लरी रमणीं वित्तविहीनां) छोटे भौंह

रूपवेलीकी स्त्रीको धनराहित करै और (मिलिता स्थूला भ्रूवल्लरी रमणीं सदैव दुःशीलां) मिली हुई मोटी भौंहरूपवेलि स्त्रीको सदा खोटे चलनवाली करै और (सुदीर्घ रोमा भ्रूवल्लरी रमणीं वंध्यां-कुरुते) बड़े लंबे रोमवाली भौंह रूप वेलि स्त्रीको बांझ करै है॥१७६॥

अथ कर्णलक्षणम्।

लम्बा विपुला कर्णद्वयी मिलिता शुभावर्त्तसंयुक्ता॥
दोला युगलावरतिप्रीतिं दंपतिकृते युगपत्॥१७७॥

अन्वयार्थौः-(कर्णद्वयी लम्बा विपुला मिलिता आवर्तसंयुक्ता शुभा) दोनों कान लंबे बड़े मिले हुए चक्र युक्त होंय तौ शुभ हैं और (दोलायुगलावरतिदंपतिकृते युगपत् प्रीतिं कुरुते) दोझूलोंके चक्ररूपसे स्त्री पुरुषके लिये आपसमें प्रीति करैं हैं॥१७७॥

रोमोपगता यस्याः शष्कुलिरहिता च नो शस्ता॥
कुटिला कृशा शिराला नारी सा जायते निंद्या॥१७८॥

अन्वयार्थौः-(यस्याः कर्णद्वयी रोमोपगता शष्कुलिरहिता नो शस्ता) जिस स्त्रीके दोनों कानमें रोम युक्त विना प्यालीके होंय तौ अच्छे नहीं और (कुटिला कृशा शिराला कर्णद्वयी नारी सा निंद्या जायते) टेढे पतले नसौंवाले दोनों कानोंसे स्त्री बुराईके योग्य होती है॥१७८॥

इति आचिबुकर्णमंतःसंपूर्णा मंददशी।

अथ ललाटलक्षणम्।

निर्लोमशिराविरहितमर्द्धेन्दुसमं ललाटतलम्॥
त्र्यंगुलमानमनिम्नं स्त्रीणां सौभाग्यमावहति॥१७९॥

अन्वयः-(निर्लोमशिराविरहितं अर्द्धेन्दुसमं त्र्यंगुलमानं अनिम्नं ललाटतलं स्त्रीणां सौभाग्यं आवहति) अस्यार्थः-रोमरहित-

नसौं विना--आधे चंद्रमाके समान तीन अंगुल प्रणाम ऊंचा ऐसा ललाट स्त्रियोंका सौभाग्यको करता है ॥ १७९ ॥

रेखारहितं व्यक्तं स्वस्तिकसमलंकृतं शुभं भालम् ॥
प्रगुणं पटमिव स्मरनृपस्य राज्याभिषेकाय ॥ १८० ॥

अन्वयार्थौ--(व्यक्तं रेखारहितं स्वस्तिकसमलंकृतं भालं शुभम्) प्रकट रेखा करिके रहित स्वस्तिकसाथिया करिकै भूषितभी है तौभी ऐसा ललाट शुभ है और (स्मरनृपस्य राज्याभिषेकाय प्रगुणं पटमिव) कामदेव राजाके राज्याभिषेकके अर्थ मानों यह दृढ़ वस्त्र है ॥ १८० ॥

यस्याः प्रलम्बमलिकं सा तु नारी देवरं निजं हंति ॥
तदपि शिरारोमयुतं सा भवेत् पांसुला बाला ॥ १८१ ॥

अन्वयार्थौ--(यस्याः अलिकं प्रलम्बं सा नारी निजं देवरं हंति) जिस स्त्रीका ललाट लम्बा होय सो स्त्री अपने देवरको मारती है और (तदपि भालं शिरारोमयुतं भवेत् सा बाला पांसुला भवति) जो वोही लम्बा ललाट नसैं और रोमयुक्त होय सो स्त्री व्यभिचारिणी होती है ॥ १८१ ॥

अथ सीमंतलक्षणम् ।

सीमन्तो ललनानां ललाटपट्टाश्रितः शुभः सरलः ॥
प्रगुणित इवार्द्धचंद्राकृतिः कृतः पुष्पचापेन ॥ १८२ ॥

अन्वयार्थौः--(ललनानां ललाटपट्टाश्रितः सरलः सीमन्तः शुभः) स्त्रियोंके ललाट पट्टके आश्रित सीधी सीमंत अर्थात् माँग शुभ है और (पुष्पचापेन अर्द्धचंद्राकृतिः प्रगुणितः कृतःइव) कामदेवने आधे चंद्रमाके आकार मानों यह दृढ किया है ॥ १८२ ॥

अथ शीर्षलक्षणम् ।

कुंजरकुम्भनिभं स्याद्वृत्तं शीर्षं समुन्नतं यस्याः ॥
सा भवति भूपपत्नी सौभाग्यैश्वर्यसुखसहिता १८३॥

अन्वयः--(यस्याः शीर्षं समुन्नतं वृत्तं कुंजरकुंभनिभं स्यात् सा भूपपत्नी सौभाग्यैश्वर्यसुखसहिता भवति) अस्यार्थः--जिस स्त्री-का मस्तक ऊँचाई लिये गोल हाथीके सिरकी तुल्य होय सो राजा की स्त्री सुखसौभाग्य सब सुहागवती होती है ॥ १८३ ॥

स्थूलेन भवति शिरसा विधवा दीर्घेण बंधकी युवतिः ॥
विषमेण विषमदुःखा दौर्भाग्यवती विशालेन ॥१८४॥

अन्वयार्थौ:--(स्थूलेन शिरसा विधवा स्यात्)बड़े मोटे मस्तक वाली विधवा होय और (दीर्घेण शिरसा युवतिः बंधकी भवति) लम्बे चौड़े मस्तकसे स्त्री व्याभिचारिणी अर्थात् खोटी होती है और (विषमेण शिरसा विषमदुःखा भवति) ऊंचे नीचे मस्तक करिके अत्यंत दुःखी होतीहै और (विशालेन शिरसा दौर्भाग्यवती भवति) बहुत बड़े मस्तकवाली स्त्री अभागिनी होती है ॥ १८४ ॥

अथ केशलक्षणम् ।

रोलम्बसमच्छायाः सूक्ष्माः समुन्नताः स्निग्धाः ॥
केशा एकैकभवाः जायन्ते भूपपत्नीनाम् ॥१८५॥

अन्वयः--(रोलम्बसमच्छायाः सूक्ष्माः समुन्नताः स्निग्धाः एकैक-भवाः भूपपत्नीनां ईदृशाः केशाः जायन्ते) अस्यार्थः--भौंरेकी समान काले पतले और ऊंचे चमकदार चिकने सुंदर इकहैरे होय-तो राजाकी स्त्रियोंके ऐसे बाल होते हैं ॥ १८५ ॥

आकुंचिताग्रभागाःस्निग्धांबुजकालकान्तयः सुभगाः॥
चिकुरा हरंति यमुनातरंगभंगीं वरस्त्रीणाम् ॥ १८६ ॥

अन्वयः (आकुंचिताग्रभागाः स्निग्धाम्बुजकालकान्तयः सुभगाः वरस्त्रीणां चिकुराः यमुनातरंगभंगीं हरांति) अस्यार्थः—सुकुड़ रहेहैं आगेके भाग जिनके अर्थात् घुँघरारे ऐसे सचिक्कन काले कमलके रंग चमकदार सुंदर अच्छी स्त्रियोंके ऐसे बाल मानों यमुनाकी तरंगकी रचनाको हरते हैं ॥ १८६ ॥

यस्याः प्रस्फुटिताग्राः सूक्ष्माः परुषाः शिरोरुहा लघवः
ऊर्द्ध्वा विरला जटिला विषमा सा दुःखिनी युवतिः१८७

अन्वयः—(यस्याः शिरोरुहाःप्रस्फुटिताग्राःसूक्ष्माः परुषाःलघवः ऊर्द्ध्वा विरला जटिला विषमा भवंति सा युवतिः दुःखिनी स्यात्) अस्यार्थः—जिस स्त्रीके बाल फटे हुए हैं आगेके भाग जिसके और पतले रूखे खरदरे छोटे ऊंचे बिखरे हुए लिपटे ऊंचे नीचे होंय सो स्त्री दुखिया होती है ॥ १८७ ॥

अतिशयदीर्घस्थूलैर्भर्तृघ्नीकामिनी भवति ॥
केशैःकपिलैरमनस्कारस्कंधप्रभवैःपुनर्निंद्या॥१८८॥

अन्वयार्थौः—(अतिशयदीर्घस्थूलैः केशैः कामिनी भर्तृघ्नी भवति) बहुत बड़े लम्बे मोटे बालोंसे स्त्री पतिके मारनेवाली होती है और (पुनः कपिलैः अमनस्कारस्कंधप्रभवैः केशैः नारी निंद्या भवति) फिर भूरे बुरे कंधोंतक छिटके हुए बालोंसे स्त्री बुराइके योग्य अर्थात् बुरी होती है ॥ १८८ ॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रिकतिलकेपरनाम्नि-
नरस्त्रीलक्षणशास्त्रे संस्थानाधिकारश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अथ व्यंजनलक्षणम् ।

व्यंजनमथ प्रकृतयो मिश्रकमेतदपि भवति संख्यानम्
संक्षेपाल्लक्षणमथ ह्यनुक्रमेणैव वक्ष्यामि ॥ १ ॥

अन्वयः–(अथ व्यंजनं प्रकृतयः मिश्रकं एतत् अपि संक्षेपाल्लक्षणं अनुक्रमेण एव संख्यानं वक्ष्यामि) अस्यार्थः–आगे व्यंजन और प्रकृति और मिश्रक इनके संक्षेप लक्षण क्रमकरिके इसी संख्यासे मैं कहूंगा ॥ १ ॥

जन्मान्तरं व्यंजनमिह शुभाशुभं व्यज्यते ध्रुवं येन ।
तनुमयमहत्वगादि व्यंजनमाख्यायते सद्भिः ॥ २ ॥

अन्वयार्थौः–(इह येन जन्मान्तरं शुभाशुभं ध्रुवं व्यथ्यते तत् व्यंजनं) इस ग्रंथमें जिसकरके पहले जन्मका शुभ अशुभ लक्षण निश्चय करके प्रकट किया होय तिसका नाम व्यंजन है और (तनुमयमहत्त्वागादि सद्भिः व्यंजनं आख्यायते) शरीर संबंधी बड़ा चम आदिकको पंडित व्यंजन कहतेहैं ॥ २ ॥

रक्तः कृष्णो धूम्रो बिन्दुसमो मशक एव विज्ञेयः ॥
तिलकं तिलकाकारं ततोन्यदपि लांछनं स्त्रीणाम् ॥३॥

अन्वयार्थौः–(रक्तः कृष्णः धूम्रः बिन्दुसमः मशक एव विज्ञेयः लालकालाधूएँकासा बूँद समान होय उसीका नाम यह मश जानिये और (तिलकं तिलकाकारं ततः स्त्रीणां अन्यदपि लांछ भवति) तिलके आकार तिल तिसके पीछे कोई और चिह्न स्त्रियो होय उसका नाम लांछन होता है ॥ ३ ॥

अन्तर्भ्रूयुग्मे वा ललाटमध्ये विलोक्यते यस्याः ।
सुस्निग्धाभो मशकः सा भवति महीपतेः पत्नी ॥ ४ ॥

अन्वयः–(यस्याः अंतर्भ्रूयुग्मे वा ललाटमध्ये सुस्निग्धाभः म

कः विलोक्यते सा स्त्री महीपतेः पत्नी भवति) अस्यार्थः—जिस स्त्रीकी दोनों भौंके नीचे वा ललाटके बीचमें सुंदर मशकके आकार तिलके देख पडें सो स्त्री राजाकी रानी होती है ॥ ४ ॥

अन्तर्वामकपोले स्फुटतामशकेन लोहिता भवति ॥
मिष्टान्नभोजनमत्तिप्रायेण सा नितम्बिनी लोके ॥ ५ ॥

अन्वयार्थौ:–(यस्याः अन्तर्वामकपोले मशके स्फुटता लोहिता नभवति) जिसस्त्रीके बायेंकपोलमें मस्सा या तिल प्रकट लाल न होय काला होय (सा नितंबिनी लोके प्रायेण मिष्टान्नभोजनं अत्ति) सो स्त्री लोकमें बहुधा मीठे भोजनको पाती है ॥ ५ ॥

तिलकं लांछनमथवा हृदि रक्ताभं विलोक्यते यस्याः ॥
सा धनधान्योपेता पतिप्रिया जायते पत्नी ॥ ६ ॥

अन्वयः–(यस्याः हृदि रक्ताभं तिलकं अथवा लांछनं विलोक्यते सा पत्नी धनधान्योपेता पतिप्रिया जायते) अस्यार्थः–जिस स्त्रीके हृदयमें लाल तिल वा और कोई चिह्न दीखै सो स्त्री धन धान्य युक्त और पतिकी प्यारी होती है ॥ ६ ॥

रक्तं तिलकं लांछनमपसव्यपयोधरे भवति यस्याः ॥
पुत्रीचतुष्टयं स्यात् सुतत्रयं चांगना सूते ॥ ७ ॥

अन्वयः–(यस्याः अपसव्यपयोधरे रक्तं तिलकं लांछनं भवति सा अंगना पुत्रीचतुष्टयं चपुनः सुतत्रयं सूते) अस्यार्थः–जिस स्त्रीके दाहिने कुचमें लाल तिल अथवा कोई और चिह्न होय सो स्त्री चार पुत्री और तीन पुत्रको उत्पन्न करै है ॥ ७ ॥

तिलके शुभवामकुचे विलासवती तदा स्वनालेन ॥
स्फुटमेकपुत्रजननी सा विधवा दुःखिनी भवति ॥८॥

अन्वयः-(शुभवामकुचे तिलके सति विलासवती स्वनालेन स्फुटं एकपुत्रजननी पश्चात् विधवा तथा दुःखिती भवति)अस्यार्थः- जो सुंदर बायें कुचमें तिल होय तौ अपने नाल करिके प्रकट एक पुत्रकी जननेवाली होके पीछे विधवा और दुखिया होती है ॥ ८ ॥

गुह्यस्तु कुंकुमाभस्तिलकः प्रान्तेथ दक्षिणे भागे ॥
सा भवति भूपपत्नी नृपजननी जायते वापि ॥ ९ ॥

अन्वयः-(गुह्यः कुंकुमाभः प्रान्ते अथ दक्षिणे भागे तिलको भवति सा भूपपत्नी वा नृपजननी अपि भवति) अस्यार्थः-योनीतो लाल रंग होय और प्रांतमें अथवा दाहिने भागमें तिल होय सो राजाकी रानी अथवा राजाकी माता होती है ॥ ९ ॥

मशको लोहितवर्णो नासाग्रे दृश्यते स्फुटो यस्याः ।
सा भूपपट्टराज्ञी राजानं सूयते सूनुम् ॥ १० ॥

अन्वयः-(यस्याः नासाग्रे लोहितवर्णः मशकः स्फुटः दृश्यते सा भूपपट्टराज्ञी वा राजानं सूनुं सूयते) अस्यार्थः-जिस स्त्रीके नाकके आगेके भागमें लाल रंगका तिल वा मस्सा प्रकट दीख पडे सो राजाकी पटरानी वा राजा पुत्रको उत्पन्न करे ॥ १० ॥

विस्फुरति नासिकाग्रे यस्यास्तिलकः सकज्जलच्छायः ।
भर्तृघ्नी सा नारी विशेषतः पांसुला भवति ॥ ११ ॥

अन्वयः-(यस्याः) नासिकाग्रे सकज्जलच्छायः तिलकः विस्फुरति सा नारी भर्तृघ्नी वा विशेषतः पांसुला भवति) अस्यार्थः-जिस स्त्रीकी नाकके आगेके भागमें काला तिल प्रकट होय सो स्त्री पतिको मारे ओर विशेष करिके वह व्यभिचारिणी होती है और खो होती है ॥ ११ ॥

नाभेरधोविभागे मशको वा तिलकलांछने स्याताम्॥
यस्या भवतःस्निग्धौ सा रमणी वहति कल्याणम्॥१२॥

अन्वयः–(यस्याः नाभेरधोविभागे मशकः वा तिलकलांछने स्निग्धौ भवतः सा रमणी कल्याणं वहति) अस्यार्थः–जिस स्त्रीकी टूंडीके नीचेके भागमें मस्सा अथवा तिल वा और कोई चिह्न चमकता होय तौ सो स्त्री कल्याणके करनेवाली होती है॥ १२॥

स्यातां गुल्फौ यस्याःस्फुटलांछनमशकतिलकसंयुक्तौ
सा धनधान्यविहीना दुःखवती जीवति प्रायः॥ १३॥

अन्वयः–(यस्याः गुल्फौ स्फुटलांछनमशकतिलकसंयुक्तौ स्यातां सा धनधान्यविहिना प्रायः दुःखवती जीवति) अस्यार्थः–जिस स्त्रीके टकनेमें प्रकट चिह्न मस्सा वा तिल युक्त होय सो धनधान्य रहित बहुधा दुखिया होकर जीवती है॥ १३॥

वामे हस्ते कंठे वा काये जायते ध्रुवं यस्याः॥
मशको यदि वा तिलकः प्राग्गर्भे सा सुतं सूते॥ १४॥

अन्वयः–(यस्याः काये वामे हस्ते वा कंठे मशकः यदि वा तिलकः ध्रुवं जायते सा प्राक् गर्भे सुतं सूते) अस्यार्थः–जिस स्त्रीके शरीरमें बायें हाथमें वा कंठमें मस्सा वा तिलक निश्चय होय सो स्त्री पहलेही गर्भमें पुत्रको उत्पन्न करती है॥ १४॥

मशकं तिलकं लांछनमुक्तस्थाने कृताशुभं यासाम्॥
अंगे पुनरपसव्ये सुदृशां क्लेशावहं बहुशः॥ १५॥

अन्वयार्थौः–(यासां सुदृशां उक्तस्थाने मशकं तिलकं लांछनं अशुभं कृतम्)जिन स्त्रियोंके कहे हुए स्थानमें मस्सा तिल और कोई चिह्न होय तौ अशुभ है और (पुनः अपसव्ये अंगे बहुशः क्लेशा-

वहं भवति) फिर जो दाहिने अंगमें चिह्न न होय तो अति दुःखके करनेवाले होते हैं ॥ १६ ॥

अथ प्रकृतिलक्षणम्।

प्रकृतिर्द्विविधा गदितास्त्रीणां श्लेष्मादिकास्वभावाख्या
प्रथमा सापि त्रेधा द्वाशशधा भवति पुनरन्या ॥ १६॥

अन्वयः–(स्त्रीणां प्रकृतिर्द्विविधा गदिता श्लेष्मादिका च पुनः स्वभावाख्या सापि प्रथमा त्रेधा पुनः अन्या द्वादशधा भवति) अस्यार्थः–स्त्रियोंकी प्रकृति दो प्रकारकी कही है श्लेष्मादिक और स्वभाव सो पहली तीन प्रकारकीहै फिर कोई १२ प्रकारकी भी होतीहै॥१६॥

नारी मतेऽस्ति प्रकृतिः सत्याप्रियभाषिणी स्थिरस्नेहा ॥
बहुप्रसूतिं लभते नीलोत्पलदूर्वांकुरश्यामा ॥ १७ ॥

अन्वयार्थौः–(नारी मते प्रकृतिः अस्ति सा नारी स्थिरस्नेहा भवति) स्त्रीके मतमें स्वभावहै सो स्त्री स्थिर स्नेह अर्थात् स्थिर प्रीति वाली होतीहै और (सत्याप्रियभाषिणी भवति) सच्ची और मीठे बोलनेवाली होतीहै और तथा(नीलोत्पलदूर्वांकुरश्यामा बहुप्रसूतिं लभते) नील कमल और दूबके अंकुरके समान श्याम रंग बहुत जननेवाली होती है ॥ १७ ॥

स्निग्धनखरोमत्वक् नारी सुविलोचनाक्षमा युक्ता ॥
सुविभक्तसमावयवा बहुसत्यापत्यवीर्ययुता ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौः–(स्निग्धनखरोमत्वक् सुविलोचना नारी क्षमायुक्ता भवति) चिकने हैं नख रोम और त्वचा जिसके और सुंदर नेत्रोंकरके युक्त ऐसी स्त्री क्षमावाली होती है और (सुविभक्त समावयवा बहुसत्यापत्यावीर्ययुता भवति) जुदे जुदे हैं बराबर

हाथ पाँव आदि अंग जिसके ऐसी स्त्री बहुत सत्य और संतान और पराक्रम युक्त होती है ॥ १८ ॥

अस्थूला सरसात्वक्प्रसूनतुल्यानुलेपना सुभगा ॥
धर्मार्थिनीकृतज्ञा दयान्विता कमलपदासुमुखी॥१९॥

अस्यार्थः-मोटी न होय पतली होय सूखी खरदरी न होय रसदार होय ऐसी त्वचा फूलकासा है अनुलेपन जिसमें और धर्मसेही है प्रयोजन जिसमें कहेको माननेवाली और दयावती कमलकेसे है पाँव जिसके और सुंदर है मुख जिसका ऐसी स्त्री अच्छी होती है ॥ १९ ॥

प्रच्छन्नं धृतवेषा क्षुत्तृष्णाक्षमात्रयोपेता ॥
मितवचनपानभोजन समयाक्ष्मातलेपृथुलनयना२०

अन्वयः-(क्ष्मातले पृथुलनयना नारी-प्रच्छन्नं धृतवेषा-क्षुत्तृष्णाक्षमात्रयोपेता-मितवचना पानभोजनसमया स्यात्) अस्यार्थः-पृथ्वीमें बड़े नेत्रवाली स्त्री-गुप्त धरे हैं अनेक वेष जिसने-भूख प्यास सहनशीलता इन तीनों करि युक्त-प्रमाणके वचन जिसके अन्न जल है समय पे जिसके ऐसी होती है ॥ २० ॥

साधारणसुरतेच्छा निद्रालुः शीतमांसलश्रोणिः ॥
जलदजलाशयजलजकृतवांछाया भवेत्स्वप्ने ॥ २१ ॥

अस्यार्थः (साधारण है सुरतकी इच्छा जिसकी निद्रावती अर्थात् जिसको निद्रा अधिक होय--ठंडी है मांससे भरी योनि जिसकी-और स्वप्नमें सोनेमें मेघ और पानीके स्थान और पदार्थ इनमें वांछा करनेवाली होती है ॥ २१ ॥

योषित्पित्तप्रकृतिः गौरी कृष्णाथवा हृष्टा ॥

आताम्रनयनकररुहरसनापाणितलतालुतला ॥२२॥

अन्वयार्थौः--(पित्तप्रकृतिः योषित् गौरी कृष्णा अथवा हृष्टा) पित्तके सुभाववाली स्त्री गोरेरंग वा काली प्रसन्न रहती है और (नयनकररुहरसना पाणितलतालुतला आताम्रा भवंति) नेत्र नख जीभ हाथकी हथेली तालु पाँवका तलुवा ये जिसके लाल होतेहैं ॥ २२ ॥

क्षणक्षणद्विष्टेष्टाभीष्टशीतमधुरसा पुनर्मृद्वी ॥
विरलकपिलमूर्द्धजरोमा मेधावती प्रायः ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौः--(क्षणक्षणद्विट्द्वेष्टा) छिनाछिनमें शत्रुहैं जिसके और (अभीष्टशीतमधुरसा) प्याराहै शीत और मीठा रस जिसको (पुनर्मृद्वी) फिर मुलायमहै शरीर जिसका (प्रायः विरलकपिलमूर्द्धजरोमा मेधावती भवति) बहुधा जुदे जुदे भूरे रंगके बाल और रोम जिसके सो बुद्धिमान् होती है ॥ २३ ॥

प्रियशुचिवसना माल्या उपनाड्युष्णशिथिलमृदुगुह्या
अभिमानिनी शुचिरता विषदस्मितवल्लभा शूरा॥२४॥

अस्यार्थः--प्यारे हैं पवित्र कपड़े और माला जिसको फिर कैसी है वह उपनाडी छोटीनसे युक्त और गरम है गुदगुदी ढीली नरम-योनि जिसकी गर्भवती और पवित्र बातोंकी चाहनेवाली निर्मल है हँसना प्यारा सहस युक्त जिसको ॥ २४ ॥

धृतवलिपलितक्षुत्तृट् तनुवीर्या मृदुलमोहनक्रीडा ॥
किं शुकदिग्दाहतडिद्दहनादीन्पश्यति स्वप्ने ॥ २५ ॥

अस्यार्थः-- धारण करी हैं सलवट और छींक प्यास थोड़ा है साहस मुलायम भोग जिसका केसूके फूल और दिशाओंका जलना और बिजली आग आदिको दिखाइदें स्वप्नमें जिसको ॥ २५ ॥

वानता वातप्रकृतिः स्फुटितकचा भग्नपादतला॥
रूक्षा वै नखदशना चलवृत्ता चंचलप्रकृतिः ॥ २६ ॥

अन्वयार्थौः--(स्फुटितकचा भग्नपादतला) फटेटूटे हैं बाल और पाँवके तलुवे जिसके और (वै इति निश्चयेन नखदशना रूक्षा) रूखे हैं नख और दाँत जिसके और (चलवृत्ता चंचलप्रकृतिः) चलायमान है आचरण और चंचल स्वभाव जिसका (वातप्रकृतिः वनिता ईदृशी भवति) वातप्रकृतिवाली स्त्री ऐसी होती है ॥ ६० ॥

अजितेन्द्रिया खरांगी गंधर्वविलासहासकलहरतिः ॥
बहुभोजनाल्पनिद्रा बहुलालापभ्रमणशीला ॥ २७ ॥

अस्यार्थः--(नहीं वशमें हैं इंद्री जिसके और खरदराहै अंग जिसका गाने और भोग हाँसी कलह करनेमें है प्रीति जिसकी और बहुत भोजन और थोड़ी सोवनेवाली--बहुत बोलने और फिरनेका है सुभाव जिसका ॥ २७ ॥

धूसरशरीरवर्णाच्छायाविद्वेषमधुरसा शिशिरा ॥
किंचिद्विवृत्ताक्षमुखी शेते विलपति निशित्रसति॥२८॥

अस्यार्थः--धूलकेसे रंगका शरीरका रंग जिसका और छायासे वैर और मीठे रस ठंडके चाहनेवाली और थोडी खुली हुई आँख और मुख जिसका सोवनेमें रोती डरतीहुई रातमें विलासी होतीहै॥

बह्वम्ललवणतिक्तस्निग्धकषायप्रिया सुरतिकठिना ॥
गोजिह्वा कर्कशतनुरोमा सुश्रोणिबिम्बयुता ॥ २९ ॥

अस्यार्थः--(बहुत खट्टा नमकका चरपरा चिकना कसैला ऐसे हैं स्वाद प्यारे जिसको रतिमें कडी और गायकी जीभकासा खरदरा और कडा शरीर जिसका और बाल और कमरके बिम्बयुक्त होती है ॥ २९ ॥

उद्यानवनक्रीडारतिरत्युष्णप्रिया स्थिरक्रोधा ॥
तरुपर्वताधिरोहं स्वप्ने कुरुते नभोगमना ॥ ३० ॥

अस्यार्थः-बाग बगीचे और बनमें खेलने वा जानेकी है प्रीति जिसकी और बहुत है गरम जिन्स प्यारे और स्थिरक्रोध जिसको वृक्ष और पर्वतोंपर चढनेका स्वप्न देखनेवाली और भोगमें मन नहीं करै जिसका ॥ ३० ॥

प्रायेणैषा प्रकृतिः शुद्धैव विलोक्यते स्फुटं क्वापि ॥
भेदाः पुनरेतासां बहवोपि भवंति मनुजानाम् ॥ ३१ ॥

अन्वयार्थौः-(प्रायेण एषा प्रकृतिः शुद्धैव स्फुटं क्वापि विलोक्यते) बहुधा करके शुद्ध प्रकृति ये प्रकट कहीं देखी जाती हैं और (पुनः मनुजानां एतासां भेदाः अपि बहवः भवन्ति) फिर मनुष्यों की इनही प्रकृतियोंके भेद बहुतसे होते हैं ॥ ३१ ॥

सुरविद्याधरगंधर्व यक्षराक्षस पिशाचवानरकपिभिः ॥
अहिखरबिडालसिंहैस्तुल्यान्या प्रकृतिरत्रैषा ॥ ३२ ॥

अस्यार्थः-सुरविद्याधरगंधर्वयक्षराक्षसपिशाचवानरकपि अहि खरबिडालसिंह आदि ये सब देवताओंके भेद हैं ऐसी इनकी समान औरभी प्रकृति हैं ॥ ३२ ॥

अल्पाशिनी सुगंधा समुज्ज्वला चारुमानसाशुद्धिः ॥
प्रियवसना तनुनिद्रा निर्दिष्टा सा सुरप्रकृतिः ॥ ३३ ॥

अन्वयार्थौः-(अल्पाशिनी सुगंधा) थोडे भोजन करनेवाली और अच्छी है गंध जिसमें और (समुज्ज्वला चारुमानसाशुद्धिः) निर्मल आचारमें है मन पवित्र जिसका और (प्रियवसना तनु-निद्रा) प्यारे हैं वस्त्र और थोडी है नींद जिसको और (सा नारी सुरप्रकृतिः निर्दिष्टा) सो स्त्री देवताकी प्रकृतिवाली कही है ॥ ३३ ॥

विद्याधरस्वभावा भवति कलागुणविचक्षणा शांता ॥
चन्द्राननना सुभोगा मनोहरस्थानबद्धरतिः ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थौः–(कलागुणविचक्षणा शांता) कला और गुण इनमें चतुर शांत है चित्त जिसका और (चन्द्राननना सुभोगा) चंद्रमाकासा है मुख जिसका सुंदर भोगवाली (मनोहरस्थानबद्धरतिः) सुंदर स्थानमें बांधी है प्रीति जिसने (ईदृशी नारी विद्याधरस्वभावा भवति) ऐसी स्त्री विद्याधरस्वभाववाली होती है ॥ ३४ ॥

उद्यानवनासक्ता कलस्वरा गीतनृत्यरक्तमनाः ॥
परिचितसुगंधमाल्या गंधर्वप्रकृतिरबला सा ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौः–(उद्यानवनासक्ता) बाग बगीचे और वनमें है चित्त जिसका और (कलस्वरा गीतनृत्यरक्तमनाः) सुंदर है शब्द और गीत और नृत्यमें है मन जिसका (परिचितसुगंधमाल्या) सुगंध और मालासे पहिचान करनेवाली (सा अवला गंधर्वप्रकृतिः ज्ञेया) सो स्त्री गंधर्वस्वभाववाली जानिये ॥ ३५ ॥

आरामजलक्रीडारता विभूषणपरायणा कान्ता ॥
प्रायो यक्षप्रकृतिर्धनरक्षणकांक्षिणी रमणी ॥ ३६ ॥

अन्वयार्थौः–(आरामजलक्रीडारता) बाग बगीचेकी सैरमें तत्पर) विभूषणपरायणा) भूषण पहरनेमें तत्पर रहै (धनरक्षणकांक्षिणी रमणी) धनकी रक्षा करने और चाहने और भोगकरनेवाली (सा कान्ता प्रायः यक्षप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री बहुधा यक्षस्वभाववाली होती है ॥ ३६ ॥

बह्वशना क्रुद्धमना हन्ति पतिं प्राणलग्नमप्युग्रा ॥
सा राक्षसस्वभावा कटुकालापा दुराचारा ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थौः–(बह्वशना) बहुत खानेवाली (क्रुद्धमना) लड़नेको

मन जिसका (प्राणलग्नं अपि पतिं हंति) प्राणसे लगाभी पति तिसे मारनेवाली (उग्रा कटुकालापा दुराचारा) भयंकर और कडुवा बोलने और बुरे आचरणवाली (सा नारी राक्षसस्वभावा भवति) सो स्त्री राक्षसी स्वभाववाली होती है ॥ ३७ ॥

शौचाचारभ्रष्टा रूपविहीना भयंकरी सततम् ॥
प्रस्वेदमलोपेता भवति पिशाचप्रकृतिरशुभा ॥ ३८ ॥

अन्वयार्थौः–(शौचाचारभ्रष्टा) पवित्र आचरणसे रहित (रूप विहीना) सूरतसे बुरी (सततं भयंकरी) निरंतर भय और डरकरने वाली (प्रस्वेदमलोपेता) पसीना और मलकरिके युक्त (सा- नारी अशुभा पिशाचप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री अशुभ पिशाचिनीस्व भावकी होतीहै ॥ ३८ ॥

दानदयानियमरतिः पतिव्रता देवगुरुकृताज्ञा च ॥
कार्याकार्यविविक्ता नरस्वभावा भवति नारी ॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौः– (दानदयानियमरतिः) दान दया और नियममें है प्रीति जिसकी (पतिव्रतादेवगुरुकृताज्ञा च) पतिके मानने और देव गुरुकी करीहै आज्ञा जिसने (कार्याकार्यविविक्ता) भले बुरे कामके विचार करनेवाली (सा नारी नरस्वभावा भवति) सो स्त्री मनुष्य स्वभावकी होती है ॥ ३९ ॥

स्थैर्यं क्वापि न कुरुते समस्तदिग्वीक्षणेक्षणासक्ता ॥
उत्फालगतिर्लुब्धा दुर्वेषा सा कपिप्रकृतिः ॥ ४० ॥

अन्वयार्थौः–(क्वापि स्थैर्यं न कुरुते कहीं ठहरना न करै (समस्तदिग्वीक्षणेक्षणसक्ता) सब दिशाओंके देखनेमें नेत्रोके फेरने वाली (उत्फालगतिः) उछलके चलनेवाली (लुब्धा) लोभवाली

(दुर्वेषा) बुरे भेषकी खोटे रूपवाली (सा नारी कपिप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री बंदरके स्वभाववाली होती है ॥ ४० ॥

अन्यच्छिद्रान्वेषणपरायणा कुटिलगामिनी रौद्रा ॥
धृतवैरा क्रोधरुचिरहिस्वभावा च वनिता स्यात्॥४१॥

अन्वयार्थौः-(अन्यच्छिद्रान्वेषणपरायणा) औरोंके दोष और घरढूँढनेमें तत्पर (कुटिलगामिनी रौद्रा) टेढो चाल और खोटे भयंकर स्वभाववाली (धृतवैरा) वैरके करनेवाली (क्रोधरुचिः) क्रोधमें है रुचि और चाह जिसकी (सा वनिता अहिस्वभावा स्यात्) सो स्त्री सांपके स्वभाववाली होती है ॥ ४१ ॥

सहते परां विभूतिं खरमैथुनसेविनी मुसलनादा ॥
अन्नेन येन केनचिदुपचितगात्रा खरप्रकृतिः ॥ ४२ ॥

अन्वयार्थौः-(परां विभूतिं सहते) दूसरेके ठाटके सहनेवाली (खरमैथुनसेविनी) बहुत जोरसे भोगके चाहनेवाली अर्थात् गधेकेसे (मुसलनादा) भयंकर बोलनेवाली (येन केनचित् अन्नेन उपचितगात्रा) किसी अन्नकरिके मोटा होगया है शरीर जिसका (सा नारी खरप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री गधेके स्वभाववाली होती है ॥ ४२ ॥

छन्नं कुरुते पापं परपीडान्यस्तमानसा सततम् ॥
स्त्री सापवादरक्षणपरा बिडालस्वभावा च ॥ ४३ ॥

अन्वयार्थौः-(या स्त्री छन्नं पापं कुरुते) जो स्त्री छिपके पाप करे (या स्त्री सततं परपीडामानसा) जो स्त्री निरंतर दूसरेके मनको दुःख देनेवाली (या स्त्री अपवादरक्षणपरा) जो स्त्री बुराईके साथ रक्षामें तत्पर (सा स्त्री बिडालस्वभावा भवति) सो स्त्री बिलावके स्वभाववाली होती है ॥ ४३ ॥

एकान्तस्थानरतिश्चिरेण मैथुननिषेवणस्था च ॥
निद्रालसा गतभया सिंहप्रकृतिर्भवति युवतिः ॥४४॥

अन्वयार्थौः–(या स्त्री एकान्तस्थानरतिः) जो स्त्री इकौसे स्थानमें रहनेकी है इच्छा जिसकी (या स्त्री चिरेण मैथुननिषेवणस्था) जो स्त्री बहुत भोग करनेवाली (निद्रालसा) नींद और आलसवाली (गतभया) निडरगया है भय जिसका (सा युवतिः सिंहप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री सिंहके स्वभाववाली होती है ॥ ४४ ॥

अथ मिश्रकलक्षणम् ।

या मंडूककुक्षिर्भवति न्यग्रोधमंडला युवतिः ॥
सा सूते सुतमेकं सोपि पुनश्चक्रवर्ती स्यात् ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थौः–(या युवतिः मंडूककुक्षिः तथा न्यग्रोधमंडला भवति) जो स्त्रीके मेंडककीसी कोख और नीचेसे हलकी ऊपरसे भारी बडकासा आकार होय (सा एकं सुतं सूते) सो एक पुत्रको उत्पन्न करती है (पुनः सोपि सुतः चक्रवर्ती स्यात्) फिर वोही पुत्र चक्रवर्ती राजा होता है ॥ ४५ ॥

भालस्थले त्रिशूलं विलोक्यते दैवनिर्मितं यस्याः ॥
तस्याः स्वामित्वं स्याद्भुवने वनितासहस्राणाम् ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौः–(यस्याः भालस्थले दैवनिर्मितं त्रिशूलं विलोक्यते) जिस स्त्रीके ललाटमें दैवका बना हुवा त्रिशूल दीखे तो (तस्याः भुवने सहस्राणां वनितानां स्वामित्वं स्यात्) तिस स्त्रीको लोकमें हजार स्त्रियोंका मालिकपना होता है ॥ ४६ ॥

सा हरिणाक्षी हरिणग्रीवा हरिणोदरी हरिणजंघा ॥
जातापि दासवंशे सा युवतिर्भवति नृपपत्नी ॥ ४७ ॥

अन्वयार्थौ

सुंदर है कमर

चपला) सदा

ऊरू और नां

प्रीति जिसकी

(पीनोन्नतवि

कलश जाके

जिसकी (म

सो हस्तिनी ह

विषमकुचा

तनुकेशी ख

अन्वयः--(

तनुकेशी खरचि

ऊंचे नीचे हैं कुच

[illegible] हैं हाथके पं

पतले हैं बाल जि

ऐसी स्त्री शंखिनी

तुङ्गपयोधरभ

सुक्षारगन्धनि

अस्यार्थः--(उ

जो वस्त्र वहहैं प्रिय

[illegible]ध करिके व्याप्त

[illegible]त्रणी कही है ॥ ६६

कपिलविलो